राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्,म.प्र. भोपाल

डी.एल.एड.(द्विवर्षीय पाठ्यक्रम)

प्रकाशन वर्ष –2014

राज्य शिक्षा केन्द्र,

पुस्तक भवन – **B** विंग,अरेरा हिल्स, भोपाल, मध्य प्रदेश

संरक्षक – श्रीमती रश्मि अरूण शर्मी
आयुक्त,
राज्य शिक्षा केन्द्र,भोपाल (म.प्र.)

परामर्श – श्रीमती सुनीता त्रिपाठी
अपर मिशन संचालक, (एस.सी.ई.आर.टी.)
राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल (म.प्र.)

मार्गदर्शक – डॉ.ओ.पी.शर्मा,
अपर संचालक, (एस.सी.ई.आर.टी.)
राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल (म.प्र.)

समन्वयक – श्रीमती रागिनी उपलपवार (एस.सी.ई.आर.टी.)
राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल (म.प्र.)

सहयोग – श्रीमती संध्या सिंह (एस.सी.ई.आर.टी.) भोपाल
श्रीमती अभिलाषा शर्मा (एस.सी.ई.आर.टी.) भोपाल

सलाहकारः–

1. डॉ. जे.एस. ग्रेवाल,
सेवा निवृत प्राध्यापक क्षे.शि.सं. भोपाल एवं सदस्य एन.सी.टी.ई. भोपाल
2. डॉ. अविनाश ग्रेवाल,
सेवा निवृत प्राध्यापक, क्षे.शि.सं. भोपाल
3. डॉ. गोविंद शर्मा, पूर्व अध्यक्ष
पाठ्यपुस्तक स्थाई समिति राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
4. डॉ. एन.सी. ओझा.
प्राध्यापक क्षे.शि.सं. भोपाल
5. श्री भागीरथ कुमरावत पूर्व सदस्य
पाठ्यपुस्तक स्थाई समिति, राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
6. डॉ. कुलश्रेष्ठ सेवानिवृत
प्राध्यापक क्षे.शि.सं. भोपाल

आमुख

शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का सशक्त माध्यम होने के साथ–साथ राष्ट्र और विश्व की आर्थिक विकास की धुरी भी है। बच्चें राष्ट्र के निर्माण के प्रमुख आधार तत्व है। उनको परिवार समाज व राष्ट्र का एक जिम्मेदार नागरिक बनाने वाला शिक्षक इसका महत्वपूर्ण माध्यम है। शिक्षक प्रशिक्षक, छात्राध्यापकों और स्कूलो के बीच संभवतः सबसे महत्वपूर्ण कड़ी है। शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता सामान्यतः अध्यापक शिक्षकों की गुणवत्ता और तैयारी पर निर्भर है शिक्षक की सक्रियता, प्रतिबद्धता व दक्षता शिक्षा की दशा और दिशा प्रभावित करती है।

म.प्र. में शिक्षा के क्षेत्र में क्रान्तिकारी बदलाव हुए है। इन सभी बदलावो का मुख्य लक्ष्य प्रदेश के बच्चे है। प्रदेश और राष्ट्र की समृद्ध विरासत को सहेजते हुए उच्च नैतिक मूल्यो के साथ वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए प्रदेश के बच्चों को तैयार किया जा सके। इसके लिए जरुरी ही नहीं बल्कि अति आवश्यक है कि,शिक्षको की वृहद तैयारी हो। शिक्षक प्रशिक्षणो को इसके अनुकूल बनाया जाए। शिक्षक और पाठ्यपुस्तक का मुख्य कार्य सीखने सिखाने में बच्चो की मदद कर उनके परिस्थितियों का निर्माण करना है। इस संदर्भ में शिक्षको की भूमिका और कार्यो में अंतर आया है। शिक्षको को सबसे पहले बच्चों को गहराई से समझने की जरुरत है कि,वे कैसे सीखते है? किन बातो को सीखने के लिए उत्सुक रहते है? आदि। इसके लिए उन्हें उपयुक्त वातावरण तैयार करना होगा। यह वातावरण मुख्य रुप से एक सकारात्मक मानसिकता व बच्चो के प्रति विश्वास से ही बन सकता है।

NCFTE 2009 के परिप्रेक्ष्य में प्रदेश में पूर्व से संचालित सेवा पूर्व शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम '' शिक्षा में पत्रोपाधि'' (D.Ed) को प्रांसगिक,उपयोगी, और परिणाम–मुखी बनाने के लिये पाठ्यक्रम की विश्लेषणात्मक समीक्षा की गई। प्रदेश के प्रगत शैक्षिक अध्ययन संस्थान, या शिक्षा महाविद्यालय एवं जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान तथा क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान के विशेषज्ञों की सहायता से पाठ्यक्रम की समीक्षा उपरान्त पाठ्यक्रम का पुनरीक्षण NCF 2005, NCFTE 2009, तथा RTE 2009 के मार्गदर्शी सिद्धन्तों के अनुरूप किया गया। पाठ्यक्रम में प्रदेश की आवश्यकता एवं समय की मांग को ध्यान में रखकर पाठ्यक्रम में परिमार्जन एवं परिवर्धन किया गया है।

पाठ्यक्रम के विकास में विशिष्ट संस्थानों के विशेषज्ञों, डाइट, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, विषय विशेषज्ञों, निजी डी.एड., बी.एड. महाविद्यालयो के प्रतिनिधियों द्वारा प्रदत्त सहयोग से पाठ्यक्रम के प्रति हम आभारी है। पाठ्यक्रम की समीक्षा करते हुये आवश्यक संशोधनो हेतु सुझाव– अज़ीम प्रेमजी फाऊन्डेशन तथा राधिका आंयगार, केलिफोर्निया यूर्नीवर्सिटी से हमें प्राप्त हुये। हम इनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते है। अंत में पाठ्यक्रम तैयार करने में प्रत्यक्ष– अप्रत्यक्ष रूप से सहयोगी बंधुओ का हम पुनः आभार व्यक्त करते है। पाठ्यक्रम तैयार करने से जुडे लेखन समूह, सदस्यों व लेखन समूह एस.सी. ई आर.टी का भी आभार व्यक्त करते है। जिनके अथक परिश्रम से पाठ्यक्रम को नया स्वरूप दिया जा सका है।

''धन्यवाद''

(रश्मि अरूण शमी)
आयुक्त
राज्य शिक्षा केन्द्र,
भोपाल

प्राक्कथन

एन.सी.एफ. 2005 और आर.टी.ई. 2009 दस्तावेज शिक्षकों में वांछित अपेक्षाओं का उल्लेख करता है। जिसमें शिक्षकों को विद्यार्थियों की सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक और आर्थिक परिस्थिति को समझना एवं विद्यार्थियों का ध्यान रखना आवश्यक है क्योंकि प्रत्येक विद्यार्थी दूसरे विद्यार्थी से भिन्न होता है। शिक्षकों से अपेक्षा है कि वे विद्यार्थियों को उत्साही तथा अधिगम के लिए तैयार करने के साथ समस्या –समाधान के लिये भी तैयार करें। शिक्षण का अर्थ पाठ्यक्रम को विद्यार्थियों में अंतरित करना ही नहीं है,और ना ही मूल्यांकन करना है, अपितु विद्यार्थियों को आत्मविश्वासी, स्पष्टवादी, स्वनिर्देशित तथा स्वविवेकी बनाना है। शिक्षक, समाज और विद्यार्थियों की शैक्षिक और व्यावहारिक आवश्यकताओं को पहचाने, स्वयं को सदैव एक अधिगम कर्त्ता के रूप में रख कर अधिगम में सहभागी की भूमिका निभाए ।

छात्राध्यापक विभिन्न अकादमिक एवं सामाजिक पृष्ठभूमियों से आते है जिन्हें NCFTE 2009 के संदर्भ में –समावेशी शिक्षा, शैक्षिक गुणवत्ता में समानता, समुदाय की भूमिका, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी तथा ई– लर्निंग, शोध एवं नवाचार आदि शिक्षा के नये आयामों से परिचित कराया जाना है।

नवीन डी.एल.एड. पाठ्यक्रम को तैयार करते समय ध्यान रखा गया है –

- सिद्धान्त से आशय केवल तथ्यों की पुनः प्रस्तुति नहीं है वरन इसे संवदेनशीलता के साथ समझने से है। इसके लिये पाठ्यक्रम में छात्राध्यापकों को स्वयं के अनुभव से अर्थबोध निकालने, संश्लेषण–विश्लेषण के आधार पर ज्ञान के सृजन के अवसर दिये गए है।
- प्रांरभिक कक्षाओं की गुणवत्ता बढ़ाने के दृष्टिकोण से संर्वागीण विकास, बालकेन्द्रित, रचनात्मकता, सुविधादाता, गतिविधि आधारित जैसे अनेक पारिभाषिक शब्द को समझने के अवसर पाठ्यक्रम में उपलब्ध है।
- छात्राध्यापकों को स्कूल के साथ गहन एवं आत्मिक संबंध बनाना चाहिए। स्कूल के नियमित शिक्षक प्रत्येक छात्राध्यापक के मार्गदर्शक अथवा परामर्शदाता के रूप में कार्य करें, इसके लिये पाठ्यक्रम में 40 दिवस का स्कूल इंटर्नशिप कार्यक्रम रखा गया है। जिसमें छात्राध्यापकों को छात्रों एवं शिक्षकों के साथ अधिक से अधिक अंर्तक्रिया करने के अवसर मिले, इसके लिए को–टीचिंग को शामिल किया गया है। स्कूल शिक्षक को छात्राध्यापकों की कार्यविधि की समीक्षा और मूल्यांकन के अवसर दिये गये है, जिससे छात्राध्यापकों की क्षमता विकसित की जा सकें।
- बच्चों को तथ्यों का ज्ञान देने के स्थान पर शिक्षक, बच्चों को अधिगम प्रक्रिया में संलग्न कर सके, इस हेतु छात्राध्यापकों की पृष्ठभूमि को समझना, छात्राध्यापक की क्षमता, मूल्यांकन प्रक्रिया आदि को कक्षा की वास्तविक परिस्थितियों से जोड़ने को पाठ्यक्रम में स्थान दिया गया है।
- इस पाठ्यक्रम में नवीन विषय के रूप में 'स्वयं की पहचान' को समावेशित किया गया है। इसमें शिक्षक अपनी क्षमताओं को पहचान कर अधिकतम उपयोग कैसे करे, तथा अपनी कमियों को पहचान कर कमी को दूर करने के लिये स्वतः प्रयास करे, अपनी गलतियाँ स्वीकारें, प्रेरक की तरह कैसे कार्य करें अर्थात एक आदर्श शिक्षक / प्रेरक शिक्षक / जिम्मेदार शिक्षक बनाने के पूर्ण प्रयास पर बल दिया गया है।
- पाठ्यक्रम में बचपन एवं बालविकास विषय में बचपन को समझाकर, बच्चों को प्यार देना, सम्मान देना, मूल्य स्थापित करना उनकी सामाजिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को समझने पर बल दिया गया है।
- छात्राध्यापको को आलोचनात्मक और विश्लेषणपरक बनाने के लिये पाठ्यपुस्तको का विश्लेषण प्रत्येक गतिविधि / क्रियाकलाप का विश्लेषण को शामिल किया गया है।
- समग्र मूल्यांकन के दृष्टिगत छात्राध्यापको का प्रेक्षण रिकार्ड,कार्यक्षेत्र के प्रत्येक कार्य का अभिलेखीकरण, साथियो के अध्यापन की समीक्षा, दैनदिनी एवं रिफ्लेक्टिव जर्नल तैयार करने को शामिल किया गया है।

हमें पूर्ण विश्वास है, यह पाठ्यक्रम प्रांरभिक शिक्षा के लिये शिक्षकों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने के लिए तैयार करने में उपयोगी सिद्ध होगा।

अनुक्रमणिका

भाग 'अ' –पाठ्यक्रम प्रबंधन एवं सामान्य निर्देश

क्रमांक	विषय	पृष्ठ संख्या
1	भूमिका	03
2	डी.एल.एड.पाठ्यक्रम के उद्देश्य	03
3	पाठ्यक्रम में बदलाव की आवश्यकता	04
4	पाठ्यक्रम का ढांचा	05
5	मूल्यांकन योजना	06
6	शाला इंटर्नशिप	14

भाग 'ब'– पाठ्यक्रम का विवरण

प्रथम वर्ष –सैद्धांतिक

प्रश्न पत्र 1	बचपन एवं बाल विकास	19
प्रश्न पत्र 2	समसामयिक भारतीय समाज में शिक्षा	23
प्रश्न पत्र 3	शिक्षा, समाज, पाठ्यचर्या और शिक्षार्थी	29
प्रश्न पत्र 4	स्वयं की पहचान	33
प्रश्न पत्र 5	भाषाई समझ, प्रारंभिक साक्षरता एवं हिन्दी शिक्षण	37
प्रश्न पत्र 6	गणित शिक्षण प्रारंभिक स्तर–1	42
प्रश्न पत्र 7	Proficiency पद English	46

प्रथम वर्ष – व्यावहारिक

अ	कम्प्यूटर शिक्षा भाग 1	50
ब	स्वास्थ्य,स्वच्छता भावनात्मक विकास एवं शारीरिक शिक्षा भाग–1	53
स	कला और शिक्षा भाग–1	57
द	कार्य और शिक्षा	61
इ	शाला इंटर्नशिप • हिन्दी भाषा • गणित	70

द्वितीय वर्ष –सैद्धांतिक

प्रश्न पत्र 8	सामाजिक, सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में संज्ञान एवं अधिगम	**75**
प्रश्न पत्र 9	शिक्षक और शालेय संस्कृति	**80**
प्रश्न पत्र 10	शालेय संस्कृति, नेतृत्व एवं परिवर्तन	**83**
प्रश्न पत्र 11	भाषा शिक्षण कोई –1 (अ) संस्कृत भाषा शिक्षण (ब) उर्दू भाषा शिक्षण (स) मराठी भाषा शिक्षण	**87** **90** **94**
प्रश्न पत्र 12	Pedagogy of English	**99**
प्रश्न पत्र 13	पर्यावरण अध्ययन शिक्षण	**101**
प्रश्न पत्र 14	सामाजिक विज्ञान शिक्षण	**107**
प्रश्न पत्र 15	विज्ञान शिक्षण	**111**
प्रश्न पत्र 16	गणित शिक्षण प्रांरभिक स्तर –2	**115**
प्रश्न पत्र 17	विविधता, समावेशित शिक्षा और जेण्डर	**119**

द्वितीय वर्ष –व्यावहारिक

अ	कम्प्यूटर शिक्षा भाग– 2	**123**
ब	स्वास्थ्य, स्वच्छता , भावनात्मक विकास एवं शारीरिक शिक्षा भाग–2	**126**
स	कला और शिक्षा भाग–2	**130**
द	शाला इंटर्नशिप	**133**

प्रारंभिक शिक्षा में पत्रोपाधि (D.El.Ed.) पाठ्यक्रम
प्रथम वर्ष

सैद्धांतिक पाठ्यक्रम

क्र.	पाठ्यक्रम शीर्षक	प्रस्तावित कुल कालखंड	बाह्य मूल्यांकन	आंतरिक मूल्यांकन	पूर्णांक
1	बचपन एवं बाल विकास	140	70	30	100
2	समसामयिक भारतीय समाज में शिक्षा	140	70	30	100
3	शिक्षा, समाज, पाठ्यचर्या और शिक्षार्थी	140	70	30	100
4	स्वयं की पहचान	70	35	15	50
5	भाषाई समझ,प्रारंभिक साक्षरता एवं हिंदी शिक्षण	140	70	30	100
6	गणित शिक्षण प्रारंभिक स्तर–1	140	70	30	100
7	Proficiency in English	70	35	15	50
	योग–1	840	420	180	600
	व्यावहारिक पाठ्यक्रम				
अ	कम्प्यूटर शिक्षा भाग– 1	40	25	25	50
ब	स्वास्थ्य,स्वच्छता, भावनात्मक विकास एवं शारीरिक शिक्षा भाग–1	40	15	15	30
स	कला और शिक्षा भाग–1	40	20	20	40
द	कार्य और शिक्षा भाग–1	30	15	15	30
इ	शाला इंटर्नशिप • हिन्दी भाषा • गणित	पूर्व तैयारी=30 दिवस इंटर्नशिप =40 दिवस	100 (50+50)	100 (20+20+60)	200
	योग–2	150	175	175	350
	महायोग (योग–1 +योग–2)	**990**	**595**	**355**	**950**

टीप :– पूर्व तैयारी=30 दिवस,इंटर्नशिप =40 दिवस 990 कालखंड+70 दिवस शेष दिवस परीक्षा एवं गतिविधियों हेतु होगें ।

प्रारंभिक शिक्षा में पत्रोपाधि (D.El.Ed.) पाठ्यक्रम

द्वितीय वर्ष

सैद्धांतिक पाठ्यक्रम

क्र.	पाठ्यक्रम शीर्षक	प्रस्तावित कुल कालखंड	बाह्य मूल्यांकन	आंतरिक मूल्यांकन	पूर्णांक
8	सामाजिक–सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में संज्ञान एवं अधिगम	120	70	30	100
9	शिक्षक और शालेय संस्कृति	70	35	15	50
10	शालेय संस्कृति, नेतृत्व एवं परिवर्तन	70	35	15	50
11	भाषा शिक्षण – कोई 1 (अ) संस्कृत भाषा शिक्षण (ब) उर्दू भाषा शिक्षण (स) मराठी भाषा शिक्षण	60	35	15	50
12	Pedagogy of English	110	50	25	75
13	पर्यावरण अध्ययन शिक्षण	120	70	30	100
14	सामाजिक विज्ञान शिक्षण	70	35	15	50
15	विज्ञान शिक्षण	110	35+25	15	75
16	गणित शिक्षण प्रारंभिक स्तर–2	70	35	15	50
17	विविधता,समावेशित शिक्षा और जेंडर	70	35	15	50
	योग–1	970	460	190	650
	व्यावहारिक पाठ्यक्रम				
अ	कम्प्यूटर शिक्षा भाग–2	40	25	25	50
ब	स्वास्थ्य, स्वच्छता भावनात्मक विकास एवं शारीरिक शिक्षा भाग–2	40	20	20	40
स	कला और शिक्षा भाग–2	40	30	30	60
द	शाला इंटर्नशिप (अंतिम पाठ योजना सहित) • अंग्रेजी भाषा का शिक्षण/ तृतीय भाषा • विज्ञान शिक्षण /सामाजिक विज्ञान शिक्षण/पर्यावरण अध्ययन	पूर्व तैयारी=30 दिवस इंटर्नशिप =40 दिवस	100 (50+50)	100 (20+20+60)	200
	योग–2	120	175	175	350
	महायोग (योग–1 +योग–2)	990कालखंड	635	365	1000

डी.एल.एड. पाठ्यचर्या

भूमिका :–

बदलते समय के साथ शिक्षक की भूमिका भी परिवर्तित होती जा रही हैं। वर्तमान में ज्ञान देना, तथ्यों से परिचय कराना ही शिक्षक का दायित्व नहीं है, अपितु ज्ञान प्रदान करने वाले अनेक विकल्प वर्तमान में बच्चों के सामने है। सूचना संप्रेषण तकनीक से ज्ञान का फैलाव द्रुतगति से चहुँ ओर होने लगा है। इन परिस्थितियों में बच्चों को कोरी स्लेट या गीली मिट्टी समझकर उन्हें आकार देने की बात नासमझी लगती है। वर्तमान में शिक्षक को सुविधादाता की तरह से आरोपित करने का प्रयास किया जा रहा है। बच्चों की दशा को जानते हुए सही दिशा के लिए मार्ग प्रशस्त करना ही शिक्षकों की महत्त्वपूर्ण भूमिका हो गई हैं। बच्चों की वैयक्तिक भिन्नता को पहचानते हुए उनके अधिगम के लिये आनंददायी वातावरण और इस वातावरण में उनका व्यक्तिगत, नैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास स्वाभाविक रूप से हो सके। यह एक चुनौती भरा कार्य है, जिसके लिये कोई एक शिक्षण तकनीक नहीं हो सकती और इसीलिये शिक्षण कार्य के लिये सतत् आत्मचिंतन, आत्मप्रेरणा तथा सृजनशील शिक्षक बनने की ओर तैयारी की आवश्यकता है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा– 2005 (एन.सी.एफ.) एवं राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् 2009 (एनसीटीई) द्वारा तैयार मापदंडों के संदर्भ में शिक्षक शिक्षा के अंतर्गत D.El.Ed. (डिप्लोमा इन एलीमेंट्री एजुकेशन) पाठ्यक्रम तैयार किया गया हैं, जिससे शिक्षकों में शिक्षकीय पेशे के लिये व्यावसायिक दक्षता विकसित की जा सके।

उद्देश्य :–

1. छात्राध्यापक, प्रारंभिक शिक्षा की प्रकृति, प्रारंभिक शिक्षा के उद्देश्य, आने वाली समस्या एवं प्रारंभिक शिक्षा के महत्त्वपूर्ण मुद्दों को समझ सकेंगें।
2. छात्राध्यापक सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को बच्चों के संदर्भ में सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक संदर्भों को समझ सकेंगे।
3. सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में बच्चों के साथ जुड़कर आनंद की अनुभूति कर सकेंगे।
4. बच्चों के साथ समानता का व्यवहार करना सीख सकेंगे।
5. विद्यालय के विकास के लिये सामाजिक संसाधनों का संगठन एवं प्रबंधन कर सकेंगे।
6. शिक्षण सिद्धांतों तथा मूल्यांकन तकनीक का उपयोग कर सकेंगे।
7. प्रारंभिक शिक्षा के क्षेत्र में विषयवस्तु को पढ़ाने के लिये आवश्यक सहायक शिक्षण सामग्री का निर्माण कर उसका अध्यापन में उपयोग कर सकेंगे।
8. विज्ञान और पर्यावरण विषय के नवीन तथ्यों, खोजों एवं अनुसंधानों से परिचित होकर बच्चों को नवीन ज्ञान सीखने की ओर प्रेरित कर सकेंगे।
9. शैक्षिक प्रौद्योगिकी के लाभ एवं उनका अधिगम प्रक्रिया में उपयोग सीख सकेंगे।
10. विभिन्न शिक्षण पद्धतियों (गतिविधि आधारित शिक्षणए बालकेद्रिंत, परिवेश आधारित) को सीख सकेंगे।

पाठ्यक्रम में बदलाव की आवश्यकता / प्रासंगिकता :–

शालेय शिक्षा के पाठ्यक्रम में एक निश्चित अंतराल पश्चात परिवर्तन किये जाते है। शालेय पाठ्यपुस्तकें प्रतिवर्ष पुनरीक्षित एवं संशोधित की जाती है, क्योंकि शिक्षा का समय के साथ परिवर्तित होना अत्यंत आवश्यक है। तेज रफ्तार से विकास की दौड़, दौड़ता समय ज्ञान के नये–नये आयामों को छू रहा है। इस नवीन ज्ञान को बच्चों तक पहुँचाना, नए ज्ञान का सृजन करना, अपनी रुचियों से सीखते हुए आगे बढ़ना तभी संभव है, जब हमारे शिक्षा के लक्ष्य में यह सब शामिल हो। यदि शालेय शिक्षा का पाठ्यक्रम परिवर्तित होता है तो शिक्षक शिक्षा के पाठ्यक्रम में बदलाव भी वांछित है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 ने वांछित बदलाव की शुरूआत कर राष्ट्रीय स्तर से राज्य स्तर तक नवीन पाठ्यसामग्री / पाठ्यपुस्तकों का विकास किया गया। इसी संदर्भ में मध्य प्रदेश में भी पाठ्यपुस्तकें तैयार की गई। वर्ष 2009 में राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा तथा निःशुल्क शिक्षा का अधिकार जैसे महत्त्वपूर्ण संवैधानिक संशोधन हुए। उक्त के संदर्भ में डी.एड. पाठ्यक्रम में बदलाव आवश्यक हो गया। यह पाठ्यक्रम चूंकि प्रांरभिक शिक्षा हेतु तैयार किया गया है अतः डिप्लोमा इन एजुकेशन के स्थान पर इसे डिप्लोमा इन एलीमेन्ट्री एजुकेशन किया जा रहा है।

राष्ट्रीय पाठयचर्या की रूपरेखा–2005 दस्तावेज के अनुसार निम्नलिखित मार्गदर्शी सिद्धांत महत्त्वपूर्ण है–

1. ज्ञान को विद्यालय के बाहरी जीवन से जोड़ना।
2. रटने को हतोत्साहित करना।
3. पाठ्यचर्या को इस तरह विकसित करना कि बच्चों का सर्वांगीण विकास हो सके।
4. परीक्षा को कक्षा की गतिविधियों से जोड़ते हुए लचीला बनाना।
5. एक ऐसी पहचान का विकास करना है, जिसमें प्रजातांत्रिक राज्य व्यवस्था सुदृढ़ होती है।

इसी तरह निःशुल्क एवं अनिवार्य बालशिक्षा का अधिकार अधिनियम (आर.टी.ई.) 2009 में शिक्षा व्यवस्था व प्रक्रिया में व्यापक परिवर्तन की आवश्यकता अनुभव की गई है। ये परिवर्तन निम्नलिखित बिंदुओं के संदर्भ में हैं–

1. संविधान में निहित मूल्यों के अनुरूप शिक्षा दी जाना।
2. बच्चों में अंर्तनिहित क्षमता एवं प्रतिभा को विकसित करना।
3. शिक्षा में शोध करते हुए खोजपरक एवं नवाचारी विधियों व क्रियाकलाप द्वारा शिक्षण कार्य करना।
4. आनंददायी वातावरण में बालकेंद्रित विधियों का प्रयोग।
5. सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (CCE)करना जिसमें बच्चे के ज्ञान,समझ एवं कौशल का आकलन करना।
6. भयमुक्त वातावरण में अध्यापन करना।
7. स्वतंत्र अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान करना।
8. बालक का सर्वांगीण विकास करना।
9. प्रांरभिक कक्षाओं में मातृभाषा में शिक्षण कार्य को प्रोत्साहित करना।

NCF-2005, NCFTE-2009 तथा RTE-2009 के निर्धारित मापंदडों को स्वीकार्य करते हुए

डी. एल.एड. पाठ्यक्रम में आवश्यक संशोधन एवं परिवर्तन की आवश्यकता महसूस की गई। इन संवैधानिक अभिलेखों के अतिरिक्त मैदानी स्तर से भी शिक्षक की अभिकृति उनके नकारात्मक अभिप्रेरण पर भी चिन्ता समाज से उठने लगी थी। उस आवश्यकता को भी नवीन पाठ्यक्रम में स्थान दिया जा रहा है, शिक्षक स्वयं को पहचाने, बालक को पहचाने, स्वयं को बालक के संदर्भ में जाने, बालक के संदर्भ में स्वयं को जाने तभी बच्चों के सर्वांगीण विकास में शिक्षक का भरपूर सहयोग मिल पाएगा। इसी तारतम्य में शालेय संस्कृति, नैतिकता, तकनीकी ज्ञान, सामाजिक सरोकार को स्थान देते हुए शिक्षक का बहुआयामी चरित्र तैयार करने का प्रयास, इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य है।

डी.एल. एड. पाठ्यक्रम का ढांचा :–

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् द्वारा सुझायी गई द्विवर्षीय पाठ्यचर्या को निम्नलिखित चार घटकों के आधार पर विकसित किया गया है–

- **बुनियादी विषय :–**

बुनियादी विषय के अंतर्गत बच्चों एवं बच्चों के विकास को समझना, शिक्षा के दार्शनिक तथ्यों को जानना, शिक्षा के उद्देश्य, सामाजिक सरोकार और शिक्षा के समसामयिक मुद्दों को रखा गया है। इसके अतिरिक्त बचपन एवं बाल विकास , समसामयिक भारतीय समाज में शिक्षा, ''शिक्षा, समाज, ''पाठ्यचर्या और शिक्षार्थी,'' ''स्वयं की पहचान,'' सामाजिक, सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में संज्ञान, एवं अधिगम, ''शिक्षक और शालेय संस्कृति,'' ''शालेय संस्कृति, नेतृत्व एवं परिवर्तन'', ''विविधता, समावेशित शिक्षा और जेंडर ''विषय लिए गए हैं।

- **शिक्षा शास्त्रीय विषय :–**

इसमें वे विभिन्न विषय रखे गये हैं जिन्हें विद्यालयीन शिक्षा में पढ़ाया जा रहा है। ये विषय है– भाषा (हिंदी, अंग्रेजी, संस्कृत, उर्दू, मराठी), गणित, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान, पर्यावरण अध्ययन, कला और शिक्षा, स्वास्थ्य स्वच्छाता भावनात्मक विकास एवं शारीरिक शिक्षा, कम्प्यूटर शिक्षा, ।

- **शिक्षण विधियाँ :–**

इसके अंतर्गत कक्षा में अध्यापन करने के लिये उपयुक्त वातावरण, शिक्षण सहायक सामग्री तथा उपयोग में लाई जा रही शिक्षण विधियों को शामिल किया गया है। साथ ही कार्य और शिक्षा को भी इसमें शामिल किया गया है। प्रथम वर्ष में हिन्दी भाषा एवं गणित शिक्षण अभ्यास को तथा द्वितीय वर्ष में अंग्रेजी भाषा/ तृतीय भाषा, सामाजिक विज्ञान/विज्ञान /पर्यावरण, शिक्षण अभ्यास को शामिल किया गया है।

- **इंटर्नशिप :–**

अकेले सैद्धांतिक ज्ञान को देकर शिक्षक को प्रशिक्षित मान लेना सही नहीं है, यह अनुभव किया गया कि छात्राध्यापकों को कुछ दिन विद्यालय में रहकर समस्त गतिविधियों का अवलोकन, गतिविधियों में भाग लेने के अवसर दिए जाने चाहिए। इससे छात्राध्यापक विद्यालय की वास्तविक परिस्थितियों को समझकर विद्यालय का संचालन करने के योग्य बन सकते हैं। प्रत्येक वर्ष में इटंर्नशिप के लिए 40 दिवस निर्धारित किए गए हैं जिसे वह आबंटित शाला में रहकर सीखेगा तथा 30 दिवस इंटर्नशिप की पूर्व तैयारी प्रशिक्षण में संस्थान में करवाई जावेगी।

मूल्यांकन योजना :–

डिप्लोमा इन एलीमेंट्री एज्युकेशन का यह पाठ्यक्रम द्विवर्षीय है। प्रत्येक वर्ष के पाठ्यक्रम का मूल्यांकन दो भागो में किया जायेगा

1. सैद्धांतिक मूल्यांकन 2. व्यावहारिक मूल्यांकन

प्रतिवर्ष कक्षा संचालन हेतु कम से कम 220 कार्य दिवस का होना आवश्यक है, जिसमें शाला में आबंटित 40 दिन का ''शाला में इंटर्नशिप'' अतिआवश्यक है । इस 40 दिवसीय कार्यक्रम में छात्राध्यापक को व्यक्तिगत रूप से आबंटित किए गए प्राथमिक अथवा माध्यमिक विद्यालय में रहकर समस्त गतिविधियों में सक्रियता से भाग लेना है । यह ''इंटर्नशिप''कार्यक्रम का अनिवार्य अंग होगा तथा इसके बिना वार्षिक परीक्षा में बैठने की पात्रता नहीं होगी। प्रत्येक वर्ष में (प्रथम व द्वितीय)950–1000 अंक इस तरह कुल पूर्णांक 1950 अंक होंगे।

सैद्धांतिक परीक्षा :–

सैद्धांतिक परीक्षा के अंतर्गत प्रथम वर्ष में 7 एवं द्वितीय वर्ष में 10 प्रश्न पत्र रखे गये है। प्रथम वर्ष में 5 प्रश्न पत्र के पूर्णांक 100 है, जिसमें 70 अंक बाह्य लिखित परीक्षा के लिए तथा 30 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए हैं। 2 प्रश्न पत्र के पूर्णांक 50 अंक है, जिसमें 35 अंक बाह्य लिखित परीक्षा हेतु तथा 15 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए हैं। द्वितीय वर्ष में 2 प्रश्न पत्र के पूर्णांक 100 है, जिसमें 70 अंक बाह्य लिखित परीक्षा हेतु तथा 30 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए हैं। 6 प्रश्न पत्र के पूर्णांक 50 अंक है, जिसमें 35 अंक बाह्य लिखित परीक्षा हेतु तथा 15 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए हैं। दो प्रश्न पत्रो के पूंर्णाक 75 अंक है, जिसमें अंग्रेजी विषय के बाह्य मूल्यांकन में 50 अंक तथा आंतरिक मूल्यांकन में 25 अंक निर्धारित है इसी प्रकार विज्ञान शिक्षण के बाह्य मूल्यांकन हेतु 35 अंक आंतरिक मूल्यांकन 15 अंक तथा प्रायोगिक हेतु 25 अंक रखे है। प्रत्येक विषय के लिये बाह्य लिखित परीक्षा में न्यूनतम 36ः अंक (अलग–अलग) अर्थात् 75 में से 26 अंक तथा 35 में 13 अंक प्राप्त करना अनिवार्य होगा। आंतरिक में 30 में से 11, 15 में 6 अंक प्राप्त करना अनिवार्य होगा। प्रत्येक विषय में अलग–अलग 36 : अंक पास होने हेतु अनिवार्य है तथा उर्त्तीण होने के लिये समस्त विषयों का महायोग 40 : अनिवार्य होगा। इस तरह प्रथम वर्ष में 950 में 415 तथा द्वितीय वर्ष में 1000 में 435 अंक लाना अनिवार्य होगा।

सैद्धांतिक प्रश्न पत्र का आंतरिक मूल्यांकन :–

प्रत्येक सैद्धांतिक प्रश्नपत्र के आंतरिक मूल्यांकन में 5 अंक मौखिक मूल्यांकन हेतु रखे गए हैं।प्रथम वर्ष में सैद्धांतिक पांच प्रश्न पत्रों में 30 अंक का विभाजन (25 + 5) दो प्रश्न पत्रों में 15(10+ 5) अंक का आंतरिक मूल्यांकन होगा। सत्रगत कार्य के प्रत्येक प्रश्न पर 5 अंक निर्धारित हैं। उपरोक्त में 5 अंक सत्रगत कार्य के मौखिक मूल्यांकन के लिये है, जिसे सत्र में 2 बार लिया जायेगा। प्रथम मूल्यांकन दिसम्बर–जनवरी तथा द्वितीय वार्षिक परीक्षा से पूर्व होगा। दोनों मूल्यांकन के औसत अंक, जो कि प्रत्येक विषय के लिये 5 ही होंगे, अंक सूची में जोड़े जाएंगें।सत्रगत कार्य के प्रश्न प्रत्येक विषय के पाठ्यवस्तु के अंत में दिए गए हैं। दिए गए सत्रगत कार्य के अतिरिक्त भी शिक्षक आवश्यकतानुसार अन्य सत्रगत कार्य प्रायोजना के रूप में देने के लिये स्वतंत्र हैं। सत्रगत कार्य का मूल्यांकन संस्था के विषय शिक्षक के द्वारा करने के पश्चात अंक निर्धारित प्रारूप में सील्ड लिफाफे में रखकर प्राप्तांक सूची जिले में स्थित डाइट (समन्वयक संस्था) को अनिवार्यतः उपलब्ध कराएंगे।

मूल्यांकन योजना

(प्रथम वर्ष) सैद्धांतिक पाठ्यक्रम

क्र.	पाठ्यक्रम शीर्षक	बाह्य मूल्यांकन	आंतरिक मूल्यांकन	पूर्णांक	न्यूनतम उत्तीर्णांक 36 :
1	बचपन एवं बाल विकास	70	30	100	36
2	समसामयिक भारतीय समाज में शिक्षा	70	30	100	36
3	शिक्षा, समाज, पाठ्यचर्या और शिक्षार्थी	70	30	100	36
4	स्वयं की पहचान	35	15	50	18
5	भाषाई समझ,प्रांरभिक साक्षरता एवं हिंदी शिक्षण	70	30	100	36
6	गणित शिक्षण प्रारंभिक स्तर–1	70	30	100	36
7	Proficiency in English	35	15	50	18
	योग–1	420	180	600	240 (40:) अंक अनिवार्य

व्यावहारिक पाठ्यक्रम

क्र.	पाठ्यक्रम शीर्षक	बाह्य मूल्यांकन	आंतरिक मूल्यांकन	पूर्णांक	न्यूनतम उत्तीर्णांक 50 :
अ	कम्प्यूटर शिक्षा भाग–1	25	25	50	25
ब	स्वास्थ्य,स्वच्छता भावनात्मक विकास एवं शारीरिक शिक्षा भाग–1	15	15	30	15
स	कला औरशिक्षा भाग–1	20	20	40	20
द	कार्य और शिक्षा	15	15	30	15
इ	शाला में इंटर्नशिप • हिन्दी भाषा • गणित	100	100 (50+50)	200 (20+20+60)	100
	योग–2	175	175	350	175
	महायोग (योग–1 +योग–2)	**595**	**355**	**950**	**415**

टीप :– सैद्धान्तिक मूल्यांकन के कुल अंक 240 (40:) तथा व्यावहारिक मूल्यांकन के 175 अंक (50:) मिलाकर महायोग 415 उत्तीर्ण होने के लिये अनिवार्य होगे।

मूल्यांकन योजना
(द्वितीय वर्ष) सैद्धान्तिक पाठ्यक्रम

क्र.	पाठ्यक्रम शीर्षक	बाह्य मूल्यांकन	आंतरिक मूल्यांकन	पूर्णांक	न्यूनतम उत्तीर्णांक 36:
8	सामाजिक–सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में संज्ञान एवं अधिगम	70	30	100	36
9	शिक्षक और शालेय संस्कृति	35	15	50	18
10	शालेय संस्कृति, नेतृत्व एवं परिवर्तन	35	15	50	18
11	भाषा शिक्षण –कोई 1 (अ)संस्कृत भाषा शिक्षण, (ब)उर्दू भाषा शिक्षण ,(स) मराठी भाषा शिक्षण	35	15	50	18
12	Pedagogy of English	50	25	75	27
13	पर्यावरण अध्ययन शिक्षण	70	30	100	36
14	सामाजिक विज्ञान शिक्षण	35	15	50	18
15	विज्ञान शिक्षण	35+25	15	75	27
16	गणित शिक्षण प्रारंभिक स्तर–2	35	15	50	18
17	विविधता,समावेशित शिक्षा और जेंडर	35	15	50	18
	योग–1	460	190	650	260 (40:) अंक अनिवार्य
	व्यावहारिक पाठ्यक्रम				
क्र.	**पाठ्यक्रम शीर्षक**	**बाह्य मूल्यांकन**	**आंतरिक मूल्यांकन**	**पूर्णांक**	**न्यूनतम उत्तीर्णांक 50:**
अ	कम्प्यूटर शिक्षा भाग–2	25	25	50	25
ब	स्वास्थ, स्वच्छता, भावनात्मक विकास एवं शारीरिक शिक्षा भाग–2	20	20	40	20
स	कला और शिक्षा भाग–2	30	30	60	30
द	शाला इंटर्नशिप (अंतिम पाठ योजना सहित) • अंग्रेजी भाषा /तृतीय भाषा शिक्षण • विज्ञान शिक्षण/सामाजिक विज्ञान शिक्षण/पर्यावरण अध्ययन	100 (50+50)	100 (20+20+60)	200	100
	योग–2	175	175	350	175
	महायोग (योग–1 +योग–2)	635	365	1000	435

टीप :– सैद्धान्तिक मूल्यांकन के कुल अंक 260 (40:) तथा व्यावहारिक मूल्यांकन के 175 अंक (50:) मिलाकर महायोग 435 उत्तीर्ण होने के लिये अनिवार्य होगे।

विज्ञान प्रायोगिक परीक्षा :–

द्वितीय वर्ष में विज्ञान विषय में 25 अंक की प्रायोगिक परीक्षा का प्रावधान है। इसके लिये संबंधित प्रशिक्षण संस्था द्वारा आंतरिक परीक्षक व माध्यमिक शिक्षा मंडल द्वारा बाह्य परीक्षक की व्यवस्था की जाएगी। विज्ञान प्रायोगिक की अंतिम परीक्षा निर्धारित प्रपत्र में पूर्ण कर जिले की संबंधित डाइट को भेजना होगा। प्रायोगिक व लिखित दोनों ही परीक्षा में अलग–अलग उत्तीर्ण होना अनिवार्य होगा। विज्ञान प्रायोगिक में उत्तीर्ण होने हेतु न्यूनतम अंक 13 होगें।

व्यावहारिक अभ्यास :–

उद्देश्य :–

प्रारंभिक शिक्षा में पत्रोपाधि पाठ्यक्रम के व्यावहारिक अभ्यास की शिक्षा के पश्चात छात्राध्यापक निम्नलिखित उपलब्धियों को हासिल कर सकेंगे–

1. प्रारंभिक स्तर तक के विभिन्न विषयों में बालकेंद्रित, ''गतिविधि आधारित योजना'', प्रचलित नवीन पद्धतियों पर आधारित पाठ योजना, तैयार कर शिक्षण कार्य कर सकेंगे।
2. बच्चों को समझ सकेंगे, उनके सीखने के तरीके, समस्याएं, कठिनाइयाँ, समस्याओं को समझकर सीखने की योजना बना सकेंगे।
3. सामाजिक सहभागिता एवं सहयोग की प्रकृति तथा विषयों के व्यावहारिक रूप से जुड़कर, प्रयोग करते हुए छात्रों को भी समाज से जुड़ने के लिये प्रेरित कर सकेंगे।
4. कम्प्यूटर शिक्षा के अंतर्गत शिक्षण की पद्धतियों में नवीन तकनीक का उपयोग करते हुए पाठों को रूचिकर एवं बोधगम्य, कौशलात्मक बना सकेंगे।
5. स्वास्थ्य, स्वच्छता भावनात्मक विकास एवं शारीरिक शिक्षा के अंतर्गत व्यायाम एवं योगासन अभ्यास नियमित रूप से करते हुए छात्राध्यापक स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा को जान सकेगें तथा छात्रो में सकारात्मक भावनाओ का विकास कर सकेंगे।
6. डाइट स्तर पर कार्य और शिक्षा के अंतर्गत बागवानी, सिलाई,कढ़ाई एवं सजावटी वस्तुओं का निर्माण कार्य करते हुए छात्राध्यापक कार्य और शिक्षा को जान सकेंगें।
7. चित्रकला/ललित कला के नियमित अभ्यास द्वारा बच्चों में सृजनात्मकता बढ़ाने के साथ सांस्कृतिक–साहित्यिक क्रियाकलापों के माध्यम से स्वयं एवं छात्रों में आत्मविश्वास को बढ़ाते हुए स्वस्थ मनोरंजन के लिये कार्य करते हुए छात्राध्यापक कला और शिक्षा को जान सकेगें ।

व्यावहारिक अभ्यास की कार्य योजना :–

द्विवर्षीय शिक्षक प्रशिक्षण के अंतर्गत प्रथम एवं द्वितीय वर्ष के सैद्धांतिक विषयों के शिक्षण के साथ–साथ व्यावहारिक अभ्यास भी नियमित रूप से कराये जाएँगे। व्यावहारिक अभ्यास के पाठ्यक्रम को निम्नानुसार विभाजित किया गया है–

वर्ष	शिक्षण अभ्यास	गतिविधियां	सामाजिक,सांस्कृतिक एवं स्वतंत्रात्मक कार्य व्यवहार
प्रथम वर्ष	• हिन्दी • गणित	• अकादमिक गतिविधियाँ • प्रबंधकीय गतिविधियाँ	• कम्प्यूटर शिक्षा • स्वास्थ्य, स्वच्छता एवं शारीरिक शिक्षा • कला और शिक्षा • कार्य और शिक्षा
द्वितीय वर्ष	• अंग्रेजी शिक्षण/तृतीय भाषा • सामाजिक विज्ञान/ विज्ञान शिक्षण/पर्यावरण अध्ययन	• अकादमिक गतिविधियाँ • प्रबंधकीय गतिविधियाँ	• कम्प्यूटर शिक्षा • स्वास्थ्य, स्वच्छता,भावनात्मक विकास एवं शारीरिक शिक्षा • कला और शिक्षा

टीप : अकादमिक से आशय इंटर्नशिप के दौरान किये जाने वाले अध्ययन अध्यापन से है तथा प्रबंधकीय से आशय शालेय अभिलेखों के रखरखाव तथा अन्य गतिविधियों से है।

व्यावहारिक अभ्यास की मूल्यांकन योजना :– प्रथम वर्ष

- **खण्ड अ कम्प्यूटर शिक्षा भाग – 1** हेतु आंतरिक एवं बाह्य मूल्यांकन के लिये 25–25 अंक, कुल 50 अंक होंगे।

- **खण्ड ब स्वास्थ्य,स्वच्छता भावनात्मक विकास एवं शारीरिक शिक्षा भाग–1** का है, जिसमें आंतरिक तथा बाह्य मूल्यांकन हेतु 15–15 अंक, कुल 30 अंक होंगे।

- **खण्ड स कला और शिक्षा भाग – 1** हेतु आंतरिक एवं बाह्य मूल्यांकन के लिये 20–20 अंक, कुल 40 अंक होंगे।

- **खण्ड द कार्य और शिक्षा** हेतु आंतरिक तथा बाह्य मूल्यांकन के 15–15 अंक, कुल 30 अंक होंगे।

- **खण्ड इ शिक्षण अभ्यास** हेतु 200 अंक निर्धारित होंगे, जिनमें से 100 अंक आंतरिक मूल्यांकन द्वारा एवं 100 अंक बाह्य मूल्यांकन द्वारा प्रदान किये जायेंगे।

व्यावहारिक अभ्यास की परीक्षा योजना (डी.एल.एड प्रथम वर्ष)

क्रमांक	व्यावहारिक परीक्षा	आंतरिक मूल्यांकन	बाह्य लिखित मूल्याकंन	योग
अ	कम्प्यूटर शिक्षा भाग –1	25	25	50
ब	स्वास्थ्य,स्वच्छता ,भावनात्मक विकास एवं शारीरिक शिक्षा भाग –1	15	15	30
स	कला और शिक्षा भाग –1	20	20	40
द	कार्य और शिक्षा	15	15	30
इ	**1 हिन्दी भाषा** आबंटित विद्यालय में 20 पाठों का शिक्षण अभ्यास, सहायक सामग्री,10 पाठों का अवलोकन	20	50	70
	2 गणित आबंटित विद्यालय में 20 पाठ शिक्षण अध्यापन अभ्यास,सहायक सामग्री, 10 पाठों का अवलोकन	20	50	70
	3 इंटर्नशिप अंतर्गत गतिविधि आधारित मूल्यांकन	60	–	60
	योग	175	175	350

व्यावहारिक अभ्यास की मूल्यांकन योजना :– द्वितीय वर्ष

- **खण्ड 'अ' कम्प्यूटर शिक्षा भाग–2** के अंतर्गत आंतरिक मूल्याकंन 25 अंक एवं बाह्य मूल्यांकन 25 अंक इस तरह कुल 50 अंक का होगा।
- **खण्ड 'ब' स्वास्थ्य,स्वच्छता ,भावनात्मक विकास एवं शारीरिक शिक्षा भाग–2** जिसमें आंतरिक तथा बाह्य मूल्यांकन हेतु 20–20 अंक, कुल 40 अंक होंगे।
- **खण्ड 'स' कला और शिक्षा भाग–2** आंतरिक एवं बाह्य मूल्यांकन के लिये 30–30 अंक, कुल 60 अंक होगे।
- **खण्ड 'द' शिक्षण अभ्यास** हेतु 2 विषय है, जिसमें छात्राध्यापकों अंग्रेजी शिक्षण/तृतीय भाषा में से किसी एक विषय को लेना होगा। सामाजिक विज्ञान/विज्ञान/पर्यावरण अध्यापन में से किसी एक विषय को बाह्य मूल्यांकन के लिए लेना होगा। प्रत्येक विषय में शिक्षण अभ्यास के आंतरिक मूल्यांकन के 20 अंक इस तरह दोनों विषयों को मिलाकर 40 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिये निर्धारित हैं तथा इंटर्नशिप अंतर्गत गतिविधियों के आंतरिक मूल्यांकन 60 अंक निर्धारित हैं।बाह्य मूल्यांकन हेतु प्रति विषय 50 अंक, कुल 100 अंक निर्धारित हैं।

द्वितीय वर्ष

क्रमांक	व्यावहारिक परीक्षा	आंतरिक मूल्यांकन	बाह्य लिखित मूल्याकंन	योग
अ	कम्प्यूटर शिक्षा भाग –2	25	25	50
ब	स्वास्थ्य,स्वच्छता, भावनात्मक विकास एवं शारीरिक शिक्षा भाग –2	20	20	40
स	कला और शिक्षा भाग –2	30	30	60
द	**1 अंग्रेजी भाषा / तृतीय भाषा** आबंटित विद्यालय में 20 पाठों का शिक्षण अभ्यास, सहायक सामग्री,10 पाठों का अवलोकन	20	50	70
	2 सामाजिक विज्ञान / विज्ञान / पर्यावरण अध्यपन आबंटित विद्यालय में 20 पाठों का अध्यापन अभ्यास, सहायक सामग्री, 10 पाठों का अवलोकन	20	50	70
	3 इंटर्नशिप अंतर्गत गतिविधि आधारित मूल्यांकन	60	–	60
	योग	**175**	**175**	**350**

निर्देश–पाठयोजनाओं के संबंध में :–

- शाला इंटर्नशिप कार्यक्रम हेतु 70 दिवस निर्धारित है जिसमें से 30 दिवस पूर्ण तैयारी हेतु तथा 40 दिवस आंबटित शाला में की जाने वाली गतिविधियों हेतु है।
- प्रत्येक विषय के लिये को टीचिंग पद्धति पर आधारित पाठ योजना, निर्माण वाद की अवधारणाओं पर पाठो को बनाया जाना है।
- बालकेन्द्रित गतिविधि आधारित, नवाचारी पद्धति पर आधारित पाठयोजना तैयार की जानी है।
- एक दिवस में 2 से अधिक पाठ योजनायें नही पढाई जावेंगी।
  शिक्षण अभ्यास हेतु विषयवार पाठयोजना का प्रारूप संदर्भ सामग्री में दिया जायेगा।
- प्रत्येक प्रशिक्षण संस्था को 30 दिवसीय इंटर्नशिप की पूर्व तैयारी करवानी आवश्यक होगी।
- प्रत्येक छात्राध्यापक अपने साथियो द्वारा अध्यापन किये जा रहे पाठो में से निर्धारित पाठो का अवलोकन करेंगे। अवलोकन प्रपत्र का प्रारूप तैयार किया जायेगा।
- प्रथम वर्ष के छात्राध्यापको को शाला इंटर्नशिप के समय कक्षा 1 एवं 2 के बच्चों के साथ कक्षा शिक्षण करना होगा।
- संबधित विषय के अध्यापन के समय शिक्षण सहायक सामग्री का निर्माण एवं उपयोग अनिवार्य होगा।

शिक्षण अभ्यास पाठों का निरीक्षण एवं मार्गदर्शनः–

1. शिक्षण अभ्यास के पूर्ण प्रादर्श पाठों का आयोजन प्रशिक्षण संस्थान के विषयवार शिक्षक प्रशिक्षकों द्वारा किया जाएगा।

2. प्रादर्श पाठ सभी विषयों में विभिन्न शिक्षण पद्धतियों एवं नवाचारी पद्धतियों के माध्यम से दिए जाए।

3. कक्षा 1 के शिक्षण के लिये प्रादर्श पाठ अनिवार्यत': आयोजित किए जाए।

4. प्रत्येक छात्राध्यापकों के शिक्षण अभ्यास के पाठों का नियमित निरीक्षण मेंटर्स के द्वारा किया जाएगा।

5. प्रशिक्षण संस्था के शिक्षक प्रशिक्षकों द्वारा प्रत्येक छात्राध्यापकों को निर्धारित पाठों का निरीक्षण कर विस्तृत टीप निर्धारित प्रारूप में एवं आन स्पॉट मार्गदर्शन दिया जाएगा।

6. शिक्षण अभ्यास (इंटर्नशिप) प्रारंभ करने से पूर्व चयनित विद्यालयों के संस्था प्रधान एवं मेंटर्स का डाइट में उनकी भूमिका, कार्य स्पष्ट करने हेतु प्रशिक्षण आयोजित किए जाएँगें।

शाला इंटर्नशिप

पूर्णांक –200

ब्राह्य मूल्यांकन –100

आंतरिक मूल्यांकन .–100.

कालखण्ड –30+40दिवस

प्रस्तावनाः–

शाला इंटर्नशिप कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य छात्राध्यापकों को अभ्यास के लिए अर्थपूर्ण शिक्षण अनुभव के अवसर उपलब्ध कराना है। यह कार्यक्रम छात्राध्यापकों को विद्यालय की समस्त शैक्षिक गतिविधियों को सीखने के अवसर प्रदान करता है। छात्राध्यापक शालेय गतिविधियों में एक नियमित शिक्षक की तरह सक्रिय भागीदारी करते हुए अपनी सृजनशीलता को बढ़ाते हैं। इस उद्देश्य की प्रतिपूर्ति के लिए आवश्यक है कि कार्यक्रम में छात्राध्यापकों को शाला में भागीदारी के अवसर और सृजनात्मक नवाचारों की स्वतंत्रता मिले, साथ ही बच्चों को भी नवाचारी शिक्षण पद्धतियों का लाभ प्राप्त हो सके। भावी शिक्षक तैयार करने में शाला इंटर्नशिप कार्यक्रम की महत्त्वपूर्ण भूमिका तो है ही, लेकिन यह कार्य चुनौती पूर्ण भी हैं। एन.सी.एफ.–2005 में शिक्षक को एक सशक्त और पेशेवर शिक्षक के रुप में परिकल्पित किया गया है। शिक्षक की व्यावसायिक तैयारी के लिए एन.सी.एफ.टी.ई.–2009 ने भी कई सुझाव दिए है, जिसे शाला इंटर्नशिप कार्यक्रम की सहायता से छात्राध्यापक को शिक्षा के सिद्धांतों के साथ–साथ शाला में सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को समझने के अवसर दिए जा सकते हैं।

यह कार्यक्रम पूर्णतः क्षेत्र आधारित है, इसलिए छात्राध्यापक को सीधे समस्याओं से जूझते हुए सीखने का अनुभव मिलेगा।छात्राध्यापक को कक्षा में पढ़े गए सैद्धांतिक पक्षों को विद्यालय में परखने के अवसर मिलेगें साथ ही साथ बच्चों व कक्षागत प्रक्रियाओं को समझने में वे सैद्धांतिक शिक्षण पद्धतियों का उपयोग करने में समर्थ हो सकेंगें।

शाला इंटर्नशिप कार्यक्रम अर्न्तगत छात्राध्यापक से अनेक अपेक्षाएं हैं जिन्हें उसे दोनों वर्षों में प्राप्त करना होगा। प्रथम वर्ष में विशेष ध्यान इस बात पर दिया जाएगा कि छात्राध्यापक का परिचय विद्यालय से, विद्यालय के वातावरण से, बच्चों को समझने तथा सीखने–सिखाने की प्रक्रिया से हो।द्वितीय वर्ष में यह अपेक्षित है कि छात्राध्यापक विद्यालय में एक नियमित शिक्षक की भांति कार्य करें किंतु इसमें उनकी सहायता शिक्षक प्रशिक्षक संस्थाएं अपने अकादमिक पर्यवेक्षकों के मार्गदर्शन और फीड बैक के साथ करेंगीं।

शाला में इंटर्नशिप कार्यक्रम–प्रथम वर्ष

विशिष्ट उद्देश्य :–

1. सीखने–सिखाने की प्रक्रिया तथा छात्रों की गतिविधियों का शाला में अवलोकन करना।
2. बच्चों से जुड़कर उनकी सामाजिक,आर्थिक व सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को जानकर बच्चों से प्रभावी तरीके से बातचीत कर पाना।
3. पाठ्य पुस्तकों एवं स्रोत संदर्भ सामग्रियों का बाल–विकास एवं शिक्षण पद्धतियों के संदर्भ में विश्लेषण कर मूल्यांकन एवं समीक्षाकरना।
4. बाल साहित्य, पाठ्यपुस्तकें, गतिविधियाँ, भ्रमण तथा खेल जैसे उपलब्ध स्रोत सामग्री के साथ अधिगम दृष्टि विकसित करना।
5. नवाचारी केन्द्रों में सीखे गए सैद्धांतिक ज्ञान का नियमित अभ्यास में परिलक्षित होना।
6. विद्यालय के प्रभावी प्रबंधन व संचालन के संदर्भ में समुदाय की भूमिका को समझना।
7. विभिन्न विषयों को पढ़ाने की योजना बनाकर उसका कक्षा में क्रियान्वयन करना।
8. शिक्षण–प्रक्रिया में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के विभिन्न तरीकों को समझना एवं नए तरीके खोजना।
9. विद्यालय के वातावरण को समझना व विद्यालय की परिस्थितियों के अनुसार नवाचार हेतु अभिप्रेरित होना, चुनौतियों को स्वीकारना।

उक्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए 70 दिवस के शिक्षण में इंटर्नशिप कार्यक्रम को 3 चरणों में विभक्त किया गया है।

शाला में इंटर्नशिप कार्यकम– 70 दिवस

चरण	कार्यक्रम एवं गतिविधियां	दिवस
प्रथम	इंटर्नशिप की पूर्व गतिविधियाँ (तैयारी)	30
द्वितीय	इंटर्नशिप दौरान गतिविधियाँ (शाला का वास्तविक अनुभव)	40
तृतीय	इंटर्नशिप के पश्चात की गतिविधियाँ (समालोचनात्मक चिंतन)	–

(प्रथम चरण (संस्थान स्तर पर)

	इंटर्नशीप की पूर्व गतिविधियॉ (तैयारी)	
क्रमांक	**गतिविधि का नाम**	**दिवस**
1.	संपूर्ण इंटर्नशिप कार्यक्रम पर उन्मुखीकरण एवं अभ्यास हेतु विद्यालयों का चयन–संस्थान द्वारा	**01**
2.	संस्थान द्वारा माइक्रो टीचिंग के कौशलों पर उन्नमुखिकरण	**10**
3.	पाठ्य पुस्तकों (हिन्दी/गणित/पर्यावरण अध्ययन) एवं स्रोत सामग्री के समालोचनात्मक विश्लेषण पर कार्यशाला	**02**
4.	स्रोत सामग्री की उपलब्धता तथा विकास एवं शिक्षण अधिगम सामग्री निर्माण पर कार्यशाला	02
5.	कक्षागत प्रक्रियाओं पर आधारित क्रियात्मक शोध पर कार्यशाला	02
6.	सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पर उन्मुखीकरण	02
7.	इकाई योजना एवं पाठ योजना निर्माण (हिन्दी एवं गणित)पर कार्यशाला (निर्माणवाद पर आधारित पाठ प्रदर्शन सहित)	05
8.	चयनित विद्यालय के संस्था प्रमुखों का उन्मुखीकरण (इंटर्नशीप गतिविधियों से परिचय,मूल्यांकन प्रपत्र,संस्था प्रमुख की भूमिका पर चर्चा)	01
9.	छात्राध्यापक,मेन्टर (आवंटित कक्षा का शिक्षक/विषय शिक्षक एवं संस्थान सुपरवाइजर (विषय विशेषज्ञ) का उन्मुखीकरण (प्रत्येक की भूमिका पर चर्चा)। को–टीचिंग अवधारणा (नवाचारी पद्धति),मूल्यांकन अवधारणा (रूब्रिक पर आधारित) पर प्रस्तुतीकरण ।	04
10.	'दैनंदिनी एवं रिफ्लेक्टिव जर्नल पर चर्चा	01
	योग	30

' ''इंटर्नशिप की पूर्व गतिविधियां'' कार्यक्रम पर छात्राध्यापकों द्वारा दैनंदिनीं एवं रिफ्लेक्टिव जर्नल पर लेखन कार्य करवाया जा सकता है,जिस पर चर्चा कर छात्रध्यापकों को फीडबैक दिया जा सकता है। इसकी उपयोगिता इंटर्नशिप के दौरान परिलक्षित होना चाहिए ।

(द्वितीय चरण (शाला स्तर पर)

इंटर्नशिप दौरान गतिविधियाँ (शाला का वास्तविक अनुभव)		
क्र.	गतिविधि का नाम	'कुल कार्य दिवस 40
1.	चयनित शाला का संपूर्ण अवलोकन, कक्षा अवलोकन एवं सीखने–सिखाने के अनुभव पर प्रतिवेदन	
2.	विद्यालय अभिलेखों का अवलोकन करना एवं संधारणी की प्रक्रिया को सीखना	
3.	कक्षागत प्रक्रियाओं पर आधारित क्रियात्मक शोधकार्य	
4.	पाठ्य पुस्तकों (प्राथमिक स्तर –हिन्दी / गणित / पर्यावरण अध्ययन) एवं उपलब्ध स्रोत सामग्री का विश्लेषण करना तथा स्रोत सामग्री का विकास करना	
5	विद्यालयों की गतिविधियों में भाग लेना (प्रार्थनासभा, खेलकूद, स्काउटिंग, विज्ञान क्लब, एवं मेले पर्यावरण क्लब, पुस्तकालय सांस्कृतिक, सामाजिक गति–विधियां, ''पी.टी.ए. एवं. '''एस .एम. सी. में सहभागिता)	
6.	नवाचारी अधिगम केंद्रों का भ्रमण कर रिपोर्ट लिखना।	
7.	इकाई योजना निर्माण करना।	
8.	''''पाठ योजनाओं का निर्माण एवं प्रस्तुतिकरण । (हिन्दी की 20 –पाठ योजनाएं शिक्षण अधिगम सामग्री सहित तथा 10 –कक्षा अवलोकन एवं गणित की 20– पाठ योजनाएँ शिक्षण अधिगम सामग्री सहित तथा 10– कक्षा अवलोकन)	
9.	सी.सी.ई. आधारित छात्रों का मूल्यांकन तथा पोर्टफोलियो का निर्माण करना	
10	संस्थान पर्यवेक्षक (सुपरवाईजर) द्वारा इंटर्नशिप कार्यक्रम का पर्यवेक्षण करना (कम से कम हिन्दी की 5– पाठ योजना एवं गणित की 5 –पाठ योजना का पर्यवेक्षण)	
11	''''' दैनंदिनी एवं रिफ्लेक्टिव जर्नल लिखना।	

' छात्राध्यापक प्रत्येक सप्ताह 4 दिवस शाला में इंटर्नशिप के पश्चात डाइट में अपने शिक्षक प्रशिक्षक से चर्चा कर प्राप्त अनुभव पर फीड बैक प्राप्त करेगा,जिसे अगले सप्ताह अपनी पाठ योजना के प्रदर्शन के दौरान रिफ्लेक्ट कर सकेगा। शाला में अनुभव के कुल 40 कार्यदिवस होना अनिवार्य है।

'' **पेरेंट टीचर मीटिंग**

''' **स्कूल मेनेजमेंट कमेटी**

'''' **छात्राध्यापक एक कार्य दिवस में अधिकतम दो पाठों का अध्यापन अभ्यास एवं एक पाठ का कक्षा अवलोकन कर सकते हैं।**

''''' **दैनंदिनी प्रतिदिन जबकि रिफ्लेक्टिव जर्नल के अंतर्गत साप्ताहिक अधिगम समीक्षा लिखना है।**

(तृतीय चरण(संस्थान स्तर पर)

क्रमांक	गतिविधि का नाम
1.	संस्थान में इंटर्नशिप के अनुभवों पर परिचर्चा (समझ का विकास व चुनौतियाँ)
2.	सहायक सामग्री की प्रदर्शनी एवं मूल्यांकन
3.	रिफलेक्टिव जर्नल व पाठ्य पुस्तक / स्रोत सामग्री के विश्लेषण से प्राप्त परिणामों को छात्रध्यापकों के पीयर ग्रुप में साझा (शेयरिंग) करना

शाला इंटर्नशिप कार्यक्रम –प्रथम वर्ष
मूल्यांकन योजना

क्र.	गतिविधि का नाम	आंतरिक मूल्यांकन		बाह्य मूल्यांकन		योग
		शाला प्रमुख द्वारा	संस्थान के विषय विशेषज्ञ के द्वारा	मौखिक (वायवा)	प्रत्यक्ष अवलोकन एवं अभिलेख आधारित	
1.	शाला अवलोकन अनुभव पर प्रतिवेदन	05	–	–	–	05
2.	विद्यालय की गतिविधियों में सहभागिता पर आधारित मूल्यांकन	05	–	–	–	05
3.	क्रियात्मक अनुसंधान प्रतिवेदन	–	05	–	–	05
4.	पाठ्यपुस्तक विश्लेषण (हिन्दी / गणित / पर्यावरण)	–	05	–	–	05
5.	इकाई योजना निर्माण	–	05	–	–	05
6.	पोर्टफोलियो का मूल्यांकन	05	–	–	–	05
7.	नवाचारी केंद्र के भ्रमण पर रिपोर्ट	–	05	–	–	05
8.	दैनंदिनी एवं रिफ्लेक्टिव जर्नल	–	05	–	–	05
9.	समालोचना पाठ 1. हिन्दी–1 पाठ 2. गणित–1 पाठ	–	 05 05	–	–	10
10.	अध्यापन अभ्यास अवलोकन(संस्थान सुपरवाइजर द्वारा) 1. हिन्दी– 05 पाठ 2. गणित– 05 पाठ	–	 05 05	–	–	10
11.	पाठयोजना का निर्माण 1. हिन्दी–20 पाठ योजना 10 शिक्षण अधिगम सामग्री 10 कक्षा अवलोकन सहित 2. गणित–20 पाठ योजना 10 शिक्षण अधिगम सामग्री 10 कक्षा अवलोकन सहित	–	 20 20	–	–	40
12.	फाइनल पाठ–योजना 1. हिन्दी–1 पाठ 2. गणित–1 पाठ	–	–	 10 10	 40 40	 50 50
	योग	15	85	20	80	200

डी.एल.एड. प्रथम वर्ष
बचपन एवं बाल विकास
(प्रश्न पत्र 1)

पूर्णांक–100
बाह्य अंक–70
आंतरिक अंक–30
कालखंड–140

1. **अध्ययन का क्षेत्र (Area of Study)**:– बुनियादी विषय
2. **विषय की रूपरेखा (Design of The Course)**:–
   कुछ इकाई क्षेत्र आधारित तैयार की गई है।
   समूह चर्चा के लिए विशेष पाठ्यवस्तु सुझाई जा रही है।
3. **भूमिका (Rationale)**:–

हमारे समाज में बच्चों के विकास से संबंधित कई अवधारणाएँ प्रचलित हैं, जिनका प्रभाव बच्चों के प्रति किए जाने वाले व्यवहार में परिलक्षित होता है। उदाहरणार्थ–जब हम उन्हें गीली मिट्टी की तरह मानते हैं तो हम मानकर चलते हैं कि उन्हें किसी भी रूप में ढाला जा सकता है। इसी प्रकार उनके कुछ अन्य गुणों जैसे–साहसी, जिज्ञासु, ऊर्जावान आदि के परिप्रेक्ष्य में भी उनके विकास को देखा जाता है। समाज में सभी बच्चों का बचपन एक समान नहीं होता है। उनके प्राकृतिक गुणों का उनके लालन–पालन एवं शिक्षा पर क्या प्रभाव पड़ता है? इस विषय में इन प्रश्नों पर विचार–विमर्श करने का प्रयास किया गया है।

सामाजिक व ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में यदि देखा जाए तो हमारे विद्यालय में पढ़ने वाले बच्चे समाज के विभिन्न वर्गों जैसे–किसान, दस्तकार, घुमन्तु, वंचित वर्ग, भेड़पालक, आदिवासी, मध्यमवर्गीय, सुविधासंपन्न एवं अभावग्रस्त इत्यादि से संबंधित होते हैं। उनकी समस्याएँ एवं आवश्यकताएँ कभी भी एक समान नहीं हो सकतीं। इस विषय के अंतर्गत विकास के अलग–अलग चरणों के साथ बच्चों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का अध्ययन भी किया जाएगा। बच्चों की शारीरिक, मानसिक और संवेगात्मक विकास की विभिन्न अवस्थाओं का भी इसमें अध्ययन किया जाएगा।

4 विशिष्ट उद्देश्य (Specific Objectives):–

इस पाठ्यक्रम के पश्चात छात्राध्यापकों में निम्नलिखित क्षमताएँ / दक्षताएँ विकसित हो सकेंगी –

1. बचपन की विभिन्न आवश्यकताओं, रुचियों एवं विशेषताओं का ज्ञान प्राप्त कर प्रभावी शिक्षा देने में सक्षम बनाना।
2. विकास के विभिन्न पक्ष एवं उनको प्रभावित करने वाले कारकों का ज्ञान प्राप्त करना।
3. बालकों के समाजीकरण में परिवार, समाज, विद्यालय के योगदान की समझ विकसित करना।
4. बालकों के विकास के शारीरिक, संवेगात्मक, संज्ञानात्मक एवं सामाजिक विकास के विभिन्न पहलुओं को समझना ।
5. बालकों के व्यवहार संबंधी समस्याओं का निदान एवं उपचार कर सकने की क्षमता विकसित करना।

5 विषय का महत्त्व (Running Thread of Course):–

छात्राध्यापकों में बालकों के सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश की समझ विकसित हो सकेगी। छात्राध्यापक विशेष आवश्यकता वाले बच्चों तथा समावेशन के मुद्दों को समझ सकेंगे। समाजीकरण में सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक भिन्नताओं को गंभीरता से देखते हुए बच्चों को प्रभावित करने वाले कारकों को समझ सकेंगे। गतिविधियाँ जैसे–खेल, कहानी कहना, कला आदि से विषय को समझने के अवसरों को शामिल किया गया हैं। इस विषय के अध्ययन से ज्ञानात्मक, भाषाई विकास के साथ–साथ मांसपेशियों के विकास की समझ भी विकसित,होगी।

6 इकाईवार अंक विभाजन (Units of Study) :–

अंक विभाजन			
इकाई क्रं.	**इकाई का नाम**	**अंक**	**कालखण्ड**
1.	बचपन	10	25
2.	बाल विकास के विभिन्न पक्ष	15	30
3.	शारीरिक एवं गामक विकास	10	20
4.	सामाजिक एवं संवेगात्मक विकास	20	30
5.	समाजीकरण	15	35
	सत्रगत कार्य	30	–
	कुल अंक	**100**	**140**

7 इकाई का अध्ययन (Units):–

इकाई 1–बचपन (Childhood)

- बचपन एक आनंददायी अवस्था के रूप मेंए विभिन्न आर्थिक परिस्थितियों में बचपन एवं व्यस्क,संस्कृति, भारतीय संदर्भ में बहु–बचपन
- रवीन्द्रनाथ टैगोर, महात्मा गाँधी, रूसो तथा फ्रोबेल के बचपन पर विचार
- वैश्वीकरण एवं उदारीकरण का बचपन पर प्रभाव
- भारतीय संदर्भ में भिन्न–भिन्न परिस्थितियों में बचपन का स्वरूप (समझ)
- एकल एवं संयुक्त परिवार में बचपन

इकाई 2– बालविकास के विभिन्न पक्ष (Different domain of child development)

- वृद्धि एवं विकास की अवधारणा, विकास की विभिन्न अवस्थाएँ एवं विभिन्न अवस्थाओं में संज्ञानात्मक विकास
- मानवतावादी मनोवैज्ञानिकों के मत (मैसलो के विशेष संदर्भ में) एवं विकासात्मक सिद्धांत
- सतत् एवं जीवन पर्यंत समग्र विकास
- विकास के अध्ययन में Enduring Themes एवं बहुआयामी विकास
- बाल विकास में वंशानुक्रम और वातावरण का प्रभाव एवं अन्तःक्रिया
- बच्चों से संबंधित आंकड़ों के संकलन की विभिन्न विधियाँ – स्वाभाविक अवलोकन, वृत्तिक अध्ययन, साक्षात्कार, विश्लेषणात्मक/चिन्तनात्मक प्रतिक्रिया लेखन, एनेक्डोटल
- समावेशन : अवधारणा एवं संक्षिप्त ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

इकाई 3– शारीरिक एवं गामक विकास (Physical and Motar Development)

- वृद्धि एवं परिपक्वता
- शैशवावस्था, बाल्यावस्था एवं किशोरावस्था में गामक कौशलों का विकास
- शारीरिक गामक विकास के स्तर एवं विकास के लिये अवसर प्रदान करने में शिक्षकों एवं अभिभावकों की भूमिका
- शारीरिक वृद्धि को प्रभावित करने वाले पर्यावरणीय कारक
- पोषण एवं कुपोषण :– शारीरिक विकास में विभिन्न पोषक तत्वों की उपयोगिता एवं कार्य

इकाई 4– सामाजिक एवं संवेगात्मक विकास (Social and Emotional Development)

- विकास को प्रभावित करने वाले सामाजिक–सांस्कृतिक कारक
- शैशवावस्था, बाल्यावस्था एवं किशोरावस्था में संवेगात्मक विकास
- समाजीकरण में लिंगभेद का प्रभाव एवं सामाजिक सिद्धांत
- जेण्डर (लिंग) अर्थ, विकास, प्रभावी कारक
- संवेगों की बुनियादी समझ, संवेगों के प्रकार्य

इकाई 5– बच्चों का समाजीकरण (Socialization of Child)

- समाजीकरण की अवधारणा
- परिवार में बच्चों का लालन–पालन तथा बड़ों एवं बच्चों के आपसी संबंध
- झूलाघर, अनाथालय, बालवाड़ी, आंगनवाड़ी, आवासीय विद्यालय का बच्चों के समग्र विकास में योगदान
- मित्र मण्डली, विद्यालय संस्कृति, शिक्षकों के साथ संबंध, शिक्षक की अपेक्षाओं का बालक की उपलब्धि पर प्रभाव
- विपरीत लिंग से मित्रता का बच्चों पर प्रभाव, प्रतियोगिता एवं सहयोग, स्वस्थ स्पर्धा एवं द्वंद्व, आक्रामकता, बाल प्रताड़ना, पारिवारिक मनमुटाव आदि का प्रभाव
- समाजीकरण में सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विभिन्नता, समावेशन में अनुप्रयोग (विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के विशेष संदर्भ में)
- समाजीकरण में शिक्षक की भूमिका।

6 सत्रगत् कार्य (Assignments) :–

- किसी एक समस्यात्मक बालक की केस स्टडी कर रिपोर्ट तैयार करना (जिद्दी, स्कूल से भागने वाले, झग़ड़ालू बच्चे, अनियमित उपस्थिति वाले, गृह कार्य न करने वाले बच्चे) ।
- बाल विकास की विभिन्न अवस्थाओं पर आधारित चार्ट बनाना ।
- किसी एक विशेष आवश्यकता वाले बालक की केस स्टडी कर रिपोर्ट बनाना (दृष्टिबाधित, श्रवण बाधित,अस्थिबाधित, मनोरोगी बालक)।
- जिले की किसी एक झुग्गी बस्ती / वंचित समूह की साक्षरता रिपोर्ट बनाना ।

- स्थानीय स्तर पर अनाथालय, झूलाघर, बालवाड़ी, आंगनवाड़ी झुग्गी झोपड़ी में से किसी एक का सर्वेक्षण कर प्रतिवेदन प्रस्तुत करना ।
- शारीरिक विकास में विभिन्न पोषक तत्वों की कमी से होने वाले रोग एवं उनका निवारण लिखो।
- समाजमिति विधि द्वारा किन्हीं दस बच्चों पर मित्रता के प्रभाव की रिपोर्ट तैयार करना ।
- किन्हीं दो एकांगी एवं किन्हीं दो संयुक्त परिवारों की पृष्ठभूमि में बालक के समाजीकरण पर प्रभाव का आलेख तैयार करना ।

7 **पाठ्यक्रम अंतरण की विधियाँ (Mode of Transaction)**:–

- अवधारणा की समझ के लिए कक्षागत चर्चाएं करवाई जाएँगी।
- शोधपत्र / पाठ्यवस्तु का समीक्षात्मक रुप से अध्ययन करवाया जाएगा।
- मुद्दों एवं संदर्भों को सत्रगत कार्य के समय व्यक्तिगत या समूहों में करवाया जाएगा।
- सैद्धांतिक और प्रायोगिक गतिविधियाँ / अभ्यास / खोज / विश्लेषण / अवलोकन करना तत्पश्चात संयुक्त रुप से अर्थ निकालना और आंकड़ों को व्यवस्थित करना।

8 **संदर्भ ग्रंथ(Bibliography)** :–

- बिस्ट, आभारानी (प्रथम संस्करण), बाल मनोविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मंडल
- जीत, योगेन्द्र (प्रथम संस्करण), बाल मनोविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर
- माथुर, एस. एस. (द्वितीय संस्करण), शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर
- पाठक, पी. डी. (चालीसवाँ संस्करण), शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर
- पाण्डेय, रामशकल (तृतीय संस्करण), शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर
- वर्मा, प्रीति (प्रथम संस्करण), बाल मनोविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर
- जॉन होल्ट– बच्चे असफल क्यों होते हैं ? एकलव्य प्रकाशन, भोपाल
- राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल द्वारा कक्षागत प्रक्रियाओं पर विकसित सामग्री
- राज्य शिक्षा केन्द्र की बेवसाइट www.ssa.mp gov.in
- एज्यूकेशन पोर्टलwww.mp.gov.in/education portal.
- बाल विकास– डॉ. ओ.पी.सिंह
- छात्र का विकास एवं शिक्षण– डॉ. आर.ए.शर्मा
- बाल विकास एवं बाल मनोविज्ञान– प्रो. सुरेश भटनागर
- Developmental Psychology- H.E.
- Sasaswati T.S.(Ed) (1999) Culture Socialigation & Human Development, Theory Research & Applications in india, Sage Publications.
- Chapter 9:Physical Development in Middle Childhood.
- Mukunda, K.V.(2009) Chapter is Child Development,79-96.s
- Post-Colonial Indian Childhood, Sharda Balgopal

डी.एल.एड–प्रथम वर्ष
समसामयिक भारतीय समाज में शिक्षा
(प्रश्न पत्र 2)

पूर्णांक– 100
बाह्य अंक– 70
आंतरिक अंक – 30
कालखंड – 140

1. अध्ययन का क्षेत्र (Area of Study):– बुनियादी विषय
2. विषय की रूपरेखा(Design of The Course) :–

- प्रत्येक इकाई को सतही ज्ञान (Field Based) से जोड़ा गया है तथा आपस में भी इनमें जुड़ाव है।
- प्रत्येक इकाई को समझने के लिए विशेष पाठ्यसामग्री सुझाई गई है जिसके आधार पर चर्चाएँ,विचार– विमर्श और गहन अध्ययन एवं आलोचनात्मक विश्लेषण किया जा सकता है।?

3. भूमिका (Rationale) :–

'समसामयिक भारतीय समाज में शिक्षा विषय को पाँच इकाईयों में विभक्त किया गया है। इनके अतिरिक्त सत्रगत कार्य (नियत कार्य–खण्ड अ एवं प्रायोजना कार्य खण्ड ब) को सम्मिलित किया गया है। प्रस्तुत प्रश्न पत्र में भारतीय संविधान में स्वतंत्रता पूर्व भारत एवं आधुनिक भारत में शिक्षा की स्थितियों को रखा गया है। भारतीय संविधान में समानता एवं न्याय हेतु विशेष पक्ष निहित हैं, इन्हें भारतीय समाज की विविधताओं के आधार पर दिया गया है। भारत का लोकतंत्र ही उसे विश्व की शक्ति बनाता है। शिक्षा क्षेत्र में यह लोकतंत्र उसकी शैक्षिक संरचना के साथ वैश्विक स्तर पर भी पहचान बनाने में मदद करता है। प्रारंभिक शिक्षा की विभिन्न शिक्षा नीतियां, अधिनियमों एव नियमों से शिक्षक को परिचित कराने का प्रयास किया गया है।

शिक्षा व्यवस्था एवं देश की अर्थव्यवस्था एक–दूसरे के पूरक हैं। इस देश में विभिन्न जाति, धर्म, सम्प्रदाय और वर्ग के लोग निवास करते हैं, इसे जानना भी शिक्षक के लिये आवश्यक है। भारत एक कृषि आधारित अर्थव्यवस्था का स्वरूप है, जिसका प्रभाव बच्चों के सीखने–सिखाने एवं शालेय व्यवस्था पर देखना भी आज की आवश्यकता है। भूमण्डलीकरण, निजीकरण और उदारीकरण के कारण शिक्षा के क्षेत्र में कई मुद्दे और चुनौतियाँ देखने को मिलती है। एक छात्रध्यापक के लिये यह आवश्यक है कि वह उदीयमान भारत के भविष्य को संवारने हेतु नवीन कौशलों/विधियाँ विकसित कर सकें।

सत्रगत कार्य (नियत कार्य–खण्ड अ एवं प्रायोजना कार्य खण्ड ब) के रूप में है, इसमें छात्राध्यापक वर्तमान में विद्यालयों, नवीन नीतियों एवं कार्यक्रमों को स्वयं समझ कर इस पर चिंतन एवं मनन कर वैचारिक पक्ष को मजबूत कर सकेंगे।

4. विशिष्ट उद्देश्य (Specific Objectives) :–

- भारतीय संविधान में निहित अवधारणाओं, प्रक्रियाओं एवं आदर्शों का व्यवहारगत स्थितियों (वर्तमान परिप्रेक्ष्य) में आलोचनात्मक विश्लेषण कर अध्ययन करना।
- भारतीय समाज की विभिन्नताओं, विविधताओं को समझना तथा उनके महत्व को समझते हुए उसे शिक्षण संसाधन के रुप में देखना।
- विकासशील भारतीय समाज के परिप्रेक्ष्य में आर्थिक, सामाजिक व राजनैतिक धारणाएँ, मुद्दे एवं चुनौतियों को समझ कर अपने लिये कुछ शैक्षणिक उद्देश्यों को निर्धारित करना।
- सामाजिक परिवर्तन एवं स्तरीकरण से संबंधित विभिन्न अवधारणाओं व प्रक्रियाओं (जैसे विषमता, बहिष्कार, भेदभाव, आरक्षण आदि) को समझना।

5. विषय का महत्त्व (Running Thread of the Course) :–

यह विषय प्रमुख रुप से भारतीय प्रारंभिक शिक्षा के ऐतिहासिक, राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संदर्भों तथा उसकी विशेषताओं, विविधताओं को समझने में मदद करेगा। हमारे विद्यालयों में विविध पृष्ठभूमि से बच्चे आते हैं और वे अपने परिवार, समाज और परिवेश से जुड़े अनुभव व ज्ञान को भी साथ लेकर आते हैं। हमारी शिक्षा व्यवस्था के सामने यह चुनौती बन जाती है कि वह इस अनुपम मानवीय संपदा का उपयोग एवं मार्गदर्शन किस प्रकार करती है? और विभिन्न समुदाय के बच्चों को कक्षा में सम्मानजनक स्थान किस हद तक दे पाती है? भारत अनेक जाति, जनजाति, धर्म, भाषा और संस्कृति के लोगों का निवास स्थान है। हमारे समाज में केवल विविधता ही नहीं, बल्कि अनेक क्षेत्रों में असमानता, शोषण और भेदभाव व्याप्त है। क्या हमारी शिक्षा व्यवस्था इसे बदलने में मददगार हो सकती है?

हमारे शिक्षकों को सामाजिक बदलाव में अपनी भूमिका अदा करनी है तो उन्हें वर्तमान में व्याप्त सामाजिक, आर्थिक, संस्कृति को समझना ही होगा। हमारा संविधान, जो राष्ट्र की दिशा निर्धारित करता है, उसमें निहित आदर्श हमें सामाजिक बदलाव के लिए प्रेरित करते हैं और हमारे शासन तंत्र को इसके लिए निर्देशित करते है, एक शिक्षक के लिए इन आदर्शों व उद्देश्यों को समझना बहुत आवश्यक होगा।

6. इकाईवार अंक विभाजन (Units Wise Distribution of the Marks) :–

क्र.	इकाई	विषय	कालखंड	अंक
1	1	प्रारंभिक शिक्षा और भारतीय संविधान	30	15
2	2	भारतीय लोकतंत्र में शिक्षा	30	15
3	3	भारतीय अर्थव्यवस्था	30	15
4	4	शैक्षिक विकास एवं चुनौतियाँ	30	15
5.	5.	सामाजिक परिवर्तन एवं स्तरीकरण	20	10
		सत्रगत कार्य खंड (अ+ब)	–	30
कुल अंक			**140**	**100**

7. **इकाई का अध्ययन (Units):–**

इकाई 1प्रारंभिक शिक्षा और भारतीय संविधान (Elementary Education andConstitution ofIndia)

- भारत में स्वतंत्रता पूर्व एवं पश्चात प्रारंभिक शिक्षा ।
- भारतीय संविधान की प्रस्तावना, नीति निर्देशक तत्व एवं प्रारंभिक शिक्षा के संवैधानिक प्रावधान।
- भारतीय समाज में विविधता– रंग रुप, संस्कृति, भाषा, जाति, जेण्डर एवं विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए शिक्षा की नीतियाँ एवं संवैधानिक प्रावधान।
- भारतीय संविधान में समता एवं न्याय– विभिन्न शालेय, तंत्र निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009, मध्यप्रदेश नियम 2011।

इकाई 2 भारतीय लोकतंत्र में शिक्षा (Education in Indian Democracy)

- लोकतंत्र के लिए शिक्षा,नागरिकों के मौलिक अधिकार एवं कर्त्तव्य।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों में प्रांरभिक शिक्षा हेतु अनुशंसाएँ उनका क्रियान्वयन एवं प्रभाव–राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968 (National Policy Statement of Education 1968)ए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986, प्रोग्राम ऑफ एक्शन 1992 (Programme of Action, POA 1992), राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रुपरेखा–2005,शिक्षा में विकेंद्रीकरण–73 वां एवं 74 वां सवंधिान संशोधन, म.प्र. पंचायत राज अधिनियम 1993, जनशिक्षा अधिनियम 2002, म.प्र. पंचायत एवं ग्राम–स्वराज अधिनियम 2001 के प्रमुख प्रावधान।
- केन्द्रीय एवं राज्य स्तरीय शैक्षिक संरचना – उद्देश्य, कार्य प्रणाली एवं उपयोगिता।

इकाई 3 भारतीय अर्थ व्यवस्था और शिक्षा (Indian Economy and Education)

- सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक वातावरण एवं शैक्षिक विकास की धारणाएँ और प्रभाव ।
- भूमंडलीकरण, उदारीकरण एवं निजीकरण का शिक्षा पर प्रभाव– व्यवस्थाएँ, मुद्दे एवं चुनौतियाँ।
- कृषि आधारित अर्थ व्यवस्था एवं शिक्षा –(निरक्षरता, बाल मजदूरी, कृषि मजदूर, भूमिहीन कृषक, भू–स्वामी कृषक, कृषि आधारित उत्पाद, बाजार एवं ऋण व्यवस्था।)
- आर्थिक विकास में शिक्षा की भूमिका।

इकाई 4 शैक्षिक विकास एवं चुनौतियाँ (Educational Development and Challenges)

- प्रारंभिक शिक्षा में गुणवत्ता की चुनौतियाँ : नामांकन, ठहराव और शैक्षिक उपलब्धि ।
- शालाओं में शिक्षण की चुनौतियाँ : बहुकक्षा एवं बहुस्तरीय (MGML) शिक्षण।
- म.प्र. में विभिन्न शैक्षिक कार्यक्रम ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड (OBB), जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (DPEP), सर्व शिक्षा अभियान (SSA), प्रारंभिक स्तर की बालिकाओं के लिए शिक्षा का राष्ट्रीय कार्यक्रम (NPEGEI), कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय (KGBV), गतिविधि आधारित शिक्षण (ABL), सक्रिय अधिगम प्रविधि (ALM),– अवधारणा, उद्देश्य, विशेषताएँ एवं कार्यक्रम।
- सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (CCE) की आवश्यकता, अवधारणा, विशेषताएँ एवं क्रियान्वयन।
- राष्ट्रीय एकता का अर्थ, प्रभावित करने वाले कारक, शिक्षक एवं शिक्षण संस्थाओं की भूमिका।
- अंतर्राष्ट्रीय सद्भाव हेतु यूनिसेफ (UNICEF), यूनेस्को (UNESCO) , विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) की भूमिका ।

इकाई–5 सामाजिक परिवर्तन एवं स्तरीकरण (Social Change and Social Stratification)

- सामाजिक परिवर्तन– अर्थ प्रकार एवं विशेषताएँ।
- सामाजिक स्तरीकरण– अर्थ और आधार ।
- सामाजिक स्तरीकरण संबंधी अवधारणाएँ– बहिष्कार, विषमताएँ, भेदभाव ,शोषण और आरक्षण आदि ।

8. सत्रगत कार्य :–

समसामयिक भारतीय समाज में शैक्षिक चुनौतियों के संदर्भ में नियत कार्य एवं प्रायोजना कार्य– कुल तीन कार्य किए जाने हैं। प्रत्येक खंड में से एक कार्य अनिवार्य है।

खंड 'अ' नियत कार्य–(Assignments)

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में प्रारंभिक शिक्षा हेतु की अनुशंसाओं की सूची बनाइए।
- प्रारंभिक शिक्षा के क्षेत्र राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के पूर्व और पश्चात हुए शालेय तंत्र में बदलाव का तुलनात्मक स्थिति का अध्ययन कीजिए।
- सर्व शिक्षा अभियान अंतर्गत संचालित विभिन्न योजनाओं की सूची बनाइए। किसी एक योजना के मूलभूत लक्ष्य, उद्देश्य एवं क्रियान्वयन की प्रक्रिया लिखिए।
- बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 में कमजोर वर्ग एवं वंचित समूह हेतु शिक्षा के प्रावधानों एवं शैक्षिक विकास पर इनके प्रभाव लिखिए।
- शिक्षा का अधिकार लागू होने के पश्चात आपके क्षेत्र में हुए सामाजिक बदलाव पर आलेख तैयार कीजिए।
- अपने जिले की विभागीय संरचना को स्पष्ट करते हुए फ्लोचार्ट बनाइए।
- आर्थिक विकास में प्रारंभिक शिक्षा की भूमिका की तर्क युक्त विवेचना कीजिए।
- अपनी शाला में संवैधानिक प्रावधान (RTE 2009) की धारा 19 के तहत मानक एवं मापदंडों के अनुरूप शालेय संसाधनों की समीक्षा कीजिए।
- अपने क्षेत्र में अल्पसंख्कों/सुविधावंचित बच्चों हेतु संचालित विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं की सूची बनाते हुए किसी एक संस्था के कार्य, प्रक्रिया एवं उपलब्धि पर आलेख तैयार कीजिए।
- अपने ग्राम के VER में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की पहचान, प्रवेश एवं उन्हें प्राप्त सुविधाओं की स्थिति पर आलेख तैयार कीजिए।
- किन्ही 5 प्राथमिक शालाओं में राष्ट्रीय एकता विकास के लिए बच्चों हेतु विभिन्न गतिविधियों की सूची बनाइए एवं किसी एक गतिविधि के आयोजन की सम्पूर्ण प्रक्रिया लिखिए।
- ABL अथवा ALM शिक्षण पद्धतियों के क्रियान्वयन में आने वाली व्यावहारिक कठिनाइयों की सूची बनाइए एवं इनके निराकरण के सुझाव लिखिए।
- शाला में उपलब्ध बाल पुस्तकालय/विज्ञान/गणित किट आदि के माध्यम से बच्चों के बेहतर सीखने– सिखाने की योजना तैयार कीजिए।
- अपनी शाला हेतु किसी एक विषय में बहुकक्षा शिक्षण/बहुस्तरीय शिक्षण हेतु कार्य योजना बनाइए।

खंड 'ब प्रोजेक्ट कार्य–(Project Work)

- अपने ग्राम / वार्ड के 20 परिवारों का सर्वेक्षण कर ग्राम शिक्षा पंजी तैयार कीजिए।
- अपने ग्राम / वार्ड के 6 से 14 आयु वर्ग के अनुसूचित जाति, जनजाति एवं अल्पसंख्यक छात्रों की जनसंख्या, वर्ग व शिक्षा की जानकारी एकत्र कीजिए।
- अपने ग्राम / वार्ड के सामाजिक, आर्थिक रुप से पिछडे 10 परिवारों के 6 से 14 आयु वर्ग के बच्चों की शैक्षिक कठिनाइयों की सूची बनाइए एवं इनकी शैक्षिक उपलब्धि बढ़ाने के लिए कार्य योजना तैयार कीजिए।
- आपके क्षेत्र / जिले में विशेष समूह के बच्चों के लिए संचालित विभिन्न योजनाओं में से किसी एक योजना के प्रभाव का अध्ययन कीजिए (किन्हीं 5 बच्चों / पालकों के साक्षात्कार के माध्यम से)।
- ABL पर आधारित दो शिक्षण सहायक सामग्री (TLM) का निर्माण कीजिए।
- ALM पर आधारित दो शिक्षण सहायक सामग्री (TLM) का निर्माण कीजिए।
- विद्यालय के बच्चों में राष्ट्रीय एकता विकसित करने के लिए विभिन्न गतिविधियों की सूची बनाइए एवं इसका त्रैमासिक केलेण्डर तैयार कीजिए।
- शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के संदर्भ में कमजोर एवं वंचित समूह बच्चों के प्रवेश प्रक्रिया का किन्हींदो विद्यालयों में जाकर अध्ययन कीजिए। (किन्हीं 5–5 बच्चे एवं उनके पालक के साक्षात्कार के माध्यम से)।
- आपके क्षेत्र के प्रथम पीढ़ी के शिक्षा प्राप्त करने वाले परिवार एवं शिक्षित परिवारों में सामाजिक अंधविश्वास / कुरीतियों की स्थितियों की तुलना कीजिए। (किन्हीं 5 परिवारों के संदर्भ में)
- अपने क्षेत्र के पलायन करने वाले परिवारों के शाला जाने योग्य बच्चों की जानकारी एकत्रित कीजिए एवं उनके शैक्षिक विकास हेतु किए गए प्रयासों की जानकारी एकत्र कीजिए।

9 पाठ्यक्रम की अंतरण की विधियाँ (Mode of Transaction):–

- छात्राध्यापकों को चर्चाओं, डाक्यूमेंटरी फिल्म तथा क्षेत्र आधारित प्रायोजनाओं से जोड़ा जाएगा।
- विभिन्न प्रकार के लेख, नीतिगत अभिलेख पाठ्यवस्तु डाक्यूमेंटरी, फिल्म का गहनता एवं समीक्षात्मक रुप से अध्ययन करवाया जाएगा।
- छात्राध्यापकों के समूह में क्षेत्र आधारित प्रायोजनाओं को करना, विश्लेषण करना और निष्कर्ष तक पहुंचना।
- अपने क्षेत्र की पलायन करने वाली (Migrated) जातियों की जानकारी (क्षेत्र, वर्ग एवं शैक्षिक स्थिति के आधार पर) एकत्रित कर उनके बच्चों की शैक्षिक स्थितियों को जानना।

10. संदर्भ ग्रंथों की सूची (Bibliography):–

- राज्य शिक्षा केन्द्र द्वारा सर्व शिक्षा अभियान अतंर्गत प्रकाशित निर्देश एवं पाठ्य सामग्री
- मानव संसाधन विकास मंत्रालय (प्रारंभिक शिक्षा एवं साक्षरता विभाग) भारत सरकार द्वारा प्रकाशित सामग्री
- जनशिक्षा अधिनियम 2002 और जनशिक्षा नियम 2003
- बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 एवं मध्य प्रदेश नियम 2011

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968 एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 का दस्तावेज
- प्राथमिक शिक्षक एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित
- एन.सी.टी.ई./एन.सी.ई.आर.टी. एवं एन.यू.ई.पी.ए. नई दिल्ली द्वारा प्रारंभिक शिक्षा संबंधी प्रकाशन
- शैक्षिक पलाश – मध्य प्रदेश शिक्षक प्रशिक्षण मण्डल द्वारा प्रकाशित
- शिक्षा के सिद्धांत – पाठक एवं त्यागी
- शिक्षा के दार्शनिक एवं समाशास्त्रीय आधार – डॉ सरोज सक्सेना
- शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत – एन.आर.स्वरूप सक्सेना
- शिक्षा की दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि – रामशकल पाण्डेय
- शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत – रमन बिहारी लाल
- सामाजिक परिवर्तन एवं शिक्षा – उमराव सिंह चौधरी
- शिक्षा के दार्शनिक, ऐतिहासिक और समाजशास्त्रीय आधार – एस.पी.चौबे
- शिक्षा का समाज शास्त्र – चन्द्रा एवं वर्मा
- शिक्षा दर्शन – आर.एन. शर्मा
- फाउण्डेशन ऑफ एज्यूकेशन – एस. भट्टाचार्य
- विकासोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षा तथा शिक्षक की भूमिका – मंजरी सिन्हा व डॉ आई0एम0सिन्धु आगरा पब्लिकेशन आगरा –2
- विकासोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षा तथा शिक्षक की भूमिका – श्रीमती निर्मला गुप्ता व श्रीमती अमृता गुप्ता साहित्य प्रकाश आगरा
- विकासोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षा – राजस्थान हिन्दी अकादमी द्वारा प्रकाशित
- इन्टरनेट से शैक्षणिक क्षेत्र की विभिन्न संस्थाओं की वेबसाइट

डी.एल.एड. प्रथम वर्ष
शिक्षा, समाज, पाठ्यचर्या और शिक्षार्थी
(प्रश्न पत्र 3)

पूर्णांक–100
बाह्य अंक– 70
आंतरिकअंक–30
कालखण्ड– 140

1. **अध्ययन का क्षेत्र (Area of Study):–बुनियादी विषय**

2. **विषय की रुपरेखा (Design of Course) :–**

- कम से कम एक इकाई के अध्ययन के लिए क्षेत्र भ्रमण रखा गया है।
- अध्ययन की प्रत्येक इकाई का शाला के अंदर एवं बाहर के शैक्षिक अभ्यास से संबंध जोड़ा गया है।
- विषय वस्तु की समझ हेतु विशिष्ट स्वाध्याय और विचार–विमर्श को महत्त्व दिया गया है।

3. भूमिका (Rationale and Aim) :–

शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने हेतु सभी शिक्षक एवं छात्राध्यापकों को शिक्षा के आधारभूत सिद्धांतों एवं अवधारणाओं की अच्छी समझ होना आवश्यक है। प्रस्तुत विषय में शिक्षा के दार्शनिक, सामाजिक एवं ऐतिहासिक पहलुओं से संबंधित विषय वस्तु को सम्मिलित किया गया है, ताकि भारत में शिक्षा से जुड़े अहम प्रश्नों एवं मुद्दों पर खोजबीन और चर्चा को प्रोत्साहित किया जा सकें।

4. विशिष्ट उद्देश्य (Specific Objectives) :–

- शिक्षा का अर्थ, उद्देश्य एवं लक्ष्य के बारे में समझ विकसित करना।
- शिक्षा के दार्शनिक, समाज शास्त्रीय एवं ऐतिहासिक पहलुओं की समझ विकसित करना ।
- ज्ञान,अधिगम, शिक्षा और शिक्षकों के बारे में अपनी मान्यताओं को पहचानना एवं आलोचनात्मक चिंतन करना।
- छात्राध्यापकों को विभिन्न शैक्षिक विचारों, परिप्रेक्ष्यों एवं कार्यान्वयन के तरीकों से अवगत कराना।

  छात्राध्यापकों को अपने शैक्षिक विचार,अनुभव आदि को व्यक्त करने में समर्थ बनाना।

5. विषय का महत्त्व (Running Thread of the Course) :–

इस विषय के अध्ययन से छात्राध्यापक शिक्षा के सामाजिक, दार्शनिक और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को समझ सकेंगे। वे मानव की प्रकृति, सीखना और ज्ञान के बारे में बुनियादी मान्यताओं और विभिन्न दृष्टिकोण से अवगत हो सकेगें। शिक्षा, ज्ञान और शक्ति संबंधों के बारे में भी समझ बना सकेगें। सभी इकाईयों के अध्ययन से भारतीय शिक्षा के महत्त्वपूर्ण लक्ष्य की समझ बना सकेंगे।

6. इकाई वार अंकों का विभाजन (Unitwise Division of Marks) :–

क्रं.	इकाई का नाम	अंक	कालखण्ड
1.	शिक्षा की दार्शनिक समझ (Philosophical Understanding of Education)	15	30
2.	शिक्षा, समाज और नीतियाँ (Education, Society and Policies)	15	30
3.	शिक्षा का लोकव्यापी करण (Universalization of Education)	15	20
4.	अधिगम, अधिगमकर्ता एवं शिक्षण (Learning, Learner and Teaching)	15	30
5.	ज्ञान और पाठ्यचर्या (Knowledge and Curriculum)	10	30
	सत्रगत कार्य	**30**	–
	कुल अंक	**100**	**140**

7. इकाई का अध्ययन (Units) :–

इकाई– 1 शिक्षा की दार्शनिक समझ (Philosophical Understanding of Education)

- मानव समाज में शिक्षा की प्रकृति एवं आवश्यकताओं का अध्ययन।
- विद्यालयीन शिक्षा एवं शिक्षा में संबंध तथा मानव समाज की विभिन्न शैक्षिक प्रक्रियाओं की खोज करना।
- शिक्षा एवं विद्यालयीन शिक्षा विषयक विभिन्न पाश्चात्य, भारतीय विचारकों एवं शिक्षा शास्त्रियों के दृष्टि कोण का अध्ययन–रूसो, मांटेसरी, जॉन ड्यूई, गाँधी, टेगौर, गिजुभाई एवं विवेकानन्द।
- मानव प्रकृति, समाज, अधिगम एवं शिक्षा के उद्देश्य विषयक बुनियादी मान्यताओं को समझना।

इकाई– 2 शिक्षा, समाज और नीतियाँ (Education, Society and Policies) :–

- स्वतंत्रता पूर्व भारत में प्रारंभिक शिक्षा की प्रमुख विशेषताएं।
- भारत की समसामयिक शिक्षा की स्थिति– स्वतंत्रता के बाद शिक्षा में आए बदलाव।
- धर्म, जाति, वर्ग और लिंग आधारित चुनौतियों के समाधान में शिक्षा की भूमिका।
- शिक्षा का राज नैतिक स्वरूप–प्रजातांत्रिक, समाज वादी एवं धर्म निरपेक्ष।
- शिक्षक और समाज–शिक्षक की समाज में स्थिति एवं शिक्षक की भूमिका का समालोचनात्मक मूल्यांकन।

इकाई– 3 शिक्षा का लोकव्यापीकरण (Universlisation of Education) :–

- प्रारंभिक शिक्षा के लोकव्यापी करण की अवधारणा
- सबके लिये शिक्षा–उद्देश्य, नीतियाँ, क्रियान्वयन एवं समस्याएँ
- जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (DPEP), सर्व शिक्षा अभियान (SSA)–नीतियाँ, क्रियान्वयन एवं प्रभाव
- समान स्कूल प्रणाली (Common schooling system), पड़ोसी स्कूल

इकाई– 4 अधिगम, अधिगमकर्ता एवं शिक्षण (Learning, Learner and Teaching)

- अधिगम–अवधारणा एवं प्रकृति
- अधिगम, ज्ञान एवं कौशल–सीखने एवं सिखाने के विभिन्नतरी के
- शिक्षण का अर्थ,सीखने की प्रक्रिया एवं शिक्षार्थी से इस का संबंध
- समाजीकरण और अधिगम–शिक्षार्थी की पहचान का निर्धारित करने वाले प्रभावों एवं कारणों की समझ।
- शिक्षार्थी का संदर्भ–विभिन्न सामाजिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक परिवेश में स्थित शिक्षार्थी
- बचपन की अवधारणा–बचपन की सार्वभौमिक अवधारणा का समालोचनात्मक परीक्षण

इकाई– 5 ज्ञान और पाठ्यचर्या (Knowledge and Curriculum)

- बालक के ज्ञान का सृजन–गतिविधि एवं अनुभव के माध्यम से ज्ञानार्जन
- ज्ञान का स्वरूप और बालक द्वारा ज्ञान का सृजन
- ज्ञान के स्त्रोत, ज्ञान के प्रकार, और उनकी वैधता
- ज्ञान और शक्ति संबंध –पाठ्यचर्या एवं पाठयपुस्त कों में विभिन्न सामाजिक समूहों के ज्ञान को समावेशित कर प्रतिनिधित्व प्रदान करना।
- पाठ्यचर्या चयन एवं निर्माण हेतु मापदंड एवं प्रक्रियाएँ।

8. सत्रगत कार्य (Assignements) :–

छात्राध्यापकों को शिक्षा सत्र में, सत्रगत कार्य के अंतर्गत एक प्रोजेक्ट कार्य अनिवार्यतः करना होगा। यह प्रोजेक्ट छात्राध्यापकों के अवलोकन, कक्षागत विचार–विमर्श, सहभागिता एवं क्षेत्र परीक्षण को प्रदर्शित करने वाला होगा।

सुझावात्मक क्षेत्र :–

- किसी एक भारतीय शिक्षा शास्त्री एवं एक पाश्चात्य शिक्षा शास्त्री के शिक्षा संबंधी विचारों का समीक्षात्मक अध्ययन कीजिए।
- स्वतंत्रता पूर्व भारत में शालेय शिक्षा की स्थिति की विवेचना कीजिए।
- स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत वर्ष में शिक्षा क्षेत्र में आए बदलावों का विवरण दीजिए।
- अपने जिले मे ंसर्व शिक्षा अभियान के तहत संचालित किन्हीं दो कार्य क्रमों के प्रभावों पर एक प्रति वेदन तैयार कीजिए।
- किसी एक बसाहट का सर्वेक्षण कर विभिन्न सामाजिक समूहों की साक्षरता एवं शिक्षा की स्थिति एवं वर्तमान चुनौतियों पर आलेख तैयार कीजिए।

9. पाठ्यक्रम अंतरण की विधियाँ (Mode of Transaction) :–

- छात्राध्यापकों को बातचीत और चर्चाओं में ज्यादा से ज्यादा शामिल किया जाएगा, जिससे कि परंपरागत व्याख्यान विधि को कम से कम किया जा सकें।
- अध्यापन के दौरान छात्राध्यापको ंको से मिनार, चर्चा, फिल्म एप्रेजल, समूह कार्य, क्षेत्र कार्य, प्रायोजना (Project), विभिन्न प्रकार के लेखो ंका अध्ययन और नीतिगत दस्तावेजों का अध्ययन कराया जाएगा।
- सामाजिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक संदर्भो को ध्यान में रखते हुए इन इकाईयों का अध्ययन किया जाना हैं।
- अध्यापन के दौरान सभी इकाईयों का अंर्तसबंध उभारा जाएगा।

10. संदर्भ ग्रंथों की सूची (Bibliography) :–

- गिजु भाई बधे का (2001) –बाल शिक्षण और शिक्षक
- एस. शुक्ला एवं कृष्ण कुमार–शिक्षा का समाज शास्त्रीय संदर्भ–ग्रंथ शिल्पी
- जॉन ड्यूई (2009) –स्कूल और समाज–आकार प्रकाशन,चंडीगढ़
- जे. कृष्ण मूर्ति (2006) –शिक्षा पर कृष्ण मूर्ति के विचार– कृष्ण मूर्ति फाउंडेशन, वाराणसी
- रवींद्रनाथ ठाकुर (2004) –रवीन्द्रनाथ का शिक्षा दर्शन–चेप्टर.–1 एवं 7 –ग्रंथ शिल्पी
- कृष्ण कुमार (2007) –शिक्षा और संस्कृति
- पाउलेफ्रेरे–उत्पीड़ितों का शिक्षा शास्त्र, ग्रंथ शिल्पी
- रोहित धनकर–शिक्षा और समाज, आधार प्रकाशन,चंडीगढ़
- एन. सी. ई. आर. टी–राष्ट्रीय पाठ्यचर्या के आधार पत्र : 1. शिक्षा के लक्ष्य, 2. पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें
- छत्तीसगढ़ डी. एड. पाठ्यक्रम प्रथम वर्ष–ज्ञान, शिक्षा क्रम एवं शिक्षा शास्त्र चेप्टर–2,5 एवं 6

डी.एल.एड प्रथम वर्ष
स्वयं की पहचान
(प्रश्न पत्र 4)

पूर्णांक – 50
बाह्य अंक – 35
आंतरिक अंक – 15
कालखंड–70

1 अध्ययन का क्षेत्र (Area of Study) :–बुनियादी विषय

2 विषय की रूपरेखा (Design of Course) :–

इस विषय के शिक्षण के लिए कार्यशाला पद्धति अपनायी जाएगी। इस विषय के अध्ययन अध्यापन, वर्ष में लगभग 40–50 घण्टे की कार्यशाला करके किया जा सकता है। कुछ कार्यशालाएँ छोटी–छोटी प्रायोजना (Project) के लिए कर सकते हैं तो कुछ घटकों को स्कूल इंटर्नशिप में करवाया जा सकता हैं। छात्राध्यापकों द्वारा इसका प्रस्तुतीकरण भी करवाया जाएगा। कार्यशाला के समय विभिन्न क्षेत्रों के विशषज्ञों को आमंत्रित किया जा सकता है, ये विशेषज्ञ व्यक्तित्व विकास के क्षेत्रों से हो सकते है।एक सदस्य मनोविज्ञान विषय से जुड़ा हुआ भी होना चाहिए। इस विषय के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए कई तरह की नवाचारी पद्धतियाँ, तकनीक, रणनीति का उपयोग करने की आवश्यकता होगी। इन कार्यशालाओं में छात्राध्यापकों के मध्य अंतर्क्रिया, विभिन्न मुद्दों पर चर्चा, एकल या समूह रूप में प्रस्तुतीकरण। वादविवाद, रोलप्ले, केस स्टडी एवं और भी अनेक प्रकार की उपयुक्त गतिविधियों को संस्थान के विशेषज्ञों द्वारा शामिल किया जा सकता है।

3 विषयवस्तु का औचित्य (Rationale) :–

इस पाठ्यक्रम का लक्ष्य छात्राध्यापक को स्वयं को एक बेहतर इंसान और शिक्षक के रूप में विकसित करने के कौशल को जानने एवं समझने के अवसर प्राप्त कराना है।

- विद्यार्थी शिक्षक आत्मावलोकन द्वारा स्वयं की क्षमताओं एवं कमियों को समझने में समर्थ हो सकेगें।
- छात्राध्यापकों को अपने जीवन उद्देश्यों की खोज के अवसर प्राप्त होगें।
- छात्राध्यापकों को एकाग्रता,ध्यान एवं अभ्यास के अवसर उपलब्ध हो सकेंगे।
- सामाजिक परिस्थितियों के प्रति संवेदनशीलता में अभिवृद्धि।

4 विशिष्ट उद्देश्य (Specific Objectives) :–

- छात्राध्यापकों में आत्म अवलोकन क्षमता का विकास करना।
- स्वयं की क्षमताओं को जानना एवं स्व–प्रेरित शिक्षार्थी का दृष्टिकोण विकसित करना।
- समग्र रूप से सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास करना।
- स्वयं की छवि को एक व्यक्ति एवं पेशेवर शिक्षक के रूप में विकसित करना।
- स्वयं की शिक्षण प्रक्रिया में कुछ बदलाव करने की क्षमता विकसित करना।

सुविधादाता के रूप में स्वयं का विकास करना।

5 इकाईवार अंकों का विभाजन (Unitwise Division of Marks) :–

क्र.	इकाई	विषय	कालखंड	अंक
1	I	स्वयं की क्षमता की खोज	20	10
2	II	जीवन के उद्दश्यों की खोज	20	10
3	III	सुविधादाता के रूप में स्वयं का विकास	30	15
		सत्रगत कार्य	–	15
		कुल	**70**	**50**

6 इकाई का अध्ययन (Units):–

- इकाई 1 स्वयं की क्षमता की खोज
- आत्मावलोकन अभ्यास द्वारा स्वयं की क्षमताओं एवं कमजोरियों / सीमाओं को समझना।
- स्वयं के द्वारा किए गए कार्यों की जिम्मेदारी लेना।
- आत्म–सम्मान बोध तथा भावनात्मक एवं संवेगात्मक एकीकरण द्वारा सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास करना।
- स्वयं के विकास हेतु स्वतंत्रता और अनुशासन प्रतियोगिता–सहयोग, भय को जानना और समझना।
- समालोचनात्मक चिंतन हेतु कौशलों का विकास।
- आत्मिक शांति, एकाग्रता और ध्यान का अभ्यास।
- अर्न्तद्वंदों का समाधान।
- आत्म समीक्षात्मक दैनंदिनी लेखन।

इकाई 2–जीवन के उद्देश्यों की खोज

- व्यक्ति की शिक्षक के रूप में दूरदृष्टि।
- जीवन की आकांक्षाएँ एवं उद्देश्य।
- जीवन को विवेकपूर्ण दिशा प्रदान करना, जीवन की दिशा को प्रभावित करने वाले कारकों को समझना।
- समाज व विश्व को समझने में स्वयं के विचार, संवेगों पर मनन / अंतर्चिंतन करना।
- पूर्वाग्रह व रूढ़िबद्ध धारणा–(लिंग, जाति, वर्ग, नस्ल, क्षेत्र, शारीरिक अशक्तता आदि) की समालोचना करना और स्वयं पर पड़ने वाले प्रभावों के प्रति जागरूकता।
- शारीरिक, मानसिक व संवेगात्मक शोषण के विरूद्ध विभिन्न पहलुओं पर विचार कर उनको रोकने हेतु अपनी क्षमताओं को विकसित करना।
- व्यक्तित्व के विभिन्न आयाम तथा उन तरीकों को जानना जो स्वयं की पहचान, मूल्य एवं जीवन की दिशा को प्रभावित करते हैं।

इकाई 3–सुविधादाता (Facilitator) के रूप में स्वयं का विकास :आत्म समीक्षात्मक चिंतन का विकास

- शिक्षण करते समय स्वयं की अभिवृत्तियों और संप्रेषण के तरीके के प्रति सचेत रहना।
- विद्यार्थियों की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और व्यक्तिगत भिन्नताओं को स्वीकार कर उनसे संबंध स्थापित करना।
- अध्यापन के दौरान विद्यार्थियों में सामाजिक कौशल और व्यक्तिगत विकास के व्यावहारिक तरीकों को जानना एवं समझना (Explore) करनाद्ध।

7 पाठ्यक्रम अंतरण की विधियाँ (Mode of Transaction) :–

इस विषय की कार्यशाला के लिए कोई निर्धारित मानक सामग्री नहीं है। ऐसी अपेक्षा है कि इस क्षेत्र के व्यावसायिक विशेषज्ञों की सहायता से छात्राध्यापकों के लिए विशेष प्रकार की गतिविधियों की रूपरेखा तैयार करवाई जाए। इसमें छात्र समसामयिक विषयों को लेकर समूह में या व्यक्तिगत रूप से सुविधादाता के साथ चर्चा करके अपनी समझ बनाएगें। इस विषय के माध्यम से छात्रध्यापकों को यह सुअवसर दिया जाएगा कि वे बाह्य जगत को समझ सकें और अपनी संवेदनाओं के आधार पर उससे जुड़ सकें।यह अपेक्षा की जाती है कि शिक्षार्थियों को स्वयं के जीवन और उनसे जुड़े मुद्दों के भीतर झांकने और व्यक्त करने का मौका दिया जाएगा। छात्राध्यापकों को प्रोत्साहित किया जाए कि वे नवीन एवं समसामयिक मुद्दों पर नवीनता एवं गंभीरता से विचार कर सकें और अपनी कल्पनाओं, सृजनात्मकता के जरिए स्वयं के लिए उसका उपयोग कर सकें। स्रोत सामग्री के रूप में दैनिक समाचार पत्र, वेबसाइट पर प्रस्तुत आलेख, समसामयिक संदर्भों पर आधारित फिल्में, डाक्यूमेंट्री और अन्य कई दृश्य–श्रव्य सामग्री हो सकती है।टी.वी.चैनलों पर आने वाली चर्चाएं,वार्ताएं भी उपयोग में लाई जा सकती हैं।

8 सत्रगत कार्य (Assignements) :–

इकाईयों में दिए गए सभी बिंदुओं पर कार्यशाला, समूह चर्चा, रोल प्ले, केस स्टडी, वाद–विवाद, प्रस्तुतीकरण आदि गतिविधियाँ करवायी जा सकती हैं।

- बच्चों की आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशीलता को स्वयं के बचपन के अनुभव के आधार पर स्पष्ट करना–अनुभव लेखन।
- स्वयं की मजबूतियों (Strengths), कमजोरियों (Weaknesses), उपलब्ध अवसरों (Opportunities) एवं मुश्किलों/जोखिमों (Threats) का विश्लेषण करना तथा कमजोरियों को दूर करने की योजना बनाना। (SWOT-Analysis)
- समूह चर्चा द्वारा–दृष्टिकोणों की विविधता (सामाजिक, सास्कृतिक, आर्थिक, भौगोलिक परिपेक्ष्य में) को समझना और उनका सम्मान करना–चर्चा और परिणामों पर प्रतिवेदन करना।
- असेसमेंट ऑफ सेल्फ कानसेप्ट

9 संदर्भ ग्रंथों की सूची (Bibliography) :–

इस पाठ्यक्रम का अध्ययन अध्यापन कार्यशाला मोड, समूह चर्चा एवं विशेषज्ञों (मनोवैज्ञानिक, व्यक्तित्व विकास) द्वारा होगा। यह पाठ्यक्रम स्वयं करके सीखने के उद्देश्य से निर्मित है। इस पाठ्यक्रम के लिए निम्नलिखित किताबों का अध्ययन किया जा सकता है–

- एनसीएफ 2005 राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र, शांति के लिए शिक्षा, एनसीईआरटी, नई दिल्ली, 2010
- एंटोनी द सेंट एक्सूपेरी, नन्हा राजकुमार, एनसीईआरटी, नई दिल्ली, 2007
- हेमराज भट्ट, एक अध्यापक की डायरी के कुछ पन्ने, अजीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी, बंगलोर, 2011
- जूलिया वेबर गॉर्डन, मेरी ग्रामीण शाला की डायरी, एकलव्य, भोपाल, 2010
- गिजुभाई बधेका, दिवास्वप्न, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, 2011
- गिजुभाई बधेका, शिक्षक हो तों, सर्जना, बीकानेर, 2012
- जे. कृष्णमूर्ति, स्कूलों के नाम पत्र, भाग–1, कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया,वाराणसी, 1998
- जे. कृष्णमूर्ति, शिक्षा क्या है?, राजपाल एंड संज, दिल्ली, 2011(कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया में भी उपलब्ध)
- महात्मा गांधी, सत्य के प्रयोग, नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद (सस्ता साहित्य मंडल व राजपाल एंड संज के संस्करण भी उपलब्ध)
- प्रिया नई दिल्ली एवं सहभागी शिक्षण केंद्र लखनऊ, प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण–विकास में सहभागी प्रशिक्षण पद्धति का मैनुअल, सोसाईटी फॉर पार्टिसिपेटरी रिसर्च इन एशिया, नई दिल्ली का प्रकाशन 1994

डी.एल.एड. प्रथम वर्ष

भाषाई समझ, प्रारंभिक साक्षरता एवं हिंदी शिक्षण

प्रश्नपत्र –5

पूर्णांक –100
बाह्य अंक–70
आंतरिक अंक–30
कालखंड–140

1. अध्ययन का क्षेत्र (Area of Study):– शिक्षाशास्त्रीय विषय

2. विषय की रूपरेखा (Design of Course) :–

- भाषा के अध्ययन के लिए क्षेत्र आधारित सत्रगत कार्य दिया गया है।
- विशिष्ट अध्ययन के लिए पाठ्यसामग्री का गहन अध्ययन समूह में चर्चा द्वारा किया जाएगा।

3. भूमिका (Rationale and Aim) :–

भाषा मात्र भावों एवं विचारों के संप्रेषण का माध्यम ही नहीं है, बल्कि यह संपूर्ण जीवन को समझने और उसे जीने का प्रमुख साधन भी है। भाषा के द्वारा ही मनुष्य अपने अनुभवों को सुरक्षित रखने, व्यक्त करने तथा अगली पीढ़ी को हस्तांतरित करने में समर्थ है। भाषा के कारण ही मनुष्य प्रकृति के अन्य जीवों से अलग एक बौद्धिक प्राणी के रुप में स्थापित है। भाषा मात्र कक्षाओं में पढ़ने–पढ़ाने तक सीमित विषय नहीं हैं। यह समस्त ज्ञान–विज्ञान को जानने, समझने और सीखने का माध्यम भी है। भाषा संपूर्ण जीवन का प्रतिनिधित्व करती है। भाषा एक अत्यन्त संवेदनशील मुद्दा भी हैं। सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, राजनैतिक एवं वैज्ञानिक किसी भी क्षेत्र में भाषा के महत्व को अनदेखा नहीं किया जा सकता है। भाषा के अभाव में मनुष्य ज्ञान और विज्ञान के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण प्रगति नहीं कर सकता है, इसलिए भाषा शिक्षक के रूप में छात्राध्यापक की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है क्योंकि उसका काम बच्चों को भाषा सिखाने के साथ–साथ उनकी सीखी हुई भाषा को परिमार्जित, व्यवस्थित एवं विकसित करना भी है।

भाषा कक्षा एवं कक्षा के बाहर सर्वत्र प्रयोग में लाई जाती है। बच्चे भाषा का उचित एवं सटीक प्रयोग कर सकें इसके लिए अपेक्षित दक्षताएँ एवं कौशल विकसित करना भाषा शिक्षक का मुख्य दायित्व है। इसके लिए आवश्यक है कि छात्राध्यापक भाषा सीखने एवं भाषा के उपयोग हेतु कक्षा में अनुकूल परिस्थितियों एवं अवसरों का निर्माण करें।

4 विशिष्ट उद्देश्य (Specific Objectives) :–

छात्राध्यापक यह समझ सकेंगे कि –

- भाषा की प्रकृति क्या है एवं भाषा का क्या महत्व है।
- भाषा एवं समाज के अंर्त संबंध को समझते हुए बहु भाषिकता को बढ़ावा दे सकेंगे।
- भाषा के मूलभूत कौशल क्या है।
- भाषायी दक्षता प्राप्त करने की प्रक्रिया क्या है।
- भाषा का प्रयोग बच्चे अपने विकास की विभिन्न अवस्थाओं में एक उपकरण के रूप में कैसे करते हैं।
- प्रारंभिक साक्षरता की दक्षताओं का शाला की पाठ्यचर्या पर किस प्रकार प्रभाव पड़ता है।
- बच्चों में सरल एवं सशक्त एवं प्रभावी संप्रेषण कला का विकास कर सकेंगे।
- पठन–क्षमता विकास पर विशेष ध्यान दे सकेंगें।
- मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति में व्याकरण की भूमिका समझ सकेंगे।
- मूल्यांकन की समझ विकसित कर उसे सीखने–सिखाने की प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग बना सकेंगे।
- शब्द भण्डार में वृद्धि कर सकेंगें।
- विभिन्न साहित्यिक विधाओं के प्रति रुचि जागृत कर साहित्य में रचनात्मकता एवं सृजनात्मकता को बढ़ावा दे सकेंगे।
- भाषा शिक्षण में सहायक सामग्री का उचित उपयोग करते हुए भाषायी कौशलों के विकास हेतु बाल केंद्रित गतिविधि परक एवं उपयोगी शिक्षण पद्धतियों का उपयोग कर सकेंगे।

5. पाठ्यचर्या का महत्व (Importance of Syllabus) :–

प्रत्येक इकाई क्रमानुसार एक दूसरे से जुड़ी हुई है। अधिगमकर्ता अधिगम प्रक्रिया के सामाजिक सांस्कृतिक और राजनीतिक संदर्भ को ध्यान में रखते हुए अच्छी तरह शिक्षा शास्त्र की समझ बना सकेगें।

6. इकाईवार अंकों का विभाजन (Unitwise Division of Marks) :–

क्र.	इकाई	विषय	कालखंड	अंक
1	1	भाषा की परिभाषा एवं प्रकृति	22	12
2	2	भाषा का अर्जन एवं भाषायी कौशलों का विकास	43	18
3	3	पाठ्यचर्या एवं भाषा, कक्षा शिक्षण और संभावनाएँ	30	15
4	4	व्याकरण अध्ययन	23	15
5	5	भाषा, मूल्यांकन एवं नवाचार	22	10
सत्रगत कार्य			खंड अ + खंड ब	15+15 =30
कुल योग			140	100

7. इकाई का अध्ययन (Units) :–

इकाई–1 भाषा की परिभाषा एवं प्रकृति

- भाषा की परिभाषा एवं महत्त्व।
- भाषा एवं समाज का संबंध
- राज्य की भाषानीति और शिक्षा
- भाषा–बोली (स्थानीय भाषा)
- बहुभाषिकता की समझ–बहुभाषिकता को प्रदेश की भाषा संपन्न कक्षाओं में एक उपकरण के रुप में प्रयोग करना।

इकाई–2 भाषा का अर्जन एवं भाषायी कौशलों का विकास

- बच्चों का परिवेश एवं शालेय अनुभवों से भाषा सीखना व भाषायी कौशल प्राप्त करना।
- प्रारंभिक साक्षरता द्वारा सरल, सशक्त एवं प्रभावी अभिव्यक्ति में समर्थ बनना।
- भाषा की प्रारंभिक शिक्षा––कक्षा 1 व 2 के विशेष संदर्भ में।
- मौखिक भाषा– सुनना एवं बोलना (सुनकर समझना,समझकर बोलना) श्रवण कौशल विकास की विधियाँ, समझना, समझकर बोलना–प्रवाह स्पष्टता, गतिशीलता के साथ बोलना, अर्थपूर्ण वाक्यों के साथ भाषा का व्यावहारिक प्रयोग कर पाना ।
- वाचनकौशल– पढ़ना क्या है, सस्वर एवं मौन वाचन, छपी एवं हस्त लिखित सामग्री पढ़ना, समझना।
- लेखन कौशल– उचित विराम चिह्नों का प्रयोग, सुलेख, स्वतंत्र अभिव्यक्ति के रुप में विभिन्न विधाओं में सुसंबद्ध लेखन करना।

इकाई–3 पाठ्यचर्या में भाषा, कक्षा शिक्षण और संभावनाएँ

- शिक्षा और पाठ्यचर्या में भाषा (भाषा सीखना और भाषा से सीखना)
- भाषा शिक्षण– सामाजिक न्याय, समता–समानता, लिंग भेद, व्यक्तिगत अंतर व समावेशित शिक्षा के संदर्भ में।
- भाषा सीखने के प्रति रुझान–वर्तमान परिदृश्य।
- भाषा संवर्धन में साहित्य की भूमिका,पाठ्यचर्या में बाल साहित्य का महत्त्व, पुस्तक समीक्षा
- साहित्य की विभिन्न विधाओं को समझना।
- गद्य एवं पद्य शिक्षण प्रविधियाँ (कविता, कहानी, संस्मरण, एकांकी, निबंध आदि एवंनवीन प्रविधियाँ यथा–गतिविधि आधारित शिक्षण,सक्रिय अधिगम प्रविधि आदि।

इकाई–4 व्याकरण अध्ययन

- मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति अंतर्गत भाषा विकासमें व्याकरण की भूमिका
- ध्वनि एवं भाषायी ध्वनियाँ ।
- हिन्दी के स्वर–व्यंजन (वर्णमाला) एवं उनका वर्गीकरण।
- शब्द एवं पद ।

- अर्थ बोध,अर्थ विस्तार (विस्तार, संकोच, अर्थादेश, उत्कर्ष, अपकर्ष),अर्थ परिवर्तन।
- वाक्य के गुण, वाक्य के प्रकार (भेद) (रचना एवं अर्थ के आधार पर)।
- रस, छंद, अलंकार प्रयोग।
- व्यावहारिक व्याकरण शिक्षण (कक्षा 1 से 8 की पाठ्यपुस्तकों में निहित)।

इकाई–5 भाषा में मूल्यांकन एवं नवाचार

- मूल्यांकन की परिभाषा एवं प्रकार।
- सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन।
- प्रदेश की नीति अनुसार मूल्यांकन एवं अभिलेखों का संधारण। ब्लूप्रिंट एवं प्रश्न पत्र निर्माण।
- कठिनाइयों की पहचान एवं विशेष शिक्षण ।
- भाषा प्रयोगशाला का स्वरुप महत्त्व एवं उपयोगिता।
- दृश्य–श्रव्य माध्यमों का प्रयोग ।
- भाषा शिक्षण में क्रियात्मक अनुसंधान।

8. सत्रगत कार्य (Assignements)

निम्नलिखित खंड अ एवं ब में से एक–एक प्रायोजना कार्य कीजिए।

खंड अ

- गतिविधि आधारित अधिगम(एबीएल)/सक्रिय अधिगम प्रविधि(एएलएम) की एक–एक पाठ योजना गद्य एवं पद्य की पृथक–पृथक तैयार कीजिए।
- भाषायी कौशलों के विकास हेतु एक प्रभावी पाठ योजना सहायक सामग्री सहित तैयार कीजिए।
- भाषा प्रयोगशाला के प्रत्यक्ष अवलोकन के आधार पर एक भाषायी खेल गतिविधि तैयार करें।
- भाषागत किसी एक समस्या का चयन कर क्रियात्मक अनुसंधान की प्रायोजना निर्माण कर संपादन कीजिए।
- भाषा की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए लिखित एवं मौखिक मूल्यांकन के लिए ब्लूप्रिंट के अनुसार किसी एक कक्षा का आदर्श प्रश्नपत्र तैयार कीजिए।

खंड ब

- विद्यालयीन पुस्तकालय में उपलब्ध बाल साहित्य की विधाओं एवं लेखकों के नाम की सूची तैयार कीजिए। अपनी पसंद की किसी पुस्तक की समीक्षा लिखिए।
- आपके विद्यालय में पुस्तकालय के प्रभावी उपयोग की कार्ययोजना तैयार कीजिए।
- किसी स्थानीय लोककथा को स्थानीय बोली और हिंदी भाषा में लिखकर प्रस्तुत कीजिए।
- अपने आसपास के किसी प्राकृतिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक महत्व के स्थल, मेले, त्योहार अथवा स्थानीय स्वतंत्रता–सेनानी के जीवनवृत्त में से किसी एक पर आलेख लिखिए।
- स्थानीय स्तर पर प्रचलित लोकोक्तियों एवं मुहावरों का संकलन कीजिए।

9. पाठ्यक्रम की अंतरण की विधियाँ **(Mode of Transaction)** :–

- छात्राध्यापकों को पठन हेतु चयनित सामग्री प्रदान करना एवं उस पर चर्चा करना।
- छात्राध्यापकों को छोटे समूह में पठन हेतु अवसर देना एवं उसका प्रस्तुतीकरण करवाना, छूटी हुई बातों को समूह चर्चा द्वारा जोड़ना।
- प्रश्नोत्तर माध्यम से चर्चा एवं सहभागिता द्वारा छात्राध्यापकों को अवसर प्रदान करना एवं विषयवस्तु का सुदृढ़ीकरण करना।
- छात्राध्यापकों को विषयवस्तु से संबंधित प्रायोजना कार्य देना एवं उसके प्रस्तुतीकरण से विषयवस्तु का विकास करना।

10.संदर्भ ग्रंथों की सूची **(Bibliography)** :–

1. हिन्दी भाषा शिक्षण– ओमप्रकाश शर्मा, कल्पना प्रकाशन, जयपुर
2. हिन्दी व्याकरण एवं रचना विकास– डॉ. महेन्द्रकुमार मिश्रा, कल्पना प्रकाशन, जयपुर
3. हिन्दी भाषा और भाषा विज्ञान–डॉ. अशोक के शाह 'प्रतीक', अमर प्रकाशन, मथुरा
4. हिन्दी वर्ण और वर्तनी–डॉ प्रेम भारती, मीरा प्रकाशन, इलाहाबाद
5. हिन्दी व्याकरण–पंडित कामता प्रसादगुरु,लोक भारतीय प्रकाशन,इलाहाबाद
6. भाषा विज्ञान–भोलानाथ तिवारी, किताब महल, इलाहबाद
7. हिन्दी व्याकरण शिक्षण–डॉ. हरदेव बाहरी
8. आधुनिक हिन्दी व्याकरण रचना–डॉ. वासुदेव नंदन प्रसाद, भारती भवन 1992
9. बच्चे की भाषा और अध्यापक – प्रो0 कृष्ण कुमार एन बी टी 1998
10. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 (एन.सी.एफ–2005)
11. शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 (आर.टी.ई.–09)
12. प्राथमिक विद्यालय में भाषा शिक्षण और चिट्ठी वाचन– सर्जना प्रकाशन, बीकानेर
13. पढ़ने की समझ– एन सी ई आर टी
14. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या–शिक्षक शिक्षा 2009 (एन.सी.एफ.टी.ई.–09)
15. हिन्दी एक मौलिक व्याकरण– रमाकांत अग्निहोत्री
16. भाषा शिक्षण – रोहित धनकर, आधार प्रकाशन, पंचकूला, चंड़ीगढ़, हरियाणा

डी.एल.एड.प्रथम वर्ष
गणित शिक्षण प्रारंभिक स्तर–1
(प्रश्न पत्र–6)

पूर्णांक –100
बाह्य अंक–70
आंतरिक अंक– 30
कालखण्ड–140

1. अध्ययन का क्षेत्र (Area of Study):–शिक्षा शास्त्रीय विषय

2. विषय की रूपरेखा (Design of the Course):–

- प्रत्येक इकाई की विषय–वस्तु इस तरह तैयार की गई है कि बच्चों के स्तरानुकूल हो तथा गणित शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति हो सके।
- यथा संभव विषय–वस्तु में करके सीखने के अवसर रखे गए हैं।

3. भूमिका एवं लक्ष्य (Rationale and Aims) :–

शाला में प्रवेश से पूर्व ही बच्चे गणित से परिचित होते हैं और अनेक तरीके से उसे प्रयोग कर रहे होते हैं। शाला में उनके पूर्व ज्ञान को क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित रुप से विकसित किया जाता है, इस प्रक्रिया में कई बार बच्चे के अंतर्निहित ज्ञान के साथ मतभेद की स्थिति उत्पन्न होती है। अतः प्रभावी शिक्षण हेतु छात्राध्यापक के लिए इस मतभेद को समझना आवश्यक है। प्रत्येक छात्राध्यापकको गणित सिखाने के कौशल को स्वयं इस प्रकार विकसित करना है, जिससे वह बच्चों में अपने भौतिक एवं तात्कालिक पर्यावरण से प्राप्त अनुभवों के आधारभूत गणितीय प्रत्ययों की समझ के विकास में सहायक हो सके।

अतः छात्राध्यापकों को बच्चों की सोच के अनुरुप कक्षा शिक्षण की वैकल्पिक गतिविधियों का विकास करना होगा, जिससे बच्चों को हर अवधारणा के कई उदाहरणों के संपर्क में आने तथा अनुमान लगाने व सत्यापन करने के अवसर मिल सकें।

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य है कि छात्राध्यापक अपने ज्ञान पर आधारित, प्रारंभिक स्तर पर पढ़ाई जाने वाली गणितीय विषय–वस्तु पर चर्चा करने के स्थान पर बच्चों एवं उनके अनुभवों से जुड़कर गणितीय अवधारणाओं का विकास करें। साथ ही इस पाठ्यक्रम से छात्राध्यापक यह जानने में सक्षम होंगे कि अनुसंधान बच्चों एवं उनकी गणित शिक्षा के बारे में क्या कहना चाहता है एवं इसका उपयोग वे अधिगम प्रक्रिया के विकास हेतु कर सकेंगे।

4. विशिष्ट उद्देश्य (Specific Objectives) :–

- गणित विकास क्रम का ऐतिहासिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य की समझ बनाना।
- प्रारंभिक कक्षाओं में पढ़ाए जाने वाले गणित के संदर्भ में विषयवस्तु की व्यापक समझ बनाना।
- NCF -2005 के संदर्भ में गणित शिक्षण की समझ बनाना।
- गणित शिक्षण अधिगम की प्रक्रियाएँ तथा पाठ योजना की समझ बनाना।
- शिक्षण का वास्तविक अनुभव तथा मूल्यांकन की उपयोगिता को समझने का अवसर देना।
- भारतीय गणितज्ञों का परिचय प्राप्त कर उनके योगदान के प्रति सम्मान उत्पन्न करना।

5. विषय का महत्त्व **(Running Thread of the Course)** :–

गणित विषय के अध्ययन के बाद शिक्षकों में विचार व्यक्त करने की क्षमता विकसित होगी तथा गणितीय विचारों को अवधारणाओं को बच्चों तक संप्रेषित कर सकेंगे।

6. इकाईवार अंकों का विभाजन **(Unitwise division of Marks)** :–

क्र.	इकाई	विषय	कालखंड	अंक
1	1	विषय–वस्तु का शिक्षा शास्त्रीय ज्ञान–1 (Pedagogical content knowledge-I)	30	12
2	2	विषय–वस्तु का शिक्षा शास्त्रीय ज्ञान– 2 (Pedagogical content knowledge – II)	30	12
3	3	बच्चे का गणितीय अवधारणात्मक विकास	25	15
4	4	गणित शिक्षण के लक्ष्य, उद्देश्य एवं मूल्यांकन	25	15
5	5	गणित शिक्षण के आयाम	30	16
		सत्रगत कार्य	–	**30**
		कुल योग	**140**	**100**

7. इकाई का अध्ययन (Units) :–

इकाई– 1 विषय–वस्तु का शिक्षा शास्त्रीय ज्ञान –I(Pedagogical content knowledge-I)

- संख्याएँ,संख्या पद्धति, शून्य का इतिहास एवं समझ, पेटर्न।
- मूलभूत संक्रियाएँ : जोड़ना, घटाना, गुणा, भाग, संख्या रेखा के उपयोग से संक्रियाएँ।
- गुणन, गुणज, गुणनखण्ड, अपवर्त्य, अपवर्तक, लघुत्तम समापवर्त्य, महत्तम समापवर्तक।
- भिन्नः अवधारणा, इकाई के भाग/हिस्से के रुप में भिन्न की समझ, भिन्न के प्रकार, भिन्नों की तुलना, भिन्नों पर संक्रियाएँ।
- दशमलव : अवधारणा, भिन्न को दशमलव संख्या एवं दशमलव संख्याको भिन्न में बदलना, दशमलव संख्याओं पर संक्रियाएँ।
- ऐकिक नियम, लाभ–हानि।

इकाई– 2 विषय–वस्तु का शिक्षा शास्त्रीय ज्ञान–II (Pedagogical Content Knowledge–II)

- मापन – इकाई की समझ, लंबाई, वज़न, धारिता, समय, मुद्रा, क्षेत्र।
- आकार एवं आकृतियों की समझ, खुली एवं बंद आकृति, त्रिभुज, चतुर्भुज एवं वृत्त, कागज मोड़कर ज्यामिति आकृतियाँ बनाना।
- तल की समझ, समतल, वक्रतल।
- भारतीय गणितज्ञ एवं उनका योगदान आर्यभट्ट, ब्रह्मगुप्त, भास्कराचार्य, श्रीनिवास रामानुजन, स्वामी भारती कृष्णतीर्थ, वराहमिहीर, बोधायन।
- गणितीय संगणनाओं की वैकल्पिक विधियाँ, परममित्र, बीजांक, एकाधिकेन पूर्वेण, एकन्यूनेन पूर्वेण, ऊर्द्धतिर्यक विधि।

इकाई– 3 बच्चे का गणितीय अवधारणात्मक विकास – III (Mathematical Concept Develop Ment of Child)

- गणित अधिगम के सिद्धांत – पियाजे, वायगोत्स्की
- बच्चे के गणितीय ज्ञान पर उसकी सामाजिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का प्रभाव
- गणित का दैनिक जीवन के अनुभवों से संबंध
- गणित की कक्षा में बोलचाल की भाषा की भूमिका

इकाई– 4 गणित शिक्षण के लक्ष्य, उद्देश्य एवं मूल्यांकन – IV (Aims Objective and Evaluation of Mathematics Teaching)

- गणित की प्रकृति, गणित शिक्षण के लक्ष्य एवं उद्देश्य
- NCF 2005 के परिप्रेक्ष्य में गणित शिक्षण एवं मूल्यांकन
- प्रारंभिक कक्षाओं में गणित शिक्षण के दौरान विभिन्न प्रकरणों में आने वाली प्रमुख समस्याएं तथा उनका निवारण।
- बच्चों को गणित सीखने में आने वाली सामान्य कठिनाइयाँ, कारण व निराकरण।
- गणित के संदर्भ में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन एवं उपकरण व तकनीक।

इकाई– 5 गणित शिक्षण के आयाम –V (Dimension of Mathematics)

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के प्रति धारणाएं

- शिक्षण सिद्धांत एवं शिक्षण विधियाँ
- सबके लिए गणित – सामाजिक न्याय, लिंग भेद, वैयक्तिक भिन्नता, समावेशी वातावरण
- गणित अधिगम हेतु उपयोगी सामग्री–गणित किट, गणित प्रयोगशाला, गणित संदर्भ कक्ष एवं स्थानीय शिक्षण अधिगम सामग्री

गणित शिक्षण के संदर्भ में – गतिविधि आधारित शिक्षण, सक्रिय अधिगम प्रविधि

गणित शिक्षण हेतु पाठ योजना

8. सत्रगत कार्य (Assignments) :–

(कोई दो) सत्रगत कार्य अंतर्गत छात्राध्यापक पूरी प्रक्रिया का अभिलेखीकरण कर सामग्री सहित प्रस्तुत करेंगे।

1. एबाकस का निर्माण तथा इसका कक्षा शिक्षण में उपयोग करना।
2. ज्यो (Geo) बोर्ड का निर्माण एवं कक्षा–शिक्षण में इसका उपयोग करना।
3. संख्या रेखा के मॉडल का निर्माण व इसके द्वारा शिक्षण।
4. कागज मोड़कर गतिविधियों से गणित शिक्षण करना।
5. भिन्न जाली का निर्माण एवं दशमलव की समझ हेतु इसका कक्षा शिक्षण में उपयोग करना।
6. पथ के क्षेत्रफल हेतु मॉडल तैयार कर कक्षा शिक्षण में इसका उपयोग करना।
7. पाइथागोरस प्रमेय का मॉडल तैयार कर उसका सत्यापन करना।
8. गणित की किसी एक अवधारणा के मूल्यांकन हेतु उपकरण का निर्माण कक्षा में उपयोग करना।

9. बच्चों को आने वाली कठिनाई की पहचान कर कारणों का विश्लेषण व निराकरण करना।
10. इंटर्नशिप की शाला में गणितीय कोने (maths corner) की स्थापना करना।
11. अपने परिवेश से विभिन्न गणितीय पहेलियाँ/खेलका संग्रह करना एवं स्वयं पहेलियाँ/खेल बनाना।
12. अपने साथी छात्राध्यापक केगणित कक्षा शिक्षण (कम से कम 5) का विश्लेषणात्मक अवलोकन करना।
13. विभिन्न प्रकार के क्षमता वाले बच्चों के अधिगम के लिए पाठ–योजना तैयार करना।
14. दैनिक जीवन में प्रयुक्त होने वाली विभिन्न प्रकार की मापन इकाइयों का अध्ययन तथा उनमें परस्पर संबंध स्थापित करना।

9. पाठ्यक्रम की अंतरण की विधियाँ **(Mode of Transaction)** :–

1. गणित को बच्चे कैसे सीखते हैं, कैसे प्रत्युत्तर देते हैं, का छात्राध्यापकों द्वारा अवलोकन कर समूह में चर्चा की जाएगी।
2. विभिन्न प्रकार गणितीय अवधारणा की समझ बनाने के लिए समूह कार्य अधिक करवाए जाएंगे।
3. पाठ्यवस्तु के अध्ययन के साथ विमर्श करते हुए छात्राध्यापक चर्चा के लिए आवश्यक मुद्दे निकालेंगे।
4. गणितीय ज्ञान को सीखने के लिए ऐतिहासिक और परंपरागत विभिन्न पद्धतियों का संग्रह करना।
5. गणित के मॉडल तैयार करना विशेषकर ज्यामितीय संबंधी।
6. गणित की सहायक सामग्री को तैयार करना,उसका परीक्षण करना और उसे प्रस्तुत करना।

10. संदर्भ ग्रंथों की सूची **(Bibliography)** :–

1. म.प्र. पाठ्यपुस्तक निगम द्वारा प्रकाशित कक्षा 1 से 8 तक की गणित की प्रचलित पाठ्यपुस्तकें।
2. गणित शिक्षण–एम.एस.रावत व एस.बी. लाल
3. NCF 2005 NCERT द्वारा प्रकाशित साहित्य
4. राज्य शिक्षा केंद्र द्वारा प्रकाशित विद्यार्थी मूल्यांकन निर्देश पुस्तिका
5. NCERT द्वारा तैयार गणित किट

D. El. Ed.Ist Year
Proficiency in English

Maximum Mark- 50
External Marks - 35
Internal Marks - 15
Periods - 70

1. **Area of Study :** :- Pedagogic Studies
2. **Design of the Course :-**

- Each unit of the course will enable the student-teachers to improve upon their skills and capacities in English so that it leads to effortless expression and understanding of spoken and written forms of English. In other words, this course will help the student-teachers to acquire the receptive and productive skills of English and provide them opportunities to reflect on their own proficiency in English.
- Specific reading materials, resources and tasks will be provided in order to help the student-teachers improve their own proficiency in English.
- The course material and units of study will be flexible so that the units may be re-sequenced for those student-teachers who may have no knowledge of English.
- Part I (Theory) and Part II (Practical) will be transacted simultaneously in the classroom, but they will be evaluated separately.
- Part III (School Internship) will be of 40 days, inclusive of internship in other subjects.

3. **Rationale and Aim:-**

A teacher is confident in her classroom only when she is proficient in English. Otherwise poor command over English shakes her confidence and results in ineffective teaching and learning.

Therefore the teacher's own belief in her effectiveness has tremendous impact on classroom transaction. A proficient teacher is more likely to use communicative and other innovative teaching strategies, rather than depending on simple translation and using guide-books for teaching.

This course focuses on the receptive and productive skills in English and combines within each of these, both an approach on proficiency in usage and classroom teaching.

4. Specific Objectives :-

- To enable the student-teacher to improve upon their own proficiency in English.
- To enable the student-teacher to brush-up their knowledge of grammatical, lexical and discourse systems in English and use English in context appropriately.
- To enable the student-teacher to link their knowledge with pedagogic practices.

5. Unit wise division of marks:-

S.No.	Unit	Subject	Period	Marks
1	1	Nature of language	10	5
2	2	Listening and Speaking	10	5
3	3	Reading	10	5
4	4	Writing	20	10
5	5	Grammar	20	10
		Practical	-	**15**
		Total	**70**	**50**

6. Units

The theory paper will comprise of the following five units:

Unit 1 - Nature of language

- What is Language: characteristics of language, functions of language, language as a means of communication and thinking
- First, second and foreign language
- The place of English in multilingual Indian society

Unit 2- Listening and Speaking

- Listening with comprehension: simple instructions, public announcements, telephonic conversation, radio/TV, discussions

- Sound system of language with special focus on English sound system, word and sentence stress)
- Enhancing listening and speaking abilities through discussions, role play, interactive radio instruction programme(IRI)

Unit 3 - Reading

- Acquisition of reading skills: reading with comprehension different types of texts, reading for global and local comprehension, importance of reading with speed
- Reading strategies: word attack, inference, extrapolation, analysis
- Skills of reading, skimming, scanning, extensive and intensive reading, reading aloud, silent reading
- Development of vocabulary – meaning in context, formation of words- affixes, adjective to nouns, noun to verb, etc., homonyms and homophones
- Using reading as a tool of developing reference skills: use of dictionary, reference books, encyclopedia, library, journals, internet

Unit 4- Writing

- Improving writing skills: paragraph writing, identifying a topic sentence, arranging sentences in logical order, joining sentences with linking words/phrases(cohesion and coherence)
- Different forms of writing: formal and informal letters, messages, notices, posters, advertisements, note making, report writing, diary entry, resume (bio-data, curriculum vitae)
- Doing the following to experience the process of writing: brainstorming, drafting, editing, conferencing, modifying, revising, publishing
- Mechanics of writing (strokes and curves, capital and small, cursive and print script, punctuation
- Controlled and guided writing (visual and verbal inputs). Free and creative writing

Unit 5 - Grammar

- Parts of speech:
- Verbs- auxiliary, main verb, finites, non-finites tenses, voices, narration.

- Adjectives, determiners, preposition, adverbs
- Kinds of sentences; subject-verb agreement, clauses and connectors

7. Assignment (Practical) :-

The students will actively perform the following activities in classroom situations, real and simulated, and will discuss freely on the strategies and importance of each one of them and submit three assignments compulsorily.

- Listening with comprehension to follow simple oral instructions, public announcements, telephonic conversations, classroom discussions, radio, TV news, sports commentary
- Reading aloud text with proper pronunciation, intonation and stress, reciting poems, story-telling, role-play, situational talk. Silent reading. Reading different text type: Comics, stories, riddles, jokes, instructions for games
- Phonemic drills
- Organizing listening and speaking activities: rhymes, songs, use of stories, poems, role play and dramatization
- Use of dictionary
- Writing dialogues, speeches, poems, skits, describing events
- Using ideas of critical literacy: looking at the socio-cultural dimensions of literacy, encouraging questioning on the dominant ethos in a society.

8. Essential Reading /Reference Material

1. Practical English Grammar: Thompson and Martinet
2. Intermediate English Grammar :Raymond Murphy
3. How Languages are learned, Oxford, OUP : Lightbown,P M & Spade , N (1999)
4. English as a Foreign Language : R. A. Close
5. Lessons for guided writing scholastic : Sullivan, Mary (2008)
6. Pictures for language learning- CUP Wright A (1989)
7. Drama techniques in language learning: A Resource book of communication activities for language teachers (2nd edition) –CUP- Maley, A and A Duff (1991)
8. English for Primary Teachers : A handbook of activities and class room language - OUP – Slatternly, M & J. Wallis (2001)
9. handouts : http://www using English. com

डी.एल.एड. प्रथम वर्ष
कम्प्यूटर शिक्षा
भाग–1

पूर्णांक अंक–50
आंतरिक मूल्यांकन–25
बाह्य मूल्यांकन–25
(प्रायोगिक मूल्यांकन)
कालखंड–40

1. अध्ययन का क्षेत्र **(Area of study)** :–व्यावहारिक

2. भूमिका **(Rationale and Aim)** :–

आज का युग सूचना प्रौद्योगिकी का युग है, सूचनाओं के शीघ्र आदान–प्रदान आज की प्रमुख आवश्यकता है। सूचना क्रांति का प्रयोग आज घर आंगन से खेत–खलिहान हर जगह हो रहा है, सूचना प्रौद्योगिकी के महत्त्वपूर्ण उपकरण कम्प्यूटर, मोबाईल आदि के प्रयोग से हम हमारे जीवन कौशल को विकसित कर सकते हैं साथ ही समय एवं धन की बचत कर सकते हैं। शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 एवं एन.सी.एफ.टी.ई. 2009 में भी यह अपेक्षा की गई है। इस बातको ध्यान में रख कर मध्यप्रदेश में शिक्षक–शिक्षा के क्षेत्र में कम्प्यूटर शिक्षा को सम्मिलित किया गया है।

3. विशिष्ट उद्देश्य **(Specific Objectives)** :–

- छात्राध्यापकों में सहशैक्षिक गतिविधि के रुप में कम्प्यूटर शिक्षा में रुचि का निर्माण करना।
- छात्राध्यापकों में नवीन प्रयोगों जैसे–constructive and creative approach की अवधारणा को विकसित करना।
- सूचना एवं संप्रेषण प्रौद्योगिकी के उपयोग द्वारा शिक्षा में सुधार लाना।
- छात्राध्यापकों में सूचना के संग्रहण, वर्गीकरण, विश्लेषण एवं प्रस्तुतीकरण के कौशल का विकास करना।
- छात्राध्यापकों में वैश्विक स्तर अनुसार तकनीकी के आधार पर व्यावहारिक परिवर्तन लाना।

4. विषय का महत्व **(Running Thread of the Course)** :–

नवीन तकनीक से छात्राध्यापक परिचित हो सकेगें।

सूचना के संग्रहण, वर्गीकरण, विश्लेषण एवं प्रस्तुतीकरण के कौशल में दक्ष हो सकेगें।

5. इकाई वार अंकों का विभाजन (Unit-wise division of marks):-

क्र.	इकाई	विषय	कालखंड	अंक
1	1	कम्प्यूटर का परिचय	10	5
2	2	ऑपरेटिंग सिस्टम	15	10
3	3	वर्ड प्रोसेसिंग	15	10
सत्रगतकार्य			.	**25**
कुल			**40**	**50**

6. इकाईयों का अध्ययन **(Units)** :–

इकाई–1 कम्प्यूटर का परिचय (Introductin of Computer)

- परिचय
- कम्प्यूटर के भाग, साफ्टवेयर एवं हार्डवेयर
- कम्प्यूटर के भागों को जोड़ना
- कम्प्यूटर के विभिन्न भागों की उपयोगिता
- स्टोरेज डिवाइस
- कम्प्यूटर के कार्य

इकाई– 2 ऑपरेटिंग सिस्टम (Operating System)

- ऑपरेटिंग सिस्टम का परिचय
- ऑपरेटिंग सिस्टम के प्रकार (लॉइनेक्स एवंविंडोज)
- डेस्कटॉप के भाग–वॉल पेपर,शार्टकट ऑइकॉन्स, टॉस्कबार / पैनल,स्टार्टमेनू
- फोल्डर बनाना
- मीडिया प्लेयर का उपयोग

इकाई– 3 वर्ड प्रोसेसिंग (Word Processing)

- वर्ड प्रोसेसिंग का परिचय
- राईटर / एम.एस. वर्ड में कार्य करना
  - ❖ टूल बार तथा मेनूबार की जानकारी
  - ❖ फाइल बनाना, सेव करना तथा खोलना
  - ❖ टेक्स टाइप करना (हिन्दी एवं अंग्रेजी)
- फारमेटिंग
  - ❖ बोल्ड, इटालिक, अन्डरलॉइन, फॉन्ट, फॉन्टसाइज, कलर, अलाईन में टइत्यादि
  - ❖ बुलेट्स एवंनम्बरिंग
  - ❖ कट, कापी एवंपेस्ट
- पिक्चर एवं टेबल इन्सर्ट करना

7. सत्रगत कार्य (Assignments) :–

सभी सत्रगत कार्य आवश्यक हैं। दिए गए कार्यो में से कोई भी पांच कार्य सत्रगत कार्य के रुप में जमा कराये जाएँगें।

1. प्रार्थना पत्र लिखना (हिन्दी एवं अंग्रेजी)।
2. विद्यालय समय–सारणी का निर्माण।
3. स्वयं की प्रोफाइल (बायोडाटा) का निर्माण।
4. कम्प्यूटर में फाइलों का रख रखाव।
5. रिमूवेबलडि वाइसेस (पेन ड्राइव, मेमोरी कार्ड) की कार्य प्रणाली एवं उपयोगिता।

6. मॉइन्ड मेप बनाना।
7. पहचान पत्र का निर्माण करना।
8. अनुक्रमणिका का निर्माण करना।
9. कलात्मक मुखपृष्ठ का निर्माण।
10. कक्षा के अन्तर्गत छात्र–छात्राओं की प्रोफाइल तैयार करना।

8. संदर्भग्रथों की सूची (Bibliography) :–

1- HeadstartTraining Manual 2011(Hindi)
2- Microsoft Teacher Training Module (Hindi)
3- Intel Teacher Module (Hindi)
4- Linux Pustak 2011 (Hindi)

Website:-

1- www.computerseekho.com
2- www.dsaksharta.in
3- www.educationportal.mp.gov.in
4- www.teindia.nic.in
5- www.ncte-in.org
6- www.teachersofindia.org

डी.एल.एड. प्रथम वर्ष
स्वास्थ्य,स्वच्छता ,भावनात्मक विकास एवं शारीरिक शिक्षा
भाग –1

पूर्णांक–30
बाह्य अंक– 15
आंतरिक अंक –15
कालखण्ड –40

1. **अध्ययन क्षेत्र (Area of study)** :–व्यावहारिक

2. **विषय की रूपरेखा (Design of the Course)** :–

यह पाठ्यक्रम बच्चों के समुचित स्वास्थ्य को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है, जिसमें व्यक्तिगत, विद्यालयीन, परिवेशीय, उपभोक्ता एवं सामुदायिक स्वास्थ्य तथा स्वच्छता जैसे सभी घटकों को समाहित किया है। प्रथम वर्ष में 30 अंक के अनुसार मूल्यांकन किया जावेगा।

3. **भूमिका (Rationale and Aim)** :–

शिक्षा का मूल लक्ष्य है ''बच्चों का सर्वांगीण विकास''। जिसका तात्पर्य मानसिक एवं शारीरिक क्षमताओं के समेकित विकास से है। बच्चे खेलते–कूदते, दौड़ते–भागते और परस्पर प्रतिस्पर्धा करते इस अवधि में जितने क्रियाशील होते हैं उतने ही वे जल्दी सीखते एवं अपने तनावों, अवसादों को सहज रुप से भूलते जाते हैं। जिससे उनका शरीर स्फूर्तिवान एवं मस्तिष्क पुनः तरोताजा होकर सीखने के लिये तैयार होता है।

इस शिक्षा के अंतर्गत शारीरिक गतिविधियाँ, खेल–कूद, योग, स्वच्छता, अच्छी आदतों का विकास परिवेशीय स्वास्थ्य–स्वच्छता तथा पर्यावरण प्रदूषण, पेड़–पौधों से घरेलू उपचार को जान सकेंगे।

उपभोक्ता जागरूकता में जंक फूड से हानियाँ तथा डिब्बाबंद भोजन एवं पानी के पाउच प्रयोग करने संबंधी दुष्प्रभावों को जानकर उनके उपयोग के प्रति सावधान रह सकेंगे।

समुदाय के स्वास्थ्य को बनाये रखने में वृद्ध, बीमारों, निःशक्तजनों की सेवा करने एवं उनकी चिकित्सा आदि के लिए तत्पर हो सकेंगे।

अतः नितान्त आवश्यक है कि छात्राध्यापकों को अन्य विषयों के साथ स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा का ज्ञान प्रायोगिक एवम् सैद्धांतिक रूप से कराया जाए। आंतरिक मूल्यांकन शारीरिक क्रियाओं पर किए गए कार्य के अभ्यास तथा सत्रगत कार्य पर किया जाये। इसी प्रकार बाह्य मूल्यांकन बाल परीक्षक द्वारा लिखित एवं प्रायोगिक परीक्षा लेकर सुनिश्चित किया जा सकेगा।

स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा का व्यापक अर्थ है कि बच्चों के मानसिक एवं संवेगात्मक गुणों का विकास करते हुए अनके शारीरिक अंगों को स्वच्छ, स्वस्थ एवं मानसिक रूप से सुदृढ़ बना सकें।इसके अंतर्गत अपने जीवन के मूल्य को समझते हुए बच्चे समाज और राष्ट्र को लाभान्वित कर सकें।इस पाठ्यक्रम के माध्यम से उनमें चिन्तन एवं रचनात्मकता के गुण विकासित हों, जिससे वे अपने परिवेश को भी सुरक्षित कर सकें।

4. विशिष्ट उद्देश्य (Specific Objectives) :–

1. बच्चों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता लाना।
2. उन्हें व्यक्तिगत स्वास्थ्य एवं अच्छी आदतें अपनाने के लिए प्रेरित करना।
3. पेयजल के रखरखाव एवं संतुलित आहार की जानकारी देना।
4. समाज के उपेक्षित वर्ग की समस्याओं के प्रति संवेदनशील बनाना।
5. योग, व्यायाम, खेल के प्रति सक्रियता प्रदान करना।
6. बुजुर्गों, निशक्तजनों, बीमारों की सेवा के प्रति जागरूक बनाना।

5. इकाईवार अंकों का विभाजन (Unitwise division of marks) :–

क्र.	इकाई	विषय	काल खंड	आंतरिक अंक (डाइट में प्रशिक्षण के दौरान अभ्यास एवं 3 सत्रगत कार्य)	बाह्य अंक बाह्य परिवेक्षक द्वारा
1	1	शारीरिक शिक्षा,स्वास्थ्य एवं स्वच्छता	20	5 अंक	**लिखित – 10 अंक** **प्रायोगिक– 5 अंक**
2	2	परिवेशीय स्वास्थ्य एवं स्वच्छता	10	5 अंक	
3	3	उपभोक्ता एवं सामुदायिक स्वास्थ्य	10	5 अंक	
		कुल योग	**40**	**15 अंक**	**15 अंक**

नोट : बाह्य पर्यवेक्षक द्वारा लिखित परीक्षा के लिए प्रश्न परीक्षा के दौरान ही चिन्हित किए जाएँगे, इसके लिए बोर्ड से प्रश्न पत्र नहीं आएगा।

6. इकाई का अध्ययन (Units) :–

इकाई–1 शारीरिक शिक्षा, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता

- उत्तम स्वास्थ्य से अर्थ, महत्व, बच्चों में शारीरिक एवं मानसिक अक्षमताएँ चिन्हित कर उनके आधार पर शिक्षण।
- शरीर के विभिन्न अंगों जैसे आँख, नाक, कान, मुँह, हाथ, नाखून एवं बालों की सफाई आदि।
- कपड़ों की सफाई एवं नित्य स्नान का महत्व।
- अच्छी आदतों का विकास जैसे जल्दी जागना, जल्दी सोना, समय पर भोजन करना तथा समय पर अध्ययन करना इत्यादि।
- भोजन के पोषक तत्वों तथा संतुलित आहार की विशेषताएँ, स्वास्थ्यवर्धक भोजन।
- प्रचलित स्थानीय खेल, सही तरीके से बैठने, खड़े होने, पढ़ने एवं लेटने की स्थितियाँ।
- योगासन, प्राणायाम एवं व्यायाम की क्रियाएँ।

इकाई– 2 परिवेशीय स्वास्थ्य एवं स्वच्छता

- परिवेशीय स्वास्थ्य का अर्थ एवं स्वस्थ परिवेश की विशेषताएँ।
- विभिन्न ऋतुओं में स्वास्थ्य की देखभाल एवं घरेलू उपचार।
- जल संरक्षण एवं रखरखाव, जल प्रदूषण एवं उससे होने वाली बीमारियाँ।
- सार्वजनिक स्वच्छता खुले में शौच के दुष्प्रभाव, उचित शौच प्रबंधन।
- घर या वाटिका में उगाए जाने वाले औषधीय पेड़–पौधों का रखरखाव एवं उनके प्रयोग से किए जाने वाले उपचार।
- भोजन का संदूषण, उससे होने वाली बीमारियाँ और उनका निवारण।
-

इकाई– 3 उपभोक्ता एवं सामुदायिक स्वास्थ्य

- उपभोक्ता स्वास्थ्य का अर्थ एवं शिकायत निवारण के लिए जिम्मेदार संस्थाएँ।
- सामुदायिक सेवा संस्थाओं में महिला बाल–विकास, प्राथमिक चिकित्सा केंद्र, नगर पालिका आदि का परिचय।
- वृद्धों, बीमारों तथा निःशक्तजनों की देखभाल एवं उनकी सुरक्षा के उपाय।
- बाजार में बिकने वाली खुली एवं डिब्बा बंद खाद्य सामग्री के दुष्प्रभावों की जानकारी।
- प्राथमिक चिकित्सा जैसे जलने, चोट लगने, डूबने इत्यादि पर उपचार।
- रेडक्रास, स्काउट–गाइड जैसी संस्थाओं की कार्य शैली का परिचय।
-

7 सत्रगत कार्य (Assignments) :–

छात्राध्यापकों द्वारा सत्रगत कार्य का संपादन स्कूल इंटरर्नशिप के दौरान बच्चों की समस्याओं एवं परिवेशीय समाधान पर अध्ययन करके पूर्ण किया जाएगा–

सुझावात्मक सत्रगत कार्यः–

1. कक्षा में लगातार अनुपस्थित बच्चे के सामाजिक आर्थिक एवं पारिवारिक कारणों का पता लगाना एवं कक्षा में नियमित उपस्थित सुनिश्चित करने के प्रेरक प्रयास करना। (केस स्टडी के रूप में)
2. उत्तम स्वास्थ्य के लिए स्थानीय पेरिवेशीय आहार। (स्थानीय भोज्य सामग्री और उसका निर्माण)
3. घरेलू एवं प्राकृतिक चिकित्सा उपाया। (स्थानीय उपलब्धता के आधार पर)
4. शारीरिक खेल क्रीड़ाओं में पीछे रह रहे बच्चों पर अध्ययन। (रिपोर्ट प्रस्तुतीकरण)
5. अस्वच्छता के कारण बच्चों में जन्म लेती समस्याओं पर अध्ययन। (रिपोर्ट प्रस्तुतीकरण)
6. स्थानीय तौर पर कार्यकारी सामुदायिक सेवा संस्थाएँ और उनके द्वारा किए गए कार्य।
7. स्थानीय स्तर पर जल स्त्रोंतो का प्रदूषण एवं उनसे स्वास्थ्य पर होने वाले दुष्प्रभाव।

8 पाठ्यक्रम की अंतरण की विधियाँ (Mode of transaction) :–

आवश्यकतानुसार छात्राध्यापक खेल, योग,पीटी जैसी गतिविधियाँ मैदान में संचालित करेंगे।

- चार्ट, कैलेण्डर, मॉडल आदि के माध्यम से विषयांशों का शिक्षण आवश्यकतानुसार दिया जाएगा।
- हाथों की धुलाई का प्रदर्शन छात्राध्यापक द्वारा किया जाएगा।
- प्राथमिक चिकित्सा पेटिका का ज्ञान छात्राध्यापक को दिया जाना तथा उनसे तैयार कराए जाने का अभ्यास कराया जाना है ।
- स्वास्थ्य सेवाओं, सफाई सेवाओं, वृद्धाश्रम, निःशक्तजन को संरक्षित करने वाली संस्थाओं का अवलोकन करना एवं संबंधित स्थानों पर जाकर उनकी कार्यपद्धति को जानना और छात्राध्यापकों को इन सबके द्वारा संवेदनशील बनाने के प्रयास करना।
- पाठ्यक्रम के उपरोक्त विषयों पर छात्राध्यापकों के साथ शिक्षकों के निरंतर संवाद के लिए विषय की मांग के अनुसार वाद–विवाद, परिचर्चा, ड्रॉइंग, पेटिंग, फिल्म, डाक्यूमेंट्री, आसपास का भ्रमण, गतिविधियाँ, प्रोजेक्ट कार्य, सर्वेक्षण, प्रयोग, प्रदर्शन करना, चर्चा, प्रश्नोत्तरी सामूहिक एवं व्यैक्तिक रूप से आयोजित कराया जाना।
- योग, खेल, पी.टी.(व्यायाम) का निरंतर अभ्यास डाइट प्रशिक्षण में सुबह के सत्र में कराया जाए, जिससे छात्राध्यापक इनके लिए अभ्यस्त हो सकें।

9. संदर्भ ग्रंथों की सूची (Bibliography) :–

1. योग , वी.के एश अयंगार , पुस्तक 'योग दीपिका'
2. खेल – योगराज थाली, खेलों के सामान्य नियम
3. रेडक्रास संस्था प्रकाशन
4. स्वास्थ्य शिक्षा – के. के. वर्मा
5. आहार एवं पोषण – गूपिन्दर कौर बख्शी
6. योग– पातन्जलि योग,प्रदीप – स्वामी सियारामजी
7. योग शिक्षा– अरूण नंद
8. योगासन एवं ध्यान क्रियाएँ– डॉ0 सीमा शर्मा
9. शिक्षा के नये आयाम – डॉ0 एस.टी. ओवेराय
10. शारीरिक शिक्षा एवं खेल – अजय मल्ला
11. शारीरिक एवं स्वच्छ शिक्षा– व्यास देव शर्मा
12. योग शिक्षा – डॉ0 एस.के. मंगल

डी.एल.एड प्रथम वर्ष
कला और शिक्षा
भाग–1

पूर्णांक–40
आंतरिक मूल्यांकन–20
बाहय मौखिक मूल्यांकन–20
कालखंड–40

1. अध्ययन का क्षेत्र (Area of Study):–व्यावहारिक

2. विषय की रूपरेखा (Design of the Course) :–

इस व्यावहारिक प्रश्न पत्र में तीन प्रमुख क्षेत्र हैं: दृश्य कलाएँ, प्रदर्शनकारी कलाएँ, नाट्यकला। तीनों ही क्षेत्र डी.एल.एड. पाठ्यक्रम के दोनों वर्षों में रखे गए है, किन्तु अधिभार अलग–अलग है।

3. भूमिका (Rationale and Aim) :–

कला शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य एवं प्रकृति के बीच सुंदर रिश्ता बनाना है। यह केवल सौंदर्य बोध मात्र नहीं है, बल्कि बाहरी सौंदर्य को आंतरिक सौंदर्य से जोड़कर सृजनात्मकता को पल्लवित करता है। सृजनात्मकता और सौंदर्य बोध प्रत्येक मनुष्य की जन्मजात विशेषताएँ हैं। मानव अपनी अनुभूति को किसी सृजन के रूप में व्यक्त करने के लिए सदैव उत्सुक रहता है। इसके लिए वह शब्द, ध्वनि, गति एवं भाव–भंगिमा जैसे माध्यम चुनता है।कला अभिव्यक्ति की भाषा है और कलाकार की कल्पना, संवेग एवं अंतर्मन का दर्पण है। अतः सौंदर्यानुभूति के प्रति रुचि जागृत करना शिक्षा का बुनियादी कार्य है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के अनुसार प्रथम दस वर्ष की सामान्य शिक्षा द्वारा बालकों के सर्वांगीण विकास करने का लक्ष्य है। अतः बालक की सृजनात्मकता को अभिव्यक्ति के अवसर देने के लिए कला शिक्षा पाठ्यचर्या का अनिवार्य अंग होना चाहिए।इसी दृष्टि से इसके अंतर्गत प्राथमिक व माध्यमिक शिक्षा के लिये प्रस्तावित पाठ्यक्रम में लिखा गया है कि –''स्कूली शिक्षा पाठ्यक्रम में अभी तक कला शिक्षा एवं सृजनात्मक अभिव्यक्ति की ओर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया गया है। कला शिक्षा का उद्देश्य छात्राध्यापकों में चेतना उत्पन्न करना होना चाहिए ताकि वे रंग,रेखा आकार, गति एवं ध्वनि के सौंदर्य के प्रति आकृष्ट हों। कला शिक्षा खण्ड में नहीं दी जानी चाहिये। इस हेतु कक्षा दस तक प्रत्येक स्तर पर एक समेकित उपागम अपनाया जाना चाहिए।

नाटक, चित्रकला आदि कलाएँ न केवल हमारी अभिव्यक्ति का माध्यम हैं बल्कि इनसे हमें स्वयं को समझने के अवसर भी मिलते हैं। उदाहरण के लिए छात्राध्यापकों को नाटक की विभिन्न गतिविधियों से खुद की क्षमताएँ समझने के अवसर भी मिलते हैं। समस्त विषय भी इस माध्यम से पढ़ाए जा सकते है। कलाओं की प्रवृति ऐसी होती है कि छात्राध्यापक और बच्चे दोनों खुद को स्वतंत्रता से अभिव्यक्त कर सकते हैं। इस पाठ्यक्रम में अपेक्षित है कि छात्राध्यापकों को कलाओं के माध्यम से खुद को समझने का प्रयास करेंगे व विद्यालय में बच्चों को समझने के लिए कलाओं का उपयोग करने में सक्षम होंगे।

कला को केवल एक विशिष्ट विषय के रुप में नहीं पढ़ाया जाना चाहिए बल्कि हर विषय के शिक्षण में और विद्यालय के समस्त क्रियाकलापों में कला–बोध एवं कला–माध्यमों का उपयोग होना चाहिए।

चित्र बनाना,नाटक, नृत्य,कठपुतली,गायन वादन आदि विधाओं का उपयोग एक शिक्षक प्रत्येक विषय शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए कर सकता है। इसी कारण हर शिक्षक का विभिन्न कलाओं से परिचय और उनका अभ्यास होना आवश्यक है।

यह तभी संभव है जब छात्राध्यापकोंको सृजनात्मकता और कला बोध विकसित करने के मौके मिलें, उन्हे स्वतंत्र अभिव्यक्ति और सृजनशीलता के लिए भरपूर उन्मुक्त माहौल उपलब्ध कराना होगा। कला–बोध केवल कला की विभिन्न तकनीकों को सीखने से विकसित नहीं होता है बल्कि उसके लिए कुछ सैद्धांतिक अध्ययन, उत्कृष्ट कलाकृतियों का सौंदर्यबोध भी जरूरी है। इस विषय के अध्ययन से छात्राध्यापकों को खुद की कलात्मक प्रतिभा को विकसित करने तथा शिक्षण में उनके उपयोग करने के अवसर दिए जाएँगे।

सृजनात्मकता प्रत्येक बालक में जन्मजात रूप में पाई जाती है, आवश्यकता है उसे विकसित और पल्लवित करने की तथा दिशा देने की। सिर्फ कला ही एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा बच्चे में सृजनात्मकता के बीज को बिना किसी नुकसान के विकसित कर उसे आनंद की अनुभूति कराई जा सकती हैं। कला के माध्यम से बच्चे को अच्छे संवेदनशील नागरिक के रूप में बढ़ने के अवसर मिलते हैं।

4. विशिष्ट उद्देश्य (Specific Objectives) :–

- कलात्मक संवेदना को बनाए रखना
- सौंदर्यबोध जागृत करना
- कला व कलाकार की सराहना करने की क्षमता का विकास करना
- स्थानीय लोक कलाओं को जानना और कलाकारों के प्रति सम्मान की भावना जगाना
- छात्राध्यापकों को कला के बुनियादी सिद्धांतों से परिचित करवाना
- छात्राध्यापकों की कलात्मक रुचियों को उभारते हुए उनकी सृजनशीलता को निखारना
- अन्य विषयों से कला के सहसंबंध को स्पष्ट करना
- भारतीय कलाओं के इतिहास व कलात्मक धरोहरों से परिचय करवाना
- कलाओं के माध्यम से छात्राध्यापकों को खुद को समझने के अवसर उपलब्ध कराना व विद्यालय में बच्चों को समझने के लिए कलाओं का उपयोग करने के लिए प्रेरित करना।
- भारतीय कलाकारों के कला में योगदान को रेखांकित करना।
-

5. इकाईवार अंकों का विभाजन (Unit-wise Division of Marks) :–

क्र.	इकाई	विषय	कालखंड	अंक
1	1	कला से आशय	10	5
2	2	कला शिक्षण–उद्देश्य और विधियाँ	10	5
3	3	भारतीय कला के इतिहास का परिचय	20	10
		सत्रगत कार्य	–	20
		कुल	40	40

6. इकाई का अध्ययन (Units) :–

इकाई–1 कला से आशय

- कला क्या है ?
- कला एवं संस्कृति का संबंध
- कला शिक्षा का तात्पर्य
- अन्य विषयों से कला का सहसंबंध

इकाई 2. कला शिक्षण–उद्देश्य और विधियाँ

- कला शिक्षण क्यों और कैसे
- चित्रकला–कक्षा शिक्षण के संदर्भ में
- रंगमंच – कक्षा शिक्षण के संदर्भ में
- संगीत एवं नृत्य–कक्षा शिक्षण के संदर्भ में

इकाई 3. भारतीय कला के इतिहास का परिचय

- चित्रकला का इतिहास
- रंगमंच का इतिहास
- संगीत व नृत्य का इतिहास

7.कक्षागत कार्य (Tranasaction) :–

- रंगोली, मांडना,अल्पना, मेहंदी बनाना
- म.प्र. के लोकगीत एवं लोक नृत्यों का अभ्यास
- क्ले माडलिंग, चित्र बनाने का प्रारंभिक अभ्यास
- नाट्य खेल गतिविधियाँ, छोटी–छोटी कहानियों का नाट्य रूपांतरण करना

गतिविधियाँ :–

1. संग्रहालय, आर्ट गैलरी, प्रदर्शनी आदि का भ्रमण करवाना
2. स्थानीय प्रादेशिक लोक कलाकारों द्वारा लोकगीत, लोकनृत्य, सुगम संगीत आदि का प्रदर्शन
3. कला की दृष्टि से उत्कृष्ट फिल्मों का प्रदर्शन व उनपर चर्चा
4. बाल फिल्मों तथा कार्टून फिल्मों का प्रदर्शन और उनपर चर्चा
5. किसी चित्रकार अथवा मूर्तिकार के साथ एक या दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन
6. किसी बाहरी समूह द्वारा नाटक का मंचन व उसके निर्देशक तथा कलाकारों से बातचीत

सत्रगत कार्य (कोई 2):–

- चित्रों के कोलाज द्वारा किसी घटना या कहानी का प्रदर्शन कीजिए।
- स्थानीय कलाकारों का साक्षात्कार लीजिए व आधुनिकता के इस युग में कला को बनाए रखने में उनके सामने आ रही चुनौतियों के बारे में बातचीत करके उसका अभिलेखीकरण कीजिए।

- किसी कहानी या कविता पर आधारित कठपुतली या मुखौटों का निर्माण करके उनका प्रदर्शन कीजिए।
- पावर पाईंट पर किसी पाठ के लिए संगीत के साथ ग्रफिक्स एनीमेशन व चित्र बनाइए।
- किसी फिल्म के अभिनय, संगीत व नृत्य पक्ष को ध्यान में रखते हुए समीक्षा लिखिए।
- अनुपयोगी सामग्री से किसी तरह की उपयोगी वस्तुएँ बनाइए।
- मेहंदी, अल्पना या मांडने की कोई कलाकृति तैयार कीजिए।

संदर्भ ग्रंथों की सूचीः–

- एन.सी.एफ़ का फोकस पेपर कला शिक्षा
- मध्यप्रदेश का लोक संगीत– प्रो.शरीफ़ मोहम्मद, डॉ. खरे– म.प्र.हिंदी ग्रंथ अकादमी
- कबाड़ से जुगाड़–अरविंद गुप्ता एकलव्य प्रकाशन।
- जॉय ऑफ मेकिंग इन्डियन टॉयज़–खन्ना एन.बी.टी प्रकाशन।
- क्रिएटिव ड्रामा इन प्रायमरी ग्रेड– नील मेक केसलिन–लंदन लॉंगमेन
- कबीर, टैगोर, निराला, गालिब, नजीर, तुलसीदास, सूरदास, रहीम, रसखान आदि की रचनाओं के कैसेट/सीडी,स्थानीय लोकगीतों के कैसेट/सीडी
- थियेटर इन एजुकेशन– बेरी प्रसाद।
- लोक संस्कृति – बसंत निरगुणे, म.प्र.हिंदी ग्रंथ अकादमी
- भारतीय सांस्कृतिक धरोहर– डॉ. उमराव सिंह चौधरी म.प्र.हिंदी ग्रंथ अकादमी
- भारत के लोकनृत्य– प्रो.शरीफ़ मोहम्मद –म.प्र.हिंदी ग्रंथ अकादमी
- मुखौटों का सांस्कृतिक अध्ययन– डॉ.ऋतुराज वशिष्ठ, म.प्र.हिंदी ग्रंथ अकादमी

डी.एल.एड. प्रथम वर्ष
कार्य और शिक्षा

पूर्णांक–30

आंतरिकमूल्यांकन–15

बाह्य मूल्यांकन–15

कालखंड– 30

1. अध्ययन का क्षेत्र (Area of Study):–व्यावहारिक

2. भूमिका (Rationale and Aim) :–

वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में शिक्षण की प्रक्रियाओं में छात्राध्यापकों एवं बच्चों का सर्वांगीण विकास किया जाना है। इस हेतु सैद्धांतिक ज्ञान के साथ व्यावहारिक कार्यानुभवों को स्थान देना महत्वपूर्ण लक्ष्य है। छात्राध्यापक सैद्धांतिक ज्ञान के साथ–साथ व्यावहारिक कार्यानुभवों के आधार पर बच्चों के सर्वांगीण विकास करने में सक्षम हो सकते हैं। अतःशिक्षण के क्षेत्र में 'कार्य और शिक्षा' के अंतर्गत व्यावहारिक कार्यों की भूमिका महत्त्वपूर्ण है।

कार्य के माध्यम से बच्चों में शारीरिक, मानसिक तथा नैतिक विकास की प्राप्ति सहज संभव हैं। कार्य जीवन के प्रत्येक क्षेत्र से प्रत्यक्ष संबंध रखने वाले होते हैं। कार्य के द्वारा जो ज्ञानार्जन होता है, वह न केवल स्थायी होता है बल्कि उसका प्रभाव जीवन पर्यन्त रहता है।इससे मनुष्य की क्षमता और मूल्यों का विकास भी होता है। काम से जुड़ा शैक्षिक अनुभव बच्चों के विकास में ज्यादा प्रभावशाली होता है।

'कार्य और शिक्षा' की अवधारणा है कि रचनात्मक/उत्पादक कार्य द्वारा दी जाने वाली शिक्षा में मस्तिष्क का विशेष रुप से प्रयोग होता है। इसमें बच्चे,जिन वस्तुओं या कामों की रचना करते हैं, वे उसके विषय में लगातार सोचते हैं, उसके संबंध में भाँति–भाँति की कल्पनाएँ करते हैं। बनाई जाने वाली वस्तुओं या कार्यों में सौंदर्य के समावेश के भाव से उनमें सौंदर्य बोध का विकास होता है। रचना–कर्म करते समय वे अपने हाथों का प्रयोग करते है। हाथ के प्रयोग में अनुभव और कुशलता की आवश्यकता होती है। शरीर,बुद्धि एवं हृदय तीनों के समन्वित विकास से बच्चे में श्रम के प्रति सम्मान की भावना, आत्म निर्भरता, उत्तरदायित्व और सकारात्मक सोच को विकसित करने में सहायता मिलती है।

3. विशिष्ट उद्देश्य (Specific Objectives) :–

'कार्य और शिक्षा' के तहत ऐसे मूलभूत क्षेत्रों को शामिल किया गया है, जो शिक्षा एवं शिक्षण के क्षेत्र में प्रभावशाली उद्देश्यों की पूर्ति कर सकते है।

- शैक्षिक के साथ सहशैक्षिक गतिविधियों के विकास की समझ विकसित करना।
- प्रारंभिक शिक्षा के साथ प्रकृति, पेड़–पौधों, बागवानी, पर्यावरण की समझ प्रायोगिक एवं व्यावहारिक रूप से प्रदान करना।
- हस्तकौशलों के विकास संबंधी कौशलों से परिचित कराना।
- रोजगारमूलक शिक्षा से संबंधित विभिन्न कौशलों का विकास करना।

- परिवेश व समूह में कार्य करने की आदतों का विकास करना।

निरीक्षण क्षमता का विकास करना।

कल्पना शक्ति एवं एकाग्रता का विकास करना।

सामान्य तौर पर 'कार्य और शिक्षा' को दो भागों में विभाजित किया गया है।

I अनिवार्यक्रियाएँ

II वैकल्पिक क्रियाएँ

उपरोक्त दोनों क्रियाओं को निम्नानुसार सारिणीबद्ध किया गया है। प्रत्येक संस्था अपने यहाँउपलब्ध साधन–संसाधनों तथा अपनी सुविधानुसार छात्राध्यापकों से प्रथम वर्ष में 'कार्य और शिक्षा' से संबंधितअनिवार्य एवं वैकल्पिक क्रियाएँ कराएगी।

❖ **अनिवार्य क्रियाओं की सूची–**

- बागवानी
- सिलाई, कढ़ाईएवं सजावटी वस्तुओं का निर्माण

4. विषय का महत्व (Running Thread of the Course) :–

'कार्य और शिक्षा'प्राथमिक स्तर से लेकर उच्चतर माध्यमिक स्तर पर दी जाने वाली शिक्षण प्रक्रिया का एक आवश्यक अंग है। 'कार्य और शिक्षा' उद्देश्यपूर्ण और सार्थक शारीरिक, बौद्धिक एवं हाथों से किया जाने वाला काम है। यह सीखने की प्रक्रिया का अनिवार्य हिस्सा है।इससे उत्पादक वस्तुएँ या सेवाएँ प्राप्त होती है।इसके तहत की जाने वाली गतिविधियाँ सीखने वाले की रुचियों, योग्यताओं तथा आवश्यकताओं पर आधारित हो सकती हैं। इससे शिक्षा के स्तर के साथ–साथ कुशलताओं और ज्ञान के स्तर में वृद्धि होती जाएगी। इसके द्वारा प्राप्त किया गया अनुभव आगे चलकर रोजगार पाने में सहायक हो सकता है।

5. इकाईवार अंकों का विभाजन (Unit-wise Division of Marks) :–

क्र.	इकाई	विषय	कालखंड	अंक
1	1	**अनिवार्य कियाएँ** • बागवानी • सिलाई, कढ़ाई एवं सजावटी वस्तुओं का निर्माण	20	10
2	2	**वैकल्पिक कियाएँ**	10	05
3	3	**बाह्य मूल्यांकन**	–	15
		कुल	**30**	**30**

इकाई– 1 अनिवार्य कियाएँ

1. बागवानी

- भूमि एवं गमलों की तैयारी, साफ–सफाई, समतलीकरण, गड्ढे तैयार करना एवं भरना।
- पौधों एवं बीजों का रोपण।
- खाद एवं उर्वरक तथा उनके अनुप्रयोग।
- वृक्षारोपण की योजना बनाना।

- कटिंग, दाब कलम एवं गूटी द्वारा पौधे तैयार करना।
- पौधों की सुरक्षा।
- पौधों की देखभाल सिंचाई, कटाई, छँटाई आदि।
- किचन गार्डन।

गतिविधियाँ–

सामान्य तौर पर बागवानी हेतु निम्न बिन्दुओं के अंतर्गत गतिविधियाँ संचालित की जाना चाहिए। छात्राध्यापकों से अपेक्षा की जाती है कि उपरोक्त क्रमानुसार गतिविधियों को स्वयं करने का प्रयास करें।

- समतलीकरण, कंकड़–पत्थर बीनना, क्यारी का निर्माण एवं गड्ढों को तैयार करना, गमले तैयार करना, उन्हें भरना। (क्यारियों का निर्माण फूलों, सब्जियों के आधार पर किया जा सकता है)
- बीजों की पहचान करना, बीजों के नमूने एकत्र करना एवं उपलब्ध क्षेत्रफल के आधार पर आवश्यक बीज की मात्रा का निर्धारण करना।
- पौधे तैयार करना– नर्सरी लगाकर, कटिंग, दाब, कलम एवं गूटी द्वारा।
- बीजों एवं पौधों का रोपण करना (विशेषकर कतार से कतार की दूरी एवं पौधों से पौधों की दूरी एवं सुन्दरता के आधार पर)
- उर्वरकों, खादों एवं जैविक खादों की जानकारी प्राप्त करना, पहचान करना एवं नमूने एकत्र करना।
- कम्पोस्ट खाद या हरी पत्ती की खाद तैयार करने हेतु गड्ढेंतैयार करना एवं खाद का निर्माण करना।
- प्रति हैक्टर या क्षेत्रफल के आधार पर आवश्यक खाद एवं उर्वरकों की मात्रा की गणना करना।
- उर्वरकों को देने के तरीको के साथ उपकरणों एवं रखरखाव की जानकारी प्राप्त करना।
- आसपास के वातावरण एवं प्रचलित कीटों तथा रोगों के आधार पर कीटनाशकों एवं रोगनाशकों की जानकारी तैयार करना।
- कीटनाशकों एवं रोगनाशकों के छिड़काव की विधियों एवं यंत्रों की जानकारी प्राप्त करना।
- बगीचे के पौधों एवं वृक्षों की कटाई, छँटाई, सहारा देना, सिंचाई हेतु थाला या लाइन बनाना।
- शाला के अनुपयोगी जल का प्रयोग बागवानी हेतु करना।
-

6 संप्रेषण का माध्यम(Tranasaction) :–

- छात्राध्यापकों से निम्नानुसार नमूना फाइल बनवाई जाए।
  - a. विभिन्न प्रकार के बीजों की (फूलों की, सब्जियों की)
  - b. उर्वरकों एवं खादों की (उपलब्ध पोषक तत्वों के अनुसार)
  - c. बागवानी या कृषि कार्यों में उपयोग लाये जाने वाले यंत्रों के चित्रों की, उपयोगिता के आधार पर।

- जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान पर उपलब्ध स्थल पर मौसमी पुष्पों का बगीचा तैयार करवाना। इस हेतु पाँच गुणा पाँच फीट की क्यारियाँ तैयार की जा सकती हैं। छात्राध्यापकों की संख्या अधिक होने पर विभिन्न पुष्पों के गमले भी तैयार किये जा सकते हैं।
- भ्रमण (एक्सपोजर विजिट)–अपने क्षेत्र में स्थापित कृषि विज्ञान केंद्र, शासकीय नर्सरी अथवा प्रसिद्ध राष्ट्रीय या राज्यस्तरीय गार्डनका भ्रमण कराया जा सकता है तथा इस भ्रमण कार्य से क्या सीखा–समझा संबंधी रिपोर्ट भी तैयार की जानी चाहिए, जिसे सभी से साझा किया जा सकता है।

- प्रोजेक्ट–इसके तहत छात्राध्यापकों को एक प्रोजेक्ट रिपोर्ट तैयार करनी है, इसके लिए निम्नांकित सूची से प्रोजेक्ट कार्यों को चुना जा सकता है।
  - a. अपने प्रशिक्षण संस्थान की स्थिति अनुसार एक वार्षिक पौधा रोपण योजना तैयार करना ताकि प्रांगण की सुन्दरता दिखाई दे सके।
  - b. अपने आसपास के क्षेत्र में स्थित पौधों, वृक्षों, पक्षियों आदि की जानकारी एकत्र करना।
  - c. अपने प्रशिक्षण संस्थान में वर्षभर के लिये माहवार बागवानी क्रियाओं का केलैण्डर तैयार करना।
  - d. जिले/विकासखंड/संकुल स्तर पर आने वाले प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों में बागवानी संबंधी कार्यों की एक सामान्य सूची तैयार करना।

7 संदर्भ ग्रंथ (Bibliography) :–

1. प्रोडक्शन टैक्नोलाजी ऑफ वेजीटेबल क्राप्स – डॉ. एस.पी.सिंह
2. वेजीटेबल प्रोडक्शन– डॉ. डी.व्ही.एस.चौहान
3. फ्लोरीकल्चर प्रोडक्शन– टी.के. बोस
4. हैण्ड बुक ऑफ हार्टीकल्चर– डॉ. के.एन. चढ्ढा

2. सिलाई, कढ़ाई एवं सजावटी वस्तु निर्माण

- सिलाई–काज, बटन टांकना, तुरपाई, बखिये, हुक लगाना, आई बनाना, काज करना, कच्चा करना।
- कढ़ाई– उल्टी बखिया, चेनस्टिच, साटन स्टिच, कांथावर्क, एप्लीक वर्क।
- धागे एवं सुतली का उपयोग करते हुए सामग्री निर्माण।
- जूट से सजावटी वस्तुओंका निर्माण।

गतिविधियाँ :–

प्रशिक्षण के दौरान छात्राध्यापकों से अपेक्षा की जाती है कि वे कौशलों के विकास के लिये विद्यालय में सकारात्मक वातावरण तैयार करें तथा नैसर्गिक सौंदर्य एवं रचनात्मक गतिविधियों के महत्व

को जाने। कल्पना शक्ति एवं एकाग्रता का विकास करें।

- बटन टाँकना, कॉज करना, हुक लगाना, आई लगाना, तुरपाई करना।
- कढ़ाई करना, विभिन्न प्रकार के टाँके बनाना।
- सुतली से विभिन्न प्रकार की चोटियाँ गूंथना।
- गुथी गयी चोटियों द्वारा विभिन्न प्रकार के पेन स्टेण्ड, वॉलपीस, मेट्स आदि का निर्माण करना।
- जूट के रेशे से चोटी गूंथना एवं सजावटी वस्तुओं का निर्माण करना।

प्रोजेक्ट कार्यः– (कोई एक)

- सिलाई– बटन टाँकना, कांज बनाना, हुक लगाना, आई बनाना, तुरपाई करना, कच्चा करना, विभिन्न कपड़े या रूमालों पर बनाकर प्रदर्शित करना।
- कढ़ाई के विभिन्न टाँकों से आकर्षक रूमाल बनाना ।
- सुतली का उपयोग करके कोई दो कलात्मक वस्तुएँ बनाना।
- जूट की गुड़िया निर्माण कर उनका उपयोग विभिन्न प्रकार से करना।

नोट : उपरोक्त प्रोजेक्ट कार्य सुझावात्मक है। इसमें शिक्षक शिक्षा संस्थान द्वारा स्थानीय संसाधनों एवं इससे संबंधित विशेषज्ञों की उपलब्धता के आधार पर अन्य प्रोजेक्ट कार्यों को भी जोड़ा जा सकता है।

इकाई–2

वैकल्पिक क्रियाएँ

वैकल्पिक क्रियाओं की सूची में से किन्ही पाँच क्रियाओं का चयन छात्राध्यापक द्वारा किया जाएगा ।

- संस्था, भवन, घर, शाला परिसर की स्वच्छता व सजावट, फर्नीचर का रखरखाव एवं स्वच्छता
- व्यक्तिगत तथा घरेलू हिसाब–किताब एवं बजट बनाना
- बांधनी एवं बटिक
- काष्ठ कला
- पशुपालन
- बायोगैस प्लांट की जानकारी एवं रखरखाव
- घरेलू उपकरणों की जानकारी, रखरखाव व मरम्मत।
- खिलौना निर्माण
- बैंक में खाता खोलना एवं ए.टी.एम. के बारे में जानना।
- डिजाइनर मोमबत्तियों का निर्माण
- खाद्य संरक्षण
- मध्यान्ह भोजन एवं उसका प्रबंधन।
- प्रदर्शनी, पिकनिक यात्रा, भ्रमण आदि का आयोजन
- विद्यालय में पुस्तकालय का संचालन एवं प्रबंधन
- अनुपयोगी सामग्री से उपयोगी वस्तु निर्माण
- संस्था का वार्षिक दिवस, राष्ट्रीय त्यौहार आदि का आयोजन

वैकल्पिक क्रियाओं का पाठ्यक्रम

1. संस्था, भवन, घर, शाला परिसर की स्वच्छता व सजावट, फर्नीचर का रखरखाव एवं स्वच्छता

- स्वच्छता के लिए कार्य योजना बनाना।
- स्वच्छता के लिए आवश्यक सामग्री जुटाना।
- जीवन में स्वच्छता एवं सफाई का महत्व समझना।
- घर की स्वच्छता, घर के आस–पास की नालियों की स्वच्छता।
- सतत् स्वच्छता के लिए कार्यक्रम बनाना व उसका पालन करना।

सजावट–

- सौंदर्यानुभूति की समझ विकसित करना।
- नैसर्गिक सौंदर्य के महत्व को समझना।
- सजावट की योजना बनाना।
- संस्था व घर की सजावट के उपयोग में आने वाली वस्तुओं का संग्रह, निर्माण, आकृतियों एवं चित्रों आदि से सजावट करना।

फर्नीचर का रखरखाव :–

- फर्नीचर का रखरखाव तथा सही ढंग से उपयोग करना।
- फर्नीचर को समय–समय पर पॉलिश करवाना।
- फर्नीचर को दीमक, सीलन आदि से बचा कर रखना।

2. व्यक्तिगत तथा घरेलू हिसाब–किताब एवं बजट बनाना–

- व्यक्तिगत तथा घरेलू बजट बनाने की उपयोगिता।
- उपयोग में आने वाली सामग्री की सूची तैयार करना।
- प्रत्येक सामग्री के मूल्य की जानकारी प्राप्त करना।
- आय व आवश्यकता के अनुसार परिवार का बजट बनाना।
- आय–व्यय का लेखा–जोखा रखना व महत्व समझाना।
- वर्तमान आय–व्यय के लेखों की पिछले से तुलना करना।

3. बांधनी एवं बटिकः–

- बांधनी एवं बटिक का अर्थ, इतिहास।
- रंग, डिजाइन का ज्ञान कराना।
- बांधनी एवं बटिक बनाने में उपयोग करने वाली सामग्री का ज्ञान।

4. काष्ठ कला :–

- लकड़ी की किस्म एवं उसकी उपयोगिता जानना।
- लकड़ी को सुरक्षित रखने की विधियाँ तथा विभिन्न प्रकार की लकड़ी के गुण जानना।
- कार्य करते समय सावधानियाँ एवं उपचार ।
- औजारों का वर्गीकरण करना।
- औजारों का रखरखाव तथा सही ढंग से उपयोग करना।
- वार्निश बनाने की विधि तथा पॉलिश करना, स्प्रे पॉलिश बनाना तथा वार्निश पॉलिश व स्प्रे पॉलिश के गुण, अवगुण एवं अंतरों को समझना।

5. पशुपालन

- पशुपालन के महत्व को समझाना
- पशुपालन के लाभ बताना।
- पशु के बीमार होने पर तुरंत उपचार करवाना।
- पशुओं के रखरखाव पर ध्यान देना।

6. बायोगैस प्लांट की जानकारी एवं रखरखाव

- बायोगैस का महत्व व उपयोग बताना।
- बायोगैस प्लांट के निर्माण की जानकारी देना।
- बायोगैस प्लांट के बारे में सावधानी रखना ।
- बायोगैस प्लांट का रख–रखाव बताना।

7. घरेलू उपकरणों की जानकारी, रखरखाव व मरम्मत

- घर में उपयोग होने वाले विद्युत उपकरणों की जानकारी।
- उपकरणों का उपयोग व महत्व।
- उपकरणों की साफ सफाई व रखरखाव की जानकारी।
- उपकरणों को उपयोग करने का तरीका।

8. मिट्टी या लकड़ी या फर के खिलौने बनाना

- खिलौने बनाने के साधनों की जानकारी।
- खिलौनों की उपयोगिता व महत्व।
- खिलौनों का रख–रखाव।
- खिलौने आकर्षक बनाना।
- खिलौने बनाने वाली सामग्री की जानकारी।

9. बैंक में खाता खोलना एवं ए.टी.एम. की जानकारी

- बैंक में खाता खोलने का महत्व।
- बैंक में खाता खोलने की जानकारी देना।
- बैंक में खातों के प्रकार बताना।
- ए.टी.एम. मशीन की जानकारी देना।

10. डिजाइनर मोमबत्तियों का निर्माण

- मोमबत्तियों के निर्माण कार्य में उपयोग आने वाले उपकरणों के बारे में जानना।
- मोमबत्तियों के निर्माण में उपयोग आने वाली सामग्री की जानकारी।
- मोमबत्तियों में डालने वाले रंगों के बारे में जानना।
- मोमबत्तियों की डिजाइनों के बारे में जानना।

11. खाद्य संरक्षण

- मानव स्वास्थ्य एवं पर्यावरण की दृष्टि से खाद्य पदार्थों के संरक्षण का ज्ञान ।
- खाद्य संरक्षण के लिये उपयोगी उपकरण एवं सामग्री।
- खाद्य संरक्षण के लिये उपयुक्त स्थान।
- स्थानीय व घरेलू आवश्यकता के आधार पर खाद्य संरक्षण करना।
- खाद्य पदार्थों कोखराब होने से बचाने के लिए संरक्षण के दौरान रासायनिक व प्राकृतिक उपाय अपनाना।

12. मध्यान्ह भोजन एवं उसका प्रबंधन

- मध्यान्ह भोजन योजना की जानकारी।
- विद्यालय के समय सारणी में मध्यान्ह भोजन, जलपान का उचित प्रावधान करना।
- कार्यक्रम के लिए वित्तीय प्रबंध एवं व्यवस्था हेतु कार्य समिति एवं कार्यदल का निर्माण करना।
- विद्यार्थियों द्वारा भोजन के दौरानहाथ धोने, ठीक ढंग से बैठने, जूठन न छोड़ने, बर्तनों को निश्चित स्थान पर रखने आदि के बारे में जानना।

13. प्रदर्शनी, पिकनिक, यात्रा भ्रमण आदि का आयोजन

- समूह में कार्य विभाजन कर विभिन्न क्रियाकलापों कोसुचारू रूप से करने एवं संपूर्ण आयोजन की योजना का निर्माण करना।
- प्रदर्शनी के लिए वस्तुओं का संग्रह करना, उनको सुरक्षित रखना।
- प्रदर्शनी भवन की सफाई एवं साज–सज्जा का प्रबंध करना।
- शैक्षिक भ्रमण हेतु शैक्षणिक, ऐतिहासिक, प्राकृतिक, व्यापारिक स्थलोंको देखने के उद्देश्यों को निश्चित करना एवं स्थान का चयन करना।

- भ्रमण हेतु बजट निर्माण एवं धनराशि का प्रबंधन, भ्रमण हेतु समय सारणी व आवश्यक सामग्री की चेकलिस्ट बनाना।

14. विद्यालय में पुस्तकालय का संचालन एवं प्रबंधन

- विद्यालय में पुस्तकालय का महत्व एवं उद्देश्यों को जानना।
- पुस्तकालय के लिए आवश्यक पुस्तकों का निर्धारण।
- पुस्तकों को क्रय करने की व्यवस्था।
- विद्यार्थी, अध्यापक ग्रामीणों की आवश्यकता आधारित पुस्तकें क्रय करना।
- पुस्तकों के संग्रह हेतु पंजी का निर्धारण करना।
- पुस्तकालय हेतु समिति का निर्माण करना।

15. अनुपयोगी सामग्री से उपयोगी वस्तु निर्माण

- अनुपयोगी सामग्री का उपयोग करने के तरीकों की जानकारी।
- अनुपयोगी सामग्री को एकत्र कर उसका उपयोग करना।
- इन वस्तुओं के रखरखाव की व्यवस्था करना।
- अनुपयोगी सामग्री निर्माण के दौरान उपयोग आने वाले उपकरणों की जानकारी प्राप्त करना।
- अनुपयोगी सामग्री से उपयोगी सामग्री बनाने में सावधानियों की जानकारी।

16. संस्था का वार्षिक दिवस, राष्ट्रीय त्यौहार आदि का आयोजन

- वार्षिक दिवस व राष्ट्रीय त्यौहारों का महत्व बताना।
- वार्षिक दिवस व राष्ट्रीय त्यौहारों की कार्ययोजना बनाना।
- वार्षिक दिवस व राष्ट्रीय त्यौहारों के आयोजन में विद्यार्थियों का सहयोग प्राप्त करना।
- वार्षिक दिवस व राष्ट्रीय त्यौहारों के संचालन हेतु समिति का गठन करना।
- विद्यार्थियों को अपने दायित्वों को निभाने हेतु प्रेरित करना।

नोट : उपरोक्त वैकल्पिक कियाएँ सुझावात्मक है। इसमें शिक्षक शिक्षा संस्थान द्वारा स्थानीय संसाधनों और कौशल से संबंधित विशेषज्ञों की उपलब्धता के आधार पर अन्य वैकल्पिक कियाओं को भी जोड़ाजा सकता है।

8.संदर्भ ग्रंथ(Bibliography) :–

- कार्यानुभव शिक्षा– राधा प्रकाशन मंदिर प्रा.लि., आगरा प्रो श्रीकृष्ण दुबे, प्रो.एच.एस. शर्मा ।
- प्रोडक्शन टैक्नोलाजी ऑफ वेजीटेबल क्राप्स – डॉ. एस.पी.सिंह
- वेजीटेबल प्रोडक्शन– डॉ. डी.व्ही.एस.चौहान
- फ्लोरीकल्चर प्रोडक्शन– टी.के. बोस
- हैण्ड बुक ऑफ हार्टीकल्चर– डॉ. के.एन. चढ्ढा

डी.एल.एड.प्रथम वर्ष
शाला इंटर्नशिप

पूर्णांक –200
बाह्य अंक –100
आंतरिक अंक –100
कालखंड– 40 दिवस +30 दिवस

प्रस्तावनाः–

शाला इंटर्नशिप कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य छात्राध्यापकों को अभ्यास के लिए अर्थपूर्ण शिक्षण अनुभव के अवसर उपलब्ध कराना है।यह कार्यक्रम विद्यालय की समस्त शैक्षिक गतिविधियों को सीखने के अवसरछात्राध्यापकों को प्रदान करता है। छात्राध्यापक शालेय गतिविधियों में एक नियमित शिक्षक की तरह सक्रिय भागीदारी करते हुए अपनी सृजनशीलता को बढ़ाता है,। इस उद्देश्य की प्रतिपूर्ति के लिए आवश्यक है किकार्यक्रम में छात्राध्यापकों को शाला में भागीदारी के अवसर और सृजनात्मक नवाचारो की स्वतंत्रता मिले, साथ ही बच्चों को भी नवाचारी शिक्षण पद्धतियों का लाभ प्राप्त हो सकें। भावी शिक्षक तैयार करने में शाला इंटर्नशिप कार्यक्रम की महत्वपूर्ण भूमिका तो है ही, लेकिन यह कार्य चुनौतीपूर्ण भी हैं। एन.सी.एफ. 2005 में शिक्षक को एक सशक्त और पेशेवर शिक्षक के रुप में परिकल्पित किया गया है। शिक्षक की व्यावसायिक तैयारी के लिए एन.सी.एफ.टी.ई. 2009 ने भी कई सुझाव दिए है, जिसे शाला इंटर्नशिप कार्यक्रम की सहायता से छात्राध्यापकको शिक्षा के सिद्धांतों के साथ–साथ शाला में सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को समझने के अवसर दिए जाए।

यह कार्यक्रम पूर्णतः क्षेत्र आधारित है, इसलिए छात्राध्यापकों को सीधे समस्याओं से जूझते हुए सीखने का अनुभव मिलेगा।छात्राध्यापक को कक्षा में पढ़े गए सैद्धांतिक पक्षों को विद्यालय में परखने के अवसर मिलेगें साथ ही साथ बच्चों व कक्षागत प्रक्रियाओं को समझने में वे सैद्धांतिक शिक्षण पद्धतियों का उपयोग करने में समर्थ हो सकेंगें।

शाला इंटर्नशिप कार्यक्रम अर्न्तगत छात्राध्यापक से अनेक अपेक्षाएँ है, जिन्हें उसे दोनों वर्षों में प्राप्त करना होगा। प्रथम वर्ष में विशेष ध्यान इस बात पर दिया जाएगा कि छात्राध्यापक का परिचय विद्यालय से, विद्यालय के वातावरण से, बच्चों को समझने तथा सीखने–सिखाने की प्रक्रिया से हो।द्वितीय वर्ष में यह अपेक्षित है कि छात्राध्यापक विद्यालय में एक नियमित शिक्षक की भांति कार्य करें किंतु इसमें उनकी सहायता शिक्षक प्रशिक्षक संस्थाएँ अपने अकादमिक पर्यवेक्षकों के मार्गदर्शन और फीड बैक के साथ करेंगी।

शाला में इंटर्नशिप कार्यक्रम –प्रथम वर्ष

विशिष्ट उद्देश्य :–

- सीखने–सिखाने की प्रक्रिया तथा छात्रों की गतिविधियों का शाला में अवलोकन करना।
- बच्चों से जुड़कर उनकी सामाजिक,आर्थिक व सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को जानकर बच्चों से प्रभावी तरीके से बातचीत कर पाना।

- पाठ्य पुस्तकों एवं स्रोत संदर्भ सामग्रियों का बाल–विकास एवं शिक्षण पद्धतियों के संदर्भ में विश्लेषण कर मूल्यांकन एवं समीक्षाकरना।
- बाल साहित्य, पाठ्यपुस्तकें, गतिविधियाँ, भ्रमण तथा खेल जैसे उपलब्ध स्रोत सामग्री के साथ अधिगम दृष्टि विकसित करना।
- नवाचारी केंद्रों में सीखे गए सैद्धांतिक ज्ञान का नियमित अभ्यास में परिलक्षित होना।
- विद्यालय के प्रभावी प्रबंधन व संचालन के संदर्भ में समुदाय की भूमिका को समझना।
- विभिन्न विषयों को पढ़ाने की योजना बनाकर उसका कक्षा में क्रियान्वयन करना।
- शिक्षण–प्रक्रिया में सतत् एवं व्यापक मूल्याकंन के विभिन्न तरीकों को समझना एवं नए तरीके खोजना।
- विद्यालय के वातावरण को समझना व विद्यालय की परिस्थितियों के अनुसार नवाचार हेतु अभिप्रेरित होना, चुनौतियों को स्वीकारना।

उक्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए 70 दिवस के शिक्षण में इंटर्नशिप कार्यक्रम को 3 चरणों में विभक्त किया गया है

शाला में इंटर्नशिप कार्यक्रम– 70 दिवस

चरण	कार्यक्रम एवं गतिविधियाँ	दिवस
प्रथम	इंटर्नशिप की पूर्व गतिविधियाँ (तैयारी)	30
द्वितीय	इंटर्नशिप दौरान गतिविधियाँ (शाला का वास्तविक अनुभव)	40
तृतीय	इंटर्नशिप के पश्चात की गतिविधियाँ (समालोचनात्मक चिंतन)	–

(प्रथम चरण (संस्थान स्तर पर)

इंटर्नशीप की पूर्व गतिविधियाँ (तैयारी)		
क्रमांक	**गतिविधि का नाम**	**दिवस**
1.	संपूर्ण इंटर्नशिप कार्यक्रम पर उन्मुखीकरण एवं अभ्यास हेतु विद्यालयों का चयन–संस्थान द्वारा	**01**
2.	संस्थान के द्वारा माइक्रो टीचिंग के कौशलों पर उन्मुखीकरण	**10**
3.	पाठ्य पुस्तकों (हिन्दी/गणित/पर्यावरण अध्ययन) एवं स्रोत सामग्री के समालोचनात्मक विश्लेषण पर कार्यशाला	**02**
4.	स्रोत सामग्री की उपलब्धता तथा विकास एवं शिक्षण अधिगम सामग्री निर्माण पर कार्यशाला	02
5.	कक्षागत प्रक्रियाओं पर आधारित क्रियात्मक शोध पर कार्यशाला	02
6.	सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन परउन्मुखीकरण	02
7.	इकाई योजना एवं पाठ योजना निर्माण (हिन्दी एवं गणित)पर कार्यशाला (निर्माणवाद पर आधारित पाठ प्रदर्शन सहित)	05
8.	चयनित विद्यालय के संस्था प्रमुखों का उन्मुखीकरण (इंटर्नशिप गतिविधियों से परिचय,मूल्यांकन प्रपत्र,संस्था प्रमुख की भूमिका पर चर्चा)	01
	छात्राध्यापक,मेन्टर (आवंटित कक्षा का शिक्षक/विषय शिक्षक एवं संस्थान	

9.	सुपरवाइजर (विषय विशेषज्ञ) का उन्मुखीकरण (प्रत्येक की भूमिका पर चर्चा)। को–टीचिंग अवधारणा (नवाचारी पद्धति),मूल्यांकन अवधारणा (रूब्रिक पर आधारित) पर प्रस्तुतीकरण ।	04
10.	'दैनंदिनी एवं रिफ्लेक्टिव जर्नल पर चर्चा	01
	योग	30

' ''इंटर्नशिप की पूर्व गतिविधियाँ'' कार्यक्रम पर छात्राध्यापकों के द्वारा दैनंदिनी एवं रिफ्लेक्टिव जर्नल पर लेखन कार्य करवाया जा सकता है,जिस पर चर्चा कर छात्रध्यापकों को फीडबैक दिया जा सकता है इसकी उपयोगिता इंटर्नशिप के दौरान परिलक्षित होना चाहिए ।

(द्वितीय चरण (शाला स्तर पर)

इंटर्नशिप दौरान गतिविधियाँ (शाला का वास्तविक अनुभव)		
क्र.	**गतिविधि का नाम**	**'कुल कार्य दिवस 40**
1.	चयनित शाला का संपूर्ण अवलोकन, कक्षा अवलोकन एवं सीखने–सिखाने के अनुभव पर प्रतिवेदन	
2.	विद्यालय अभिलेखों का अवलोकन करना एवं संधारण की प्रक्रिया को सीखना	
3.	कक्षागत प्रक्रियाओं पर आधारित क्रियात्मक शोध कार्य	
4.	पाठ्य पुस्तकों (प्राथमिक स्तर–हिन्दी/गणित/पर्यावरण अध्ययन) एवं उपलब्ध स्रोत सामग्री का विश्लेषण करना तथा स्रोत सामग्री का विकासकरना	
5	विद्यालयों की गतिविधियों में भाग लेना (प्रार्थनासभा, खेलकूद, स्काउटिंग, विज्ञान क्लब, एवं मेले पर्यावरण क्लब, पुस्तकालय सांस्कृतिक, सामाजिक गतिविधियां, ''पी.टी.एम. एवं. '''एस .एम. सी. में सहभागिता)	
6.	नवाचारी अधिगम केंद्रों का भ्रमण कर रिपोर्ट लिखना।	
7.	इकाई योजना निर्माण करना।	
8.	''''पाठ योजनाओं का निर्माण एवं प्रस्तुतीकरण। (हिन्दी की 20–पाठ योजनाएँ शिक्षण अधिगम सामग्री सहित तथा 10–कक्षा अवलोकन एवं गणित की 20–पाठ योजनाएंशिक्षण अधिगम सामग्री सहित तथा 10–कक्षा अवलोकन)	
9.	सी.सी.ई. आधारित छात्रों का मूल्यांकन तथा पोर्टफोलियो का निर्माण करना	
10	संस्थान पर्यवेक्षक (सुपरवाईजर) द्वारा इंटर्नशिप कार्यक्रम का पर्यवेक्षण करना (कम से कम हिन्दी की 5– पाठ योजना एवं गणित की 5–पाठ योजना का पर्यवेक्षण)	
11	'''''दैनंदिनी एवं रिफ्लेक्टिव जर्नल लिखना।	

❖ छात्राध्यापक प्रत्येक सप्ताह 4 दिवस शाला में इंटर्नशिप के पश्चात डाइट में अपने शिक्षक प्रशिक्षक से चर्चा कर प्राप्त अनुभव पर फीड बैक प्राप्त करेगा,जिसे अगले सप्ताह अपनी पाठ योजना के प्रदर्शन के दौरान रिफ्लेक्ट कर सकेगा। शाला में अनुभव के कुल 40 कार्यदिवस होना अनिवार्य है।

'' पेरेंट टीचर मीटिंग

''' स्कूल मेनेजमेंट कमेटी

'''' छात्राध्यापकएक कार्यदिवस में अधिकतम दो पाठों का अध्यापन अभ्यास एवं एक पाठ का कक्षा अवलोकन कर सकते हैं।

''''' दैनंदिनी प्रतिदिन जबकि रिफ्लेक्टिव जर्नल के अंतर्गत साप्ताहिक अधिगम समीक्षा लिखना है।

तृतीय चरण(संस्थान स्तर पर)

क्रमांक	गतिविधि का नाम
1.	संस्थान में इंटर्नशिप के अनुभवों पर परिचर्चा (समझ का विकास व चुनौतियाँ)
2.	सहायक सामग्री की प्रदर्शनी एवं मूल्यांकन
3.	रिफलेक्टिव जर्नल व पाठ्य पुस्तक/स्रोत सामग्री के विश्लेषण से प्राप्त परिणामों को छात्राध्यापकों के पीयर ग्रुप में साझा (शेयरिंग) करना

शाला इंटर्नशिप कार्यक्रम –प्रथम वर्ष
मूल्यांकन योजना

क्र,	गतिविधि का नाम	आंतरिक मूल्यांकन		बाह्य मूल्यांकन		योग
		शाला प्रमुख द्वारा	संस्थान के विषय विशेषज्ञ के द्वारा	मौखिक (वायबा)	प्रत्यक्ष अवलोकन एवं अभिलेख आधारित	
1.	शाला अवलोकन अनुभव पर प्रतिवेदन	05	–	–	–	05
2.	विद्यालय की गतिविधियों में सहभागिता पर आधारित मूल्यांकन	05	–	–	–	05
3.	क्रियात्मक अनुसंधान प्रतिवेदन	–	05	–	–	05
4.	पाठ्यपुस्तक विश्लेषण(हिन्दी/गणित/पर्यावरण)	–	05	–	–	05
5.	इकाई योजना निर्माण	–	05	–	–	05
6.	पोर्टफोलियो का मूल्यांकन	05	–	–	–	05
7.	नवाचारी केंद्र के भ्रमण पर रिपोर्ट	–	05	–	–	05
8.	दैनंदिनी एवं रिफ्लेक्टिव जर्नल	–	05	–	–	05
9.	समालोचना पाठ 1. हिन्दी–1 पाठ 2. गणित–1 पाठ	–	 05 05	–	–	10
10.	अध्यापन अभ्यास अवलोकन(संस्थान सुपरवाइजर द्वारा) 1. हिन्दी– 05 पाठ 2. गणित– 05 पाठ	–	 05 05	–	–	10
11.	पाठयोजना का निर्माण 3. हिन्दी–20 पाठ योजना 10 शिक्षण अधिगम सामग्री 10 कक्षा अवलोकन सहित 4. गणित–20 पाठ योजना 10 शिक्षण अधिगम सामग्री 10 कक्षा अवलोकन सहित	–	 20 20	–	–	 40
12.	फाइनल पाठ–योजना 1. हिन्दी–1 पाठ 2. गणित–1 पाठ	–	–	 10 10	 40 40	 50 50
	योग	**15**	**85**	**20**	**80**	**200**

डी.एल.एड.पाठ्यक्रम

द्वितीय वर्ष

डी.एल.एड. द्वितीय वर्ष
सामाजिक, सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में संज्ञान एवं अधिगम
(प्रश्न पत्र– 8)

पूर्णांक –100
बाह्य अंक – 70
आंतरिक अंक– 30
कालखंड– 120

1. **अध्ययन का क्षेत्र (Area of study) :– बुनियादी विषय**

2. **विषय की रूपरेखा (Design of the Course) :–**

- कुछ इकाई को क्षेत्र आधारित बनाया गया है।
- प्रत्येक विषयवस्तु के लिए विशिष्ट अध्ययन सामग्री सुझाई गई है, जिसका समूह में वाचन और चर्चा की जाएगी।

3. **भूमिका (Rationale and Aim) :–**

कक्षाओं में अलग–अलग क्षमता वाले बच्चे होते हैं। कुछ बच्चे ज्ञान को सिर्फ दोहराते हुए सीखते हैं तो कुछ खुद के प्रयासों व प्रेरणा से समग्रता के साथ नए ज्ञान का सृजन और निर्माण करते है। छात्राध्यापक को शिक्षण के लिए यह समझना आवश्यक है कि बच्चे अलग–अलग सामाजिक–सांस्कृतिक परिवेश में रहते हुए भी कैसे एक समान सीखते है और कैसे अलग–अलग सीखते हैं। बच्चे दिन भर खेल में लगे रहना चाहते हैं। खेल के माध्यम से मनोरंजन और शारीरिक व्यायाम के साथ खेल–खेल में सीखने की ओर बच्चों को प्रेरित करने का कौशल छात्राध्यापक में विकसित होना आवश्यक है।

बच्चों के सीखने के विषय में मनोवैज्ञानिकों की बहुत–सी धारणाएँ हैं। इन धारणाओं के आधार पर शिक्षण विधियाँ निर्धारित की जाती हैं। छात्राध्यापक को इन धारणाओं को चुनौती देने व पुनर्निर्माण करने का अवसर देने के किए यह आवश्यक है कि वे अलग–अलग सिद्धांतों, उनकी आलोचना और उनके शैक्षिक निहितार्थ से परिचित हो। इस पाठ्यक्रम से यह भी अपेक्षा है कि छात्राध्यापकों को सिद्धांत एवं उनकी समालोचना को समझने के लिए क्षेत्र आधारित कार्य दिए जाए। छात्राध्यापकों के लिए यह समझना भी आवश्यक है कि कोई भी सिद्धांत बच्चों के सीखने के बारे में पूर्ण नहीं होता। अतः एक छात्राध्यापक के किए यह आवश्यक है कि वह अपने अनुभवों एवं समझ के आधार पर इन सिद्धांतों के निष्कर्ष से स्वयं का सिद्धांत बनाए एवं बच्चों को सीखने के किए प्रेरित करें।

विशिष्ट उद्देश्य (Specific Objectives) :–

इस पाठ्यक्रम के उद्देश्य निम्नानुसार हैं –

- बच्चे कैसे सीखते हैं ? से संबंधित विभिन्न सिद्धांतों की समझ छात्राध्यापक में विकसित करना।
- विभिन्न मनोवैज्ञानिक अधिगम और संज्ञान को किस रुप में व्यक्त करते हैं, इसकी जानकारी प्रदान कर छात्राध्यापक को बालकों की अधिगम प्रक्रिया में अधिक कुशलतापूर्वक सहयोग करने में सक्षम बनाना।

- भिन्न–भिन्न सांस्कृतिक एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य में बच्चों के विषय में जानकारी उपलब्ध कराना ताकि कक्षा में प्रविष्ट सभी बालकों के अनुकूल शिक्षण कार्य कर सकें।
- भिन्न–भिन्न वैयक्तिक क्षमता वाले बालकों की अधिगम संबंधी कठिनाईयों को समझने की योग्यता विकसित करना।
- विभिन्न अवसरों पर बच्चों के व्यवहार का अध्ययन (खेल के मैदान, पाठशाला की अन्य गतिविधियों में आदि) बच्चों के पारस्परिक व्यवहार के आधार पर निष्कर्ष निकालने व तदनुसार अपने शिक्षण में सुधार लाने में सक्षम हो पाना।
- बच्चों के भाषायी अधिगम की समझ विकसित करना।
- बहुभाषी कक्षा.कक्ष में प्रभावी ढंग से शिक्षण–कार्य को फलीभूत करने की योग्यता विकसित करना।
- आत्म पहचान एवं आत्म नियंत्रण जैसे नैतिक पहलुओं से परिचित कराना।

4. विषय का महत्व (Running Thread of the Course):–

छात्राध्यापक समझ सकेगें कि बाल विकास कैसे होता है। सामाजिक, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में कैसे सीखते हैं, व्यवहार के सिद्धांत, ज्ञानात्मक विकास, जानकारी प्राप्त करने की प्रक्रिया, सामाजिक रचनात्मकता क्या होती है? भारतीय संदर्भ में बालकेंद्रितए भौतिकए सामाजिक, सांस्कृतिक, संवेगात्मक और संज्ञानात्मक विकास कैसे होता है?

5. इकाईवार अंकों का विभाजन (Unitwise division of marks) :–

क.	इकाई का नाम	कालखंड	अंक
1	शिक्षा मनोविज्ञान	25	15
2	अधिगम एवं बुद्धि	20	15
3	व्यक्तित्व विकास में खेल की भूमिका	20	10
4	भाषा एवं संचार	30	15
5	आत्मज्ञान एवं नैतिक विकास	25	15
	सत्रगत कार्य अ. ब		**30**
	कुल अंक	**120**	**100**

7 . इकाई का अध्ययन (Units):–

इकाई 1– शिक्षा मनोविज्ञान

- अर्थ, परिभाषा, आवश्यकता एवं महत्त्व
- शिक्षा एवं मनोविज्ञान का संबंध एवं शिक्षा मनोविज्ञान की विधियाँ
- बुद्धि, अधिगम : अवधारणा एवं परस्पर संबंध

- सीखने को प्रभावित करने वाले सकारात्मक और नकारात्मक कारक (अवधान, प्रोत्साहन, रूचि, पुरस्कार एवं दंड)
- सृजनात्मकता : अर्थ एवं परिभाषा, सृजनात्मक बालक की पहचान, शिक्षा में सृजनात्मकता की उपयोगिता।

इकाई–2 संज्ञान एवं अधिगम

- व्यवहारवाद के नियम, सिद्धांत एवं उनकी समालोचना (पावलोव, स्किनर, थॉर्नडाइक, कोहलर के संदर्भ में)
- अधिगम की प्रक्रिया, प्रकार एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में सीखने का महत्त्व
- निर्माणवाद : परिचयए जीन पियाजे के संदर्भ में संज्ञानात्मक विकास का ढाँचा व प्रक्रिया
- विभिन्न अवस्थाओं में विचारों की विशेषताएँ एवं संज्ञानात्मक द्वंद्व
- वायगॉट्स्की का सिद्धांत : परिचय, झेडण्पीण्डी (Zone of Proximal Develpoment) विकास के संदर्भ में उपकरण **(Tools)** एवं प्रतीकों का महत्त्व
- सूचना प्रक्रिया उपागमः मस्तिष्क की आधारभूत संरचनाए कार्यरत स्मृति, दीर्घकालीन स्मृति, अवधान, एनकोडिंगए पुनः प्राप्ति (Retrieval), ज्ञान की संरचना (Organization) (Declarative Memory), स्कीमा (Schema change) या अवधारणात्मक परिवर्तन रू कैसे ये सतत विकसित होते हैं?
- संज्ञानात्मक विकास में व्यक्तिगत एवं सामाजिक.सांस्कृतिक अंतर : अधिगम की कठिनाइयों को समझना, पृथक्करण (Exclusion), समावेशन (Inclusion) एवं प्रभाव (Impact)।

इकाई 3– व्यक्तित्व विकास में खेल की भूमिका

- खेल का अर्थ, विशेषताएँ, महत्त्व एवं प्रकार
- व्यक्तित्त्व विकास में खेल की भूमिका रू बच्चों के शारीरिक, सामाजिक, संवेगात्मक, ज्ञानात्मक, भाषायी एवं गामक विकासमें बच्चों के खेल में सांस्कृतिक, सामाजिक एवं आर्थिक आधार पर अंतर
- खेल एवं समूह गतिविधि, खेलों के नियम, खेलों के दौरान बच्चे आपसी मनमुटाव एवं मतभेद समाप्त करना कैसे सीखते है

इकाई 4 – भाषा एवं संचार

- बच्चे संप्रेषण (Communicate) कैसे करते हैं ?
- भाषा विकास के विविध दृष्टिकोण(बच्चे प्रारंभिक अवस्था में भाषा कैसे सीखते हैं, के संदर्भ में) स्किनर, बांडुरा एवं वाल्टर्स के सामाजिक अधिगम सिद्धांत,नैटिविस्ट– चौम्साकिअन पर्सपैक्टिव
- व्यवहारवाद की समालोचना के संदर्भ में उक्त सिद्धांतों की तुलना।
- भाषा के प्रयोग : Turn Taking, अन्तः क्रिया, वार्तालाप, श्रवण
- भाषा में सामाजिक, सांस्कृतिक भिन्नता : Accents (लहजे) संप्रेषण में अन्तर, भाषिक ध्वनि संबंधी भिन्नता, बहु संस्कृतीय कक्षा के लिए निहितार्थ ।

- द्विभाषी या त्रिभाषी बच्चे : शिक्षकों के लिए निहितार्थ– बहुभाषी कक्षाकक्ष, कहानी कथन (सीखने–सिखाने के उपकरण के रूप में) ।

इकाई 5 – आत्मज्ञान एवं नैतिक विकास

8 स्वानुभूति : आत्मवर्णन, आत्म–पहचान, स्व–अवधारणा, आत्म–सम्मान, सामाजिक तुलना आन्तरिकीकरण (internalization) एवं आत्म–नियंत्रण।

9 नैतिक विकास : कोहलबर्ग एवं कैरोल गिलिगैन की समालोचना के विशेष संदर्भ में, नैतिक तर्क में सांस्कृतिक विभिन्नता।

10 व्यक्तित्व, अभिरूचि एवं रुचि का विकास

8 सत्रगत कार्य(Assignments) :–

1 सृजनात्मक परीक्षण द्वारा किन्ही पाँच बच्चों की सृजनात्मकता की पहचान करना।

2 किसी शैक्षिक खेल का निर्माण कर कक्षा में उसका उपयोग करते हुए छात्रों का मूल्यांकन करना।

3 नैतिक विकास हेतु मूल्यपरक लघु कथाओं का संग्रह करना।

4 सीखने से संबंधित विभिन्न विषयों पर सामूहिक चर्चा कराना और प्रतिवेदन तैयार करना।

5 प्रारंभिक स्तर के पाँच बच्चों के अशाब्दिक बुध्दि परीक्षण द्वारा बुध्दिलब्धि ज्ञात करना।

6 विभिन्न संज्ञानात्मक चरणों को समझने के लिए व्यक्तिगत और सामूहिक प्रस्तुतीकरण का आयोजन करके आलेख तैयार करना।

7 विभिन्न गतिविधियों के द्वारा बालकों के सीखने की अलग–अलग क्षमता का उल्लेख करते हुए सुझाव सहित आलेख तैयार करना।

8 त्यौहार और उत्सवों का आयोजन कर बालकों की समायोजन क्षमता का प्रेक्षण कर निष्कर्ष निकालना।

9 किसी अंतर्मुखी बालक की केस स्टडी कर रिपोर्ट तैयार करना।

10 आत्म–नियंत्रण के अभ्यास के लिए योगासन कराना और मुख्य आसनों के चित्र बनाना।

9.पाठ्यक्रम की अंतरण की विधियाँ (Mode of Transaction) :–

- अवधारणात्मक स्पष्टता के लिये कक्षागत चर्चाएँ की जाएँगी।
- पाठ्य वस्तु/पेपर का गहन वाचन। सूचना व सप्रेषण तकनीकी का उपयोग।
- सत्रगत कार्य में संबधित मुद्दों और संदर्भों पर व्यक्तिगत अथवा समूह में प्रस्तुतीकरण देना।

- सैद्धांतिक और व्यावहारिक गतिविधियाँ/अभ्यास/खोज यात्रा और विश्लेषण, अवलोकन से प्राप्त बातों से अर्थ निकालना व्यवस्थित आँकड़े तैयार करना। सेमीनार, प्रोजेक्ट कार्य, कार्यशाला शिक्षण, ब्रेन स्टोर्मिंग, रोल प्ले आदि।

10.संदर्भ ग्रंथों की सूची (Bibliography):–

- बिस्ट, आभारानी (प्रथम संस्करण) ,बाल मनोविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मंडल
- भटनागर, सुरेश (तृतीय संस्करण) शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का विकास, दिल्ली रू आर. एल. बुक डिपो
- भटनागर, वी (द्वितीय संस्करण) शिक्षा मनोविज्ञान, दिल्ली, आर. एल. बुक डिपो
- जीत, योगेन्द्र (प्रथम संस्करण) बाल मनोविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर
- मंगल, एस. के. (द्वितीय संस्करण)शिक्षा मनोविज्ञान, आगरापी.एच.आई.लर्निंग पी .एल .
- माथुर, एस. एस. (द्वितीय संस्करण) शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा , विनोद पुस्तक मंदिर
- पाठक ,पी. डी. (चालीसवां संस्करण) शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर
- पाण्डेय, रामशकल (तृतीय संस्करण) शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर
- शर्मा, आर. (प्रथम संस्करण) शिक्षा अधिगम मनोविज्ञान, आर. लाल.बुक डिपो
- शर्मा, वी. (पंचम संस्करण) अधिगम तथा विकास का मनोविज्ञान, आर. लाल.बुक डिपो
- वर्मा, प्रीति (प्रथम संस्करण) बाल मनोविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर
- उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान डॉ .एस .पी .गुप्ता ,डॉ.,अलका गुप्ता
- Mind in Society –Lev Vygotsky (Published by Harvard university press)
- Educational Psychology o"Kelly
- Educational Psychology , S.K. Mangal

डी.एल.एड. द्वितीय वर्ष
शिक्षक और शालेय संस्कृति
(प्रश्न पत्र – 09)

पूर्णांक –50
बाह्य अंक– 35
आंतरिक अंक–15
कालखंड –70

1. अध्ययन का क्षेत्र (Area of Study):– बुनियादी विषय

2. विषय की रूपरेखा (Design of the Course) :–

- इस विषय का अध्ययन–अध्यापन कार्यशाला द्वारा किया जाना है।
- कार्यशाला के समय विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों को आमंत्रित किया जा सकता है, ये विशेषज्ञ व्यक्तित्त्व विकास के क्षेत्रों से हो सकते हैं। छात्राध्यापकों द्वारा इसका प्रस्तुतीकरण किया जाएगा।
- इन कार्यशालाओं में छात्राध्यापकों के माध्यम से अंतःक्रिया, विभिन्न मुद्दों पर चर्चा, एकल या सामूहिक रुप में प्रस्तुतीकरण, वाद–विवाद, रोल प्ले, केस स्टडी, तथा अन्य उपयुक्त गतिविधियों को संस्थान के विशेषज्ञों द्वारा शामिल किया जा सकता है।

3. भूमिका (Rationale and Aim):–

इस पाठ्यक्रम का लक्ष्य छात्राध्यापकों में शिक्षा के प्रति अपनी दृष्टि (vision) विकसित करने में सहायता करना व इस दृष्टि (vision) व उद्देश्यों को प्राप्त करने हेतु शिक्षक में आवश्यक सकारात्मक दृष्टिकोण व पेशेवर योग्यताएँ विकसित करना है। चूंकि शिक्षक का दृष्टिकोण एवं योग्यताएँ एक समृद्ध शालेय/कक्षा संस्कृति निर्मित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, अतः यह पाठ्यक्रम शालेय/कक्षा संस्कृति के अवयवों पर भी चर्चा करता है एवं क्रियात्मक अनुसंधान से परिचय कराता है।

4. विशिष्ट उद्देश्य (Specific Objectives) :–

- कक्षा संस्कृति के महत्त्वपूर्ण अवयवों को समझना एवं समकालीन शैक्षिक विचारों के अनुसार कक्षा संस्कृति विकसित करने के रास्ते तलाशना।
- शिक्षा के समकालीन संदर्भ को समझते हुए शिक्षा के प्रति स्व–दृष्टि विकसित करना।
- क्रियात्मक अनुसंधान करने के कौशलों को जानना।
- शाला की कार्य संस्कृति में क्रियात्मक अनुसंधान के महत्व को समझना।
- एक समृद्ध शालेय/कक्षा संस्कृति निर्मित करने में आवश्यक शिक्षक के अभिलाक्षणिक गुणों को समझना।

5. **इकाईवार अंकों का विभाजन (Unitwise division of marks) :–**

क्र.	इकाई	विषय	कालखंड	अंक
1	1	शिक्षा के प्रति दृष्टि का विकास	25	10
2	2	सकारात्मक कक्षा संस्कृति का विकास	25	10
3	3	क्रियात्मक अनुसंधान	20	15
		सत्रगत कार्य	–	**15**
		कुल योग	**70**	**50**

6. **इकाई का अध्ययन (Units) :–**

इकाई 1 शिक्षा एवं शिक्षक के प्रति दृष्टिकोण

- अग्रणी शिक्षा शास्त्रियों के शैक्षिक दृष्टिकोण ।
- बदलते संदर्भ में शिक्षक की भूमिका एवं उत्तरदायित्व।
- एक अच्छे सुविधादाता (facilitator) के रूप में शिक्षक में आवश्यक गुणों और कौशलों का विकास।
- व्यक्तिगत दृष्टिकोण और उसमें शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को जानना और समझना।
- रोल मॉडल के बारे में शिक्षकों के अभिलाक्षणिक गुणों के प्रभाव को समझना और उनको साझा करना।

इकाई 2 शालेय एवं कक्षा संस्कृति

- कक्षा संस्कृति निर्मित करने में शिक्षक की भूमिका।
- कक्षा संस्कृति में नवाचार–वैकल्पिक शिक्षा एवं कक्षा संस्कृति।
- शालेय एवं कक्षा संस्कृति–अवधारणा एवं समकालीन संदर्भ पर एक दृष्टि।
- कक्षा संस्कृति के कुछ महत्त्वपूर्ण अवयव– भय और विश्वास, प्रतिस्पर्धा और सहयोग, स्वतंत्रता और अनुशासन, समूह निर्माण एवं समूह कार्य, द्विपक्षीय संप्रेषण, शिक्षकों और विद्यार्थियों के मध्य शक्ति समीकरण/सामंजस्य के मुद्दे इत्यादि।
- विद्यालय संस्कृति को प्रभावित करने वाले कारक–सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक कारक, व्यक्तिगत भिन्नताएँ, अंधविश्वास, पारंपरिक धार्मिकता, तार्किकता, नैतिकता, आध्यात्मिक विज्ञान के मुद्दे इत्यादि।

इकाई 3 –क्रियात्मक अनुसंधान

- क्रियात्मक अनुसंधान– क्यों, क्या और कैसे ?
- शालेय व कक्षा संस्कृति के अवयव के रूप में क्रियात्मक अनुसंधान।

7. **सत्रगत कार्य (Assignments) :–**

- किन्हीं दो विद्यालयों की शालेय संस्कृति का तुलनात्मक अध्ययन कीजिए।
- विद्यालय संस्कृति को प्रभावित करने वाले विविध कारकों (सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक कारक, आदि) से पड़ने वाले प्रभावों का अवलोकन व तथ्य आधारित वर्णन कीजिए।
- शालेय संस्कृति के निर्माण में कक्षा शिक्षक की भूमिका एवं व्यवहार पर आलेख लिखिए।
- शिक्षक व छात्रों के बीच अंतर्संबंध व कक्षागत प्रक्रिया में अन्तरण (ट्रांसेक्शन) के विविध चरणों पर अनुसंधान कर प्रतिवेदन तैयार कीजिए।
- शाला विकास योजना के निर्माण और क्रियान्वयन के दौरान संभावित टकराव व समस्या निदान पर योजना बनाइए।

8. **पाठ्यक्रम की अंतरण की विधियाँ (Mode of Transaction):–**

- कक्षा शिक्षण के लिये सक्रिय अधिगम प्रविधि का उपयोग प्रभावी होगा।
- क्रियात्मक शोध का प्रदर्शन।
- इस विषय की कार्यशाला के लिए कोई निर्धारित मानक सामग्री नहीं है। ऐसी अपेक्षा है कि इस क्षेत्र के व्यवसायिक विशेषज्ञों की सहायता से छात्राध्यापकों के लिए विशेष प्रकार की गतिविधियों की रूपरेखा तैयार करवाई जाए। इसमें छात्राध्यापक समसामयिक विषयों को लेकर समूह में या व्यक्तिगत रूप से सुविधादाता के साथ चर्चा करके अपनी समझ बनाएंगे।

9. **संदर्भ ग्रंथों की सूची (Bibliography):–**

- Krishna Murti. J. , On Education, Krishnamurti Foundation Trust.
- Shri Aurobindo and Mother, on Education, Pondichery. India, Shri Aurobindo Ashram.
- कृष्णकुमार–राज समाज और शिक्षा।
- तोतोचान –नेशनल बुक ट्रस्ट।
- गिजु भाई बधेका, शिक्षक हों तो
- गिजु भाई बधेका, प्राथमिक शाला में शिक्षक

डी.एल.एड.द्वितीय वर्ष
शालेय संस्कृति, नेतृत्व एवं परिवर्तन
(प्रश्न पत्र– 10)

पूर्णांक –50

बाह्य अंक –35

आंतरिक अंक –15

कालखंड –70

1. अध्ययन का क्षेत्र (Area of Study) :– बुनियादी विषय

2. विषय की रूपरेखा (Design of the Course) :–

- पाठ्यवस्तु निर्माण में सैद्धांतिक पहलुओं को शाला एवं अन्य संस्थाओं में सूक्ष्म रूप से अध्ययन करने का प्रावधान किया गया है।
- पाठ्यवस्तु को समझने के लिए शिक्षा तंत्र के विभिन्न पदाधिकारियों, छात्रों व समुदाय से अंतःक्रिया (संवाद व साथ में कार्य करना) अत्यन्त आवश्यक होगी।

  प्रत्येक पाठ्यवस्तु के लिये विशिष्ट पाठ्य सामग्री गहन अध्ययन हेतु सुझावात्मक रुप से दी गई है।

3. भूमिका (Rationale and Aim):–

शिक्षा तंत्र का उद्देश्य बच्चों के लिये वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सार्थक एवं आनंददायी वातावरण में अधिगम हेतु अनुभवों को उपलब्ध कराना है। इस उद्देश्य की पूर्ति में नीति–निर्माण एवं नीति के क्रियान्वयन से जुड़े सभी अकादमिक एवं प्रशासनिक लोगों व संस्थाओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका है व इन सभी की अंतःक्रिया शालेय संस्कृति के निर्माण में भी योगदान करती है।

शालेय संस्कृति शाला से प्राप्त होने वाले परिणामों या यूं कहें कि शाला की प्रभावशीलता पर व्यापक रुप से असर डालती है। शाला में छात्रों के साथ शिक्षकों की अंतःक्रिया, शिक्षकों के आपस के संवाद के मौके व उनकी गुणवत्ता, शिक्षकों व प्रधानाध्यापकों का अपने उच्चाधिकारियों से संवाद का तरीका, छात्राओं व शिक्षिकाओं के साथ विद्यालय के छात्रों व पुरुष साथियों का व्यवहार, निर्णय प्रक्रिया में सभी के विचारों को सुनने के मौके, विद्यालयीन प्रक्रियाओं में समुदाय की भागीदारी की प्रकृति एवं गुणवत्ता इत्यादि सैकड़ों ऐसे अवयव हैं, जो किसी विद्यालय की संस्कृति को परिभाषित करते हैं। ये सभी अवयव उस शाला की शिक्षा की गुणवत्ता पर महत्वपूर्ण रुप से असर डालते हैं। अतः शिक्षा तंत्र की समझ के साथ–साथ शिक्षक को शालेय संस्कृति की अवधारणा, उसके अवयवों व नवीन शैक्षिक विचारों के अनुरुप एक समृद्ध संस्कृति के विकास के अनुकूल व प्रतिकूल कारकों को समझना आवश्यक है, तभी शिक्षक अपनी शाला में एक समृद्ध संस्कृति के निर्माण में सहभागी हो पाएगा।

इसके साथ ही शालाओं के संचालन एवं समृद्ध शालेय संस्कृति के निर्माण में किस प्रकार के नेतृत्व एवं प्रबंधन की आवश्यकता है इस पर भी समझ बनाना आवश्यक होगा। शाला नेतृत्व एवं प्रबंधन में समुदाय एवं पालक भी भागीदार बनें यह भी समझना आवश्यक है। शाला के कुशल प्रबंधन हेतु शाला प्रभावशीलता के मापदण्ड तय करना व उन पर काम करना होगा जिससे शाला की उत्तरोत्तर प्रगति सुनिश्चित हो सके व नवीन शैक्षिक विचारों के अनुसार शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति की ओर शाला अग्रसर हो सके।

4. विशिष्ट उद्देश्य (Specific Objectives) :–

- भारतीय शिक्षा तंत्र की संरचना एवं कार्यप्रणाली से परिचित हो सकेंगे।
- शालेय संस्कृति से जुड़े विभिन्न अवयवों पर व्यापक समझ विकसित कर सकेंगे व एक समृद्ध संस्कृति विकसित करने हेतु नवाचार कर सकेंगे।
- नवीन शैक्षिक विचारों व स्थानीय संदर्भों को ध्यान में रखते हुए शालेय प्रभावशीलता की अवधारणा व उससे जुड़े पहलुओं को परिभाषित कर सकेंगे। शालेय प्रभावशीलता के मापदण्ड निर्मित कर सकेंगे व उनको प्राप्त करने के तरीकों पर समझ विकसित कर सकेंगे। शालेय प्रभावशीलता एवं शालेय संस्कृति के अंतर्संबंधों को समझ सकेंगे।
- नवीन शैक्षिक विचारों के अनुरूप बदलाव हेतु शाला में समृद्ध संस्कृति के निर्माण एवं शाला प्रभावशीलता के मापदण्डों को प्राप्त करने हेतु आवश्यक नेतृत्व एवं प्रबंधन के कौशलों पर समझ विकसित कर सकेंगे।
- शाला एवं समुदाय के अंतर्संबंधों को समझ सकेंगे। विद्यालय विकास की अवधारणा समझ सकेंगे व विद्यालय विकास योजना बना सकेंगे।
- सत्रगत कार्य के द्वारा पाठ्यक्रम में वर्णित सभी विषय वस्तु पर व विशेष तौर पर 'शिक्षा में परिवर्तन हेतु नेतृत्व' पर समझ बना सकेंगे।

5. विषय का महत्त्व (Running Thread of the Course) :–

यह विषय छात्राध्यापकों में शालेय संस्कृति व शिक्षा की गुणवत्ता में अंतर्संबंध स्थापित करने में मदद करेगा। साथ ही शिक्षा तंत्र की संरचना व उसकी अंतःक्रियाओं से संस्कृति निर्माण में प्रभाव डालने वाले कारकों को समझने में मदद करेगा। नवीन शैक्षिक विचारों को शालेय संस्कृति का भाग बनाते हुए शाला प्रभावशीलता बढ़ाने हेतु किस तरह के नेतृत्व एवं प्रबंधन की आवश्यकता है, इस पर समझ विकसित करने में यह विषय मदद करेगा। इस संदर्भ में शिक्षक की विशिष्ट भूमिका व शिक्षक किस तरह शाला प्रमुख के साथ मिलकर शाला में अच्छे परिवर्तन के प्रयास की पहल कर सकते है। इस पर समझ बनाने में भी यह विषय शिक्षक को दिशा प्रदान करेगा।

6 इकाईवार अंकों का विभाजन(Unitwise division of marks) :-

क्र.	इकाई	विषय	कालखंड	अंक
1	1	भारतीय शिक्षातंत्र की संरचना एवं प्रक्रिया	20	10
2	2	शालेय प्रभावशीलता के मापदण्ड	15	07
3	3	शाला नेतृत्व एवं प्रबंधन	10	05
4	4	शैक्षिक परिदृश्य में बदलाव	15	07
5	5	शाला विकास में शिक्षक एवं समुदाय का योगदान	10	06
		सत्रगत कार्य	—	**15**
		कुल योग	**70**	**50**

7 इकाई का अध्ययन (Units) :–

इकाई–1 भारतीय शिक्षातंत्र की संरचना एवं प्रक्रिया (Structure and Processes of the Indian Education System)

- शिक्षा तंत्र की संरचना– राष्ट्रीय,राज्य एवं जिला स्तर
- विभिन्न प्रशासनिक संगठनों के अंतर्गत शालाओं के प्रकार
- शिक्षक एवं प्रधानाध्यापक की भूमिका एवं दायित्व
- शाला और सहयोगी संगठन के संबंध– शासकीय एवं अशासकीय संगठन
- शाला की कार्यप्रणाली को प्रभावित करने वाली शैक्षिक नीतियों की समझ एवं व्याख्या
- शाला संस्कृति, संगठन, नेतृत्व और प्रबंधन से आशय

इकाई–2 शालेय प्रभावशीलता के मापदण्ड (Standards of School Effectiveness)

- शाला की प्रभावशीलता से आशय एवं उसका आकलन
- शालेय संस्कृति एवं शालेय प्रभावशीलता के अंतर्संबंध
- शालेय मापदंडों का विकास एवं समझ
- शाला एवं कक्षागत प्रबंधन में शिक्षक की भूमिका
- कक्षागत संप्रेषण एवं कक्षागत बहुस्तरीय अधिगम
- शाला कैलेंडर एवं गतिविधियाँ

इकाई–3 शाला नेतृत्व एवं प्रबंधन (School Leadership and Management)

- प्रशासनिक नेतृत्व
- टीम नेतृत्व– टीम तैयार करना एवं टीम में कार्य करना
- पेडॉगॉज़िकल लीडरशिप (विषयगत क्षेत्र में नेतृत्व)
- शालेय शिक्षा में परिवर्तन लाने हेतु नेतृत्व
- शालेय संस्कृति में परिवर्तन प्रबंधन

इकाई–4 शैक्षिक परिदृश्य में बदलाव हेतु पहल(Initiatives for Educational Change)

- शैक्षिक परिवर्तन के विशिष्ट प्रयास : होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम; ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड; शिक्षक समाख्या; डी.पी.ई.पी. एवं सर्व शिक्षा अभियान।
- शिक्षा में समता की अवधारणा
- बालिका शिक्षा हेतु प्रोत्साहन एवं योजनाएँ
- शिक्षा एवं शाला विकास से संबंधित मुद्दे

इकाई–5 शाला विकास में शिक्षकों एवं समुदाय का योगदान (Contribution of Teachers and Community in School Development)

- शाला विकास में शिक्षक एवं समुदाय के बीच समन्वय की आवश्यकता एवं महत्त्व
- शाला विकास योजना– क्या, क्यों और कैसे ?
- शाला विकास योजना– शिक्षक की भूमिका, समुदाय की भूमिका
- शासकीय एवं अशासकीय संस्थाओं से सहयोग एवं संवादशीलता।

8 पाठ्यक्रम की अंतरण की विधियाँ (Mode of Transaction) :–

1. कक्षागत शिक्षण में संप्रेषण की आधुनिक तकनीकों का उपयोग।
2. द्विपक्षीय संप्रेषण।
3. विषयवस्तु अनरूप समूह कार्य।
4. शाला संचालन प्रक्रिया का अवलोकन और अभिलेखीकरण करना।
5. विषयवस्तु के अनुरूप विभिन्न प्रकार की शालाओं का भ्रमण एवं सूक्ष्म अध्ययन।
6. विशिष्ट पाठ्यवस्तु का गहन अध्ययन।

9 सत्रगत कार्य (Assignments) : –

सत्र में एक प्रोजेक्ट कार्य अनिवार्यतः करना होगा। यह प्रोजेक्ट छात्राध्यापकों के अवलोकन कक्षागत विचार–विमर्श, सहभागिता एवं क्षेत्र परीक्षण को प्रदर्शित करने वाला होगा।

सुझावात्मक क्षेत्र :

1. कक्षा व्यवस्थापन
2. संस्था प्रमुख की भूमिका
3. सहयोगी संगठन से अंतःक्रिया
4. शाला विकास की योजना बनाना
5. शाला सुविधाओं की सुलभता सुनिश्चित करने हेतु शालाओं में किए गये नवाचारों का अध्ययन।
6. शाला प्रबंधन में लोकतांत्रिक प्रक्रियाएँ– बाल पंचायत / बाल संसद इत्यादि।
7. विभिन्न विद्यालयों की शालेय संस्कृति का तुलनात्मक अध्ययन।
8. शालेय संस्कृति और शिक्षा की गुणवत्ता में अंतर्संबंधों का अध्ययन।
9. शाला से समुदाय की अपेक्षाएँ एवं अपेक्षानुसार शाला में किए जा रहे प्रयासों का अध्ययन।

10 संदर्भ ग्रंथों की सूची (Bibliography) :–

1. Sood Neelam - Management of School Education in India, Delhi: APH Publishing House, 2003 (NIEPA - 2003)
2. Earley Peter and Dick Weindling – Understanding School Leadership, Sage Publication India Pvt. Ltd., 2004
3. Michael Fullan– Educational Leadership, Jossey Bass Publisher, 2006
4. एस.मजूमदार –अधो संरचना एवं शिक्षा प्रशासन।
5. बत्रा, एस. (2003) – शालेय सहयोग के लिये शाला निरीक्षण।
6. आचार्य महेन्द्र देव – विद्यालय प्रबंध, नई दिल्ली राष्ट्रवाणी प्रकाशन, (2005)
7. अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय प्रकाशन – लर्निंग कर्व (सितम्बर 2012) हिंदी अंक 4 –स्कूल नेतृत्व।
8. Webliogra http://azimpremjifoundation.org/pdf/LCSchool_LshipHINDI.pdf

डी.एल.एड. द्वितीय वर्ष
संस्कृत भाषा शिक्षण
(प्रश्नपत्र–11) (वैकल्पिक)

पूर्णांक–50
बाह्य अंक–35
आंतरिक अंक–15
कालखंड–60

1. अध्ययन का क्षेत्र (Area of study):–शिक्षा शास्त्रीय विषय

2. विषय की रूपरेखा (Design of the course) :–

संस्कृत भाषा के अध्ययन हेतु क्षेत्र के आधार पर सत्रगत कार्य दिया गया है।

3. भूमिका (Rationale and Aim):–

संस्कृत भारोपीय भाषा परिवार की भाषा है। यह विश्व की प्राचीनतम भाषाओं में से एक है। अनेक भारतीय भाषाओं के विकास में संस्कृत का महत्वपूर्ण योगदान रहा हैं। भारत की भूमि पर विकसित होने, क्षेत्र विशेष से संबद्ध नहीं होने और संस्कृत साहित्य की प्रचुर उपब्धता के आधार पर इस भाषा के महत्व को अलग से रेखांकित किया जाता है। संस्कृत भाषा का विशाल साहित्य पाठकों के लिये अमूल्य निधि है। संस्कृत की मुख्यधारा में एक ओर वैदिक वाङ्मय है तो दूसरी ओर भास, कालिदास, भवभूति, भारवि, माघ, श्रीहर्ष, बाणभट्ट, भर्तृहरि जैसे रचनाकारों की कृतियाँ है। इसके साथ ही संस्कृत साहित्य की लोकधारा भी है, जिसमें सामान्य जन–जीवन की कठिनाइयों को भी स्वर मिला है।

छात्राध्यापक भाषा का उचित एवं सही प्रयोग कर सकें इसके लिए अपेक्षित दक्षताएँ तथा कौशल विकसित करने का दायित्व भाषा शिक्षक का ही होता हैं। इसके लिए आवश्यक है कि शिक्षक प्रशिक्षक संस्कृत भाषा सीखने एवं प्रयोग करने हेतु कक्षा में अनुकूल परिस्थितियों एवं अवसरों का निर्माण करें।

त्रिभाषा सूत्र के अनुसार प्रदेश के विद्यालयों में कक्षा 6 से 10 तक मातृभाषा के साथ संस्कृत को भी तृतीय भाषा के रूप में पढ़ाया जाता है।

4. विशिष्ट उद्देश्य (Specific Objectives) :–

- छात्राध्यापकों में संस्कृत भाषा के प्रति रूचि एवं समझ जागृत करना।
- संस्कृत भाषा के भाषायी कौशलों का विकास करना।
- छात्राध्यापकों को संस्कृत भाषा की शब्दावली, व्याकरण, शुद्ध उच्चारण एवं लेखन से परिचित कराना।
- संस्कृत साहित्य के अध्ययन के प्रति रूचि उत्पन्न करना एवं लेखन कौशल को बढ़ावा देना।
- छात्राध्यापकों के संस्कृत व्याकरण ज्ञान एवं उनके व्याकरण के प्रयोग कौशल में वृद्धि करना।
- छात्राध्यापकों को संस्कृत साहित्य की विभिन्न विधाओं, यथा– काव्य, कथा, गद्य आदि का शिक्षण कर सकने योग्य बनाना।
- संस्कृत भाषा की संरचना को रटे बिना समझना।
- संस्कृत माध्यम में शिक्षण की चुनौतियों को समझना।

संस्कृत के प्राचीन एवं आधुनिक साहित्यकारों एवं उनकी कृतियों से परिचित कराना।

- विभिन्न विधाओं के अनुरूप अपेक्षित एवं उपयोगी शिक्षण पद्धतियों का उपयोग कर सकना।
- आवश्यकतानुसार शिक्षण सामग्री तैयार कर सकना।
- संस्कृत में मौलिक अभिव्यक्ति को बढ़ावा देना।
- छात्राध्यापकों को संस्कृत के मूल्यांकन हेतु विभिन्न मूल्यांकन पद्धतियों से परिचित कराना एवं ब्लू प्रिंट के आधार पर संस्कृत का प्रश्न पत्र निर्माण कर सकना।

5. इकाईवार अंकों का विभाजन (Unitwise division of marks) :–

क्र.	इकाई	विषय	कालखंड	अंक
1	1	संस्कृत भाषा एवं साहित्य का सामान्य परिचय	15	08
2	2	व्याकरणिक तत्व एवं रचना	20	10
3	3	संस्कृत भाषा की शिक्षण विधियाँ	15	10
4	4	संस्कृत शिक्षण में नवाचार एवं मूल्यांकन	10	07
		सत्रगत कार्य	–	15
		कुल योग	60	50

6. इकाई का अध्ययन (Unit) :–

इकाई–1 संस्कृत भाषा एवं साहित्य का सामान्य परिचय

- संस्कृत भाषा की आवश्यकता तथा महत्व।
- संस्कृत भाषा की प्रारंभिक जानकारी वर्ण, स्वर, व्यंजन आदि का ज्ञान।
- संस्कृत की विभिन्न विधाओं यथा–काव्य, कथा, नाटक, निबंध, पत्र, संस्मरण, प्रहेलिका आदि का परिचय।
- संस्कृत के गद्य, पद्य एवं चंपू काव्य का परिचय।
- संस्कृत के प्राचीन साहित्यकारों एवं उनकी रचनाओं का संक्षिप्त परिचय।
- संस्कृत के आधुनिक रचनाकारों तथा उनकी रचनाओं का संक्षिप्त परिचय। (म.प्र. के संदर्भ में)

इकाई–2 व्याकरणिक तत्व एवं रचना

- संस्कृत भाषा की वर्णमाला, माहेश्वर सूत्र, ध्वनि, उच्चारण, शब्द एवं वाक्य रचना।
- अनुस्वार, हलंत, विसर्ग का प्रयोग।
- संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, वचन, कारक, विभक्ति, लिंग, शब्द रूप, धातु रूप, संधि, समास, उपसर्ग, प्रत्यय एवं अव्यय का सामान्य ज्ञान।
- पर्यायवाची एवं विलोम शब्द, प्रचलित सूक्तियाँ।
- सामान्य प्रचलित विषयों पर सरल संस्कृत में छोटे निबंध, गीत, कहानियां, प्रहेलिका, विनोद कणिका लिखना।
- संस्कृत गिनती 1 से 20 तक लिखना।

इकाई–3 संस्कृत भाषा की शिक्षण विधियाँ

- भाषा अनुवाद विधि, दण्डान्वय–खण्डान्वय विधि, आगमन–निगमन विधि, संभाषण विधि, अनुकरण विधि, चित्र वर्णन विधि, कहानी कथन विधि, सक्रिय अधिगम प्रविधि (एएलएम) इत्यादि।

इकाई–4 संस्कृत शिक्षण में नवाचार एवं मूल्यांकन

- सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन
- मूल्यांकन के प्रकार, विशेष शिक्षण।
- प्रश्न रचना– वस्तुनिष्ठ, लघुत्तरीय, निबंधात्मक
- ब्लू–प्रिंट के आधार पर प्रश्न पत्र रचना एवं परिणामों का विश्लेषण, आदर्श उत्तरों की रचना।
- सहायक शिक्षण सामग्री
- दृश्य, श्रव्य एवं दृश्य–श्रव्य माध्यमों का प्रयोग

7. सत्रगत कार्य (Assignments) :–

टीप–निम्नलिखित में से कोई दो प्रायोजना कार्य कीजिए।

- संस्कृत पुस्तकों की सूची बनाइए और उनमें से किसी एक पुस्तक के बारे में अपने विचार लिखिए।
- किसी कहानी / लोककथा / गीत का संस्कृत में अनुवाद कीजिए।
- संस्कृत वेबसाइट पर सरल संस्कृत गीत, कहानिया, प्रहसन आदि उपलब्ध है, उनमें से कुछ को संकलित कीजिए।
- सुभाषितानि के किन्हीं दो श्लोकों पर कहानियाँ लिखें।
- दैनिक जीवन में प्रचलित शब्दों के संस्कृत नाम खोजकर लिखें।
- व्याकरण पर आधारित चार्ट निर्माण कीजिए।

8. संदर्भ ग्रंथ (Bibliography) :–

- संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका–लेखक डॉ. बाबूराम सक्सेना,इलाहबाद
- संस्कृत भाषा शिक्षण– रामशकल पाण्डेय, इलाहबाद
- वृहद अनुवाद चंद्रिका–चक्रधर नौटियाल'हंस', मोतीलाल बनारसीदास
- रचना अनुवाद कौमुदी–डॉ. कपिल देव द्विवेदी
- संस्कृत साहित्य का इतिहास–डॉ. बलदेव उपाध्याय, चौखंबा प्रकाशन वाराणसी
- संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास–डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी
- संस्कृत हिन्दी कोश–वामन शिवराम आप्टे, मोतीलाल बनारसीदास

Diploma in Elementary Education

2nd Year - 7th Paper

Pedagogy of Language Urdu

جملہ نمبرات	50
خارجی نمبرات	35
داخلی نمبرات	15
جملہ گھنٹے	70

تعارف: Introduction

تفہیم کے ساتھ سننا، پڑھنا، تصور، غور وفکر، اظہار یعنی گفتگو اور لکھنا، زبان کی خاص مہارتیں ہیں۔ ابتدائی سطح کی تعلیم مکمل کرنے والے طلباء سے ان مہارتوں کے حصول کی توقع کی جاتی ہے۔ طلباء میں مطلوبہ لسانی صلاحیتوں کے فروغ کی ذمہ داری خاص طور سے اساتذہ کی ہوتی ہے، دیگر زبان کے اساتذہ کی طرح، اردو کے اساتذہ کو، اردو زبان کا علم ہونے کے علاوہ اُسے طلباء میں منتقل کرنے کی صلاحیت کا ہونا لازمی ہے۔ اس نقطۂ نظر سے زبان کے زیر تربیت اساتذہ کی ذمہ داری دگنی ہو جاتی ہے۔ ایک جانب اسے زبان کے علم میں عبور حاصل کرنا ہوتا ہے، اور دوسری جانب تدریسی اکتسابی عمل میں طلباء کے اکتساب میں اس کا اطلاق کرنا ہوتا ہے۔

استاذ کا خاص کام طلباء کی عمر، جماعت اور ذہنی سطح کے مطابق مواد مضمون کی پیش کش کرنا ہوتا ہے، اس کام میں معلمین کو مختلف کردار جیسے: دوست، معاون، محرک اور مواقع فراہم کرنے والا وغیرہ وغیرہ ادا کرنا ہوتے ہیں۔ کامیاب معلم وہ ہے جو خود کو علم کا ایک منبع تصور کرنے کے بجائے طلباء کو علم کی تخلیق کرنے کے مواقع فراہم کرے۔ اردو زبان کے اس نصاب کے ذریعہ معلم طالب علم کے کردار میں درج ذیل تبدیلیوں کی توقع کی جاتی ہے۔

مقاصدِ خصوصی: Specific Objectives

اس نصاب کے ذریعہ معلم طالب علم (زیر تربیت اساتذہ) میں:

- ☆ تنقیدی مطالعہ کی صلاحیت کو فروغ دینا۔
- ☆ مختصر اور سلیس اردو لکھنے کی صلاحیت کو فروغ دینا۔
- ☆ اردو زبان کے لئے جذبۂ استحسان پیدا کرنا۔
- ☆ درسی کتب کے علاوہ اکتساب کے متنوع ذرائع کا استعمال کرنا سکھانا۔
- ☆ تدریس کے مختلف طریقے سکھانا اور ضرورت و مناسبت کے مطابق ان کا اطلاق کرنا۔
- ☆ مسلسل اور جامع جانچ کے فروغ کے لئے مختلف ریکارڈ تیار کرنا۔
- ☆ اردو زبان کی بنیادی مہارتوں میں عبور حاصل کرنا اور اردو قواعد کی فہم کو فروغ دینا۔

☆ دیگر زبانوں اور اقلیتوں کی زبانوں کی جانب احترام کا جذبہ پیدا کرنا۔
☆ مقامی، علاقائی اور قومی زبانوں کی جانب رغبت پیدا کرنا۔
☆ غیر درسی کتب اور ادب کا مطالعہ کرنے کی عادت پیدا کرنا۔

اکائی وار نمبرات اور گھنٹے

نمبر شمار	اکائی کا نام	نمبرات	گھنٹے
1	زبان کی نوعیت	5	12
2	اردو زبان کی بنیادی مہارتیں	5	12
3	تدریسِ اردو کے مقاصد	5	12
4	اردو زبان کے تدریسی طریقے اور تدریسی اکتسابی وسائل (TLR)	12	20
5	تعینِ قدر: آلات و تکنیک	8	14
	کل	35	70

اکائی (۱): زبان کی نوعیت گھنٹے: 12 نمبرات: 5

☆ زبان کا مفہوم، تعریف، نوعیت اور روزمرہ زندگی میں زبان کی اہمیت۔
☆ بولی اور زبان میں فرق، مدھیہ پردیش کی بولیاں، مقامی بولی، علاقائی بولی، قومی زبان، بین الاقوامی زبان کا تصور۔
☆ اردو زبان کی ابتدا اور ارتقاء۔
☆ اردو زبان کی تدریس کی اہمیت۔
☆ اردو زبان کا مقام۔ دستورِ ہند اور موجودہ تعلیمی نظام کے تناظر میں۔

اکائی (۲): اردو زبان کی بنیادی مہارتیں گھنٹے: 12 نمبرات: 5

☆ سننا: تدریسی طریقے، مہارت کو فروغ دینے کی مختلف سرگرمیاں۔
☆ بولنا: تدریسی طریقے، مہارت کو فروغ دینے کی مختلف سرگرمیاں۔
☆ پڑھنا: تدریسی طریقے، مہارت کو فروغ دینے کی مختلف سرگرمیاں۔
☆ لکھنا: تدریسی طریقے، مہارت کو فروغ دینے کی مختلف سرگرمیاں۔

اکائی (۳): تدریسِ اردو کے مقاصد گھنٹے: 12 نمبرات: 5

☆ ابتدائی سطح پر اردو زبان کی تدریس کے مقاصد۔
☆ تدریسِ اردو کے عمومی مقاصد۔
☆ بلوم کی تعلیمی مقاصد کی درجہ بندی۔

☆ تدریس اردو کے خصوصی مقاصد۔

☆ خصوصی مقاصد کو عملی افعال کی شکل میں لکھنا۔

اکائی(۴): اردو زبان کے تدریسی طریقے اور تدریسی اکتسابی وسائل **گھنٹے: 20** **نمبرات: 12**

☆ اردو اصنافِ نثر کے تدریسی طریقے۔

☆ اردو اصنافِ نظم کے تدریسی طریقے۔

☆ اردو قواعد کے تدریسی طریقے۔

☆ اردو معلم کے اوصاف۔

☆ ایک اچھی درسی کتاب کی خصوصیات۔

☆ تدریسی اکتسابی وسائل کی تشکیل اور استعمال۔

اکائی(۵): تعینِ قدر: آلات وتکنیک **گھنٹے: 14** **نمبرات: 8**

☆ پیمائش (Measurement)، اندازۂ قدر (Assessment) اور تعینِ قدر (Evaluation) میں فرق۔

☆ مسلسل جامع تعینِ قدر Continuous Comprehensive Evaluation اور اس کے طریقے۔ جیسے: پورٹ فولیو، پروفائل وغیرہ۔

☆ تشخیصی اور معالجی تعینِ قدر۔

☆ سوالات کی اقسام۔

☆ ایک اچھے سوال نامے کی خصوصیات۔

☆ بلو پرنٹ، اسکولی تحصیلی آزمائش کی تشکیل۔

☆ ایکشن ریسرچ (عملی تحقیق) Action Research

منتقلی کا طریقہ: Mode of Transaction

طلباء کی فعال شمولیت کے ذریعہ مواد مضمون کی منتقلی درج ذیل طریقوں سے کی جائے گی:

☆ چھوٹے گروہوں میں منتخب متن کے تحت مباحثہ اور تنقیدی مطالعہ۔

☆ طلباء کو لسانی سرگرمیوں کے مواقع فراہم کرنا، جیسے: خطابت، مضمون نویسی، افسانہ نگاری، تلخیص، فی البدیہ تقریر، بیت بازی، ڈرامہ میں اداکاری وغیرہ۔

☆ معلم کے ذریعہ مثالی منصوبۂ سبق کی پیش کش Demostration

☆ بلو پرنٹ اور اسکولی تحصیلی آزمائش کی تشکیل۔

تفویضات: Assignments

☆ تدریس اردو میں پیش آنے والے مسائل۔

☆ کسی لوک کہانی کا اردو میں ترجمہ اور پیش کش۔

☆ اردو زبان کی مہارتوں کے فروغ کے لئے معاون اشیاء کی تشکیل۔

☆ لسانی وثقافتی صلاحیتوں کے فروغ کے لئے درج ذیل میں سے کسی ایک سرگرمی کا خاکہ بنائیں، جیسے: خطابت، مضمون نگاری، افسانہ نگاری، تلخیص، فی البدیہ تقریر، بیت بازی، ڈرامہ میں اداکاری وغیرہ۔

☆ ادب اطفال کی کتابوں اور مصنفوں کے ناموں کی فہرست سازی۔

☆ اردو زبان کو سیکھنے میں پیش آنے والے کسی ایک مسئلہ پر ایکشن ریسرچ کا خاکہ بنانا۔

☆ اردو کی درسی کتاب کا تنقیدی تجزیہ۔

☆ مثالی سوال نامے کی تشکیل CCE کے تناظر میں۔

تجویزہ مطالعہ جات: Suggested Readings

☆ راجیہ شکشا کیندر کے مختلف اردو ٹریننگ ماڈیولس۔

☆ دوسالہ ڈی ایڈ اردو کے ماڈیولس۔

☆ NCF 2005

☆ بھارتیہ بھاشاؤں کا شکشن۔ راشٹریہ فوکس گروپ کا آدھار پتر۔ NCF 2005

☆ آر ٹی ای (2009)

☆ سلامت اللہ: اردو کیسے پڑھائیں۔

☆ کرشن کمار: بچے کی بھاشا اور ادھیاپک۔

☆ گیجو بھائی: دواسوپن۔

☆ ساجدہ پروین: تدریس زبان اردو۔

☆ معین الدین: اردو زبان کی تدریس۔

☆ بیگ ایم کے (1995): آیئے! اردو سیکھیں، ایجوکیشنل بک ہاؤس، علی گڑھ۔

☆ بُچھ ایم (1998) اور سراج ایم: اردو اصناف نظم ونثر کی تدریس۔ این، سی، پی، یو، ایل، نئی دہلی۔

☆ نارنگ جی سی (2003): اردو کیسے لکھیں؟ این، سی، پی، یو، ایل، نئی دہلی۔

☆ جامعہ ملیہ اسلامیہ (2004): اردو اسکرپٹ تھرو انگلش۔ مکتبہ جامعہ لمیٹیڈ۔

☆ خان آر ایچ (1975): اردو کیسے لکھیں؟ (صحیح املا)۔ مکتبہ جامعہ لمیٹیڈ، نئی دہلی۔

☆ سبزواری ایس (2003): اردو لسانیات، ایجوکیشنل بک ہاؤس، علی گڑھ۔

☆ منظر او (2009): ٹیچنگ آف اردو لینگویج، شپرا پبلی کیشن، نئی دہلی۔

☆ معین الدین 2004 : ہم اردو کیسے پڑھائیں؟ مکتبہ جامعہ لمیٹیڈ۔

☆ خان آر ایچ (2001): زبان اور قواعد۔ این، سی، پی، یو، ایل، نئی دہلی۔

☆ نجم السحر اور سعید ایس (2007) تدریسِ اردو۔ پریمیئر پبلیشنگ ہاؤس، حیدرآباد۔

डी.एल.एड (द्वितीय वर्ष)
मराठी भाषा शिक्षण
(प्रश्नपत्र–11) (वैकल्पिक)

पूर्णांक–50
बाह्य अंक–35
आंतरिकअंक–15
कालखंड–60

1. अध्ययनाचे क्षेत्रः–शिक्षा शास्त्रीय विषय

2. भाषेचे औचित्य :–

आपले विचार व्यक्त करण्यासाठी आपण ज्या शब्दांचा वापर करतो त्या शब्दांच्या विशिष्ट पद्धतीने रचनेला भाषा म्हणतात। भाषा द्वारे मनुष्य आपले अनुभव व्यक्त करू शकतो, सुरक्षित ठेवू शकतो आणि त्यांना पुढच्या पीढी ला हस्तांतरित करण्यात ही यशस्वी होतो। भाषा जवळ असल्यामुळेच मनुष्य इतर प्राण्यांपेक्षा वेगळा आणि बौद्धिक रूपानी सक्षम आहे। भाषा फक्त शाळेत शिकवला जाणारा विषय नव्हे, जगात पसरलेल्या ज्ञान–विज्ञानास जाणून–समजून घेण्याच्याएक प्रभावी माध्यम ही आहे। भाषेविणा कोणत्या ही क्षेत्रात प्रगती करणे शाक्य नाही म्हणून भाषा शिक्षकाच्या रूपात छात्राध्यापकाची भूमिका फार महत्वाची आहे। त्यांचे काम फक्त भाषा शिकवयाचे नसून शिकलेल्या भाषेचा नीट विकास करणे ही आहे। मुले भाषेला योग्य आणि व्यवस्थित प्रकारे उपयोगात आणू शकतील ह्या साठी हव्या त्या दक्षता त्यांच्यात विकसित करणे हे भाषा शिक्षकांचे प्रमुख काम आहे। त्याच्या साठी वर्गात भाषा शिकायची आणि तिचा यथायोग्य उपयोग करण्याची संधि शिक्षकांनी निर्मित करणे गरजीचे आहे।

3. विभागवार गुण विभाजन :–

क्र.	क्र. विभागाचे नाव	कालखंड	गुण
1	भाषेची प्रकृति	15	5
2	भाषा विषयक कौशलांचा विकास	20	10
3	भाषा शिक्षणाच्या पद्धति व्याकरण अध्ययन	15	10
4	मूल्यांकन आणि नवाचार		10
	सत्रगत कार्य		15
	एकूण अंक	60	50

4. एकक (विभाग)

विभाग– 1 भाषेची प्रकृति

- भाषा म्हणजे काय
- भाषेच वैशिष्ट्य
- भाषेचे कार्य

- भाषा– विचार आणि संप्रेषणाच्या माध्यमाच्या रूपात

विभाग– 2 भाषाविषयक कौशलांचा विकास

- ऐका आणि बोला – वर्गात संभाषणाचा महत्व, वर्गात संभाषणानिमित्त गतिविधि,विविध सूचना समजून घेणे
- वाचन – वाचन म्हणजे काय, प्राथमिक इयत्तेत वाचन शिकणे, वेगवेगळया प्रकार चे मजकूर (पाठ्य) वाचणे
- लेखन– लेखन म्हणजे काय, वाचन आणि लेखनातील संबंध, भाषा एवं विचाराच्या स्तरावर सुसंबध्द लेखन
- विविध लेखन अभ्यास– पत्र, कहाणी, लेख, बातमी, नोंद पुस्तिका वगैरे

विभाग– 3 भाषा शिक्षणाच्या पद्धति / व्याकरण अध्ययन

- मराठी भाषा शिक्षणाच्या विविध पद्धतींचे तुलनात्मक अध्ययन
- व्यावहारिक व्याकरण शिक्षण अभ्यास इयत्ता (1–5 च्या पुस्तकातील व्याकरण)

विभाग–4– भाषेचे मूल्यमापन व नवाचार

- मूल्यमापन – मराठी भाषेच्या संदर्भात
- सतत व समग्र मूल्यमापन
- ब्लूप्रिंट व प्रश्नपत्र निर्माण
- समस्यांची जाण व विशेष शिक्षण
- दृश्य–श्रव्य माध्यमांचा प्रयोग

5. सत्रगत कार्य (Assignments) :–

टीप– खालील पैकी कोणते ही दोन उपक्रम (प्रयोजना) करावे। प्रत्येकी 5 अंक निर्धारित आहेत.

1. स्थानिक भाषेतील कहाणीला मराठी भाषेत लिहावे।
2. उपक्रम आधारित शिक्षणातील एक एक पाठयोजना (गघ व पद्य वेगवेगळे) तयारकरावी।
3. शाळेतील पुस्तकालयात उपलब्ध मराठी बाल साहित्यातील पुस्तकें व लेखाकांच्या नावांची यादी तयार करावी। आपल्या आवडीच्या एका पुस्तकाबद्दल आपले विचार लिहावे।
4. तुमच्या शाळेतील पुस्तकालयचा प्रभावी उपयोग व्हावा महणून कार्य योजना तयार करावी।
5. कोणत्याही एक घटकातल्या (यूनिट) कठीण बिंदुच्या निवारणा साठी विशेष शिक्षणाची योजना तयार करणे।
6. स्थानिक –स्थानीय समाजात प्रचलित म्हणी एकत्रित कराव्या।
7. शिक्षण सहज, रुचिकर व प्रभावी बनविण्या साठी वर्ग 1 व 2 साठी अधिगम सामग्रीचा निर्माण करणे।
8. बाल साहित्यातील 10 कविता / 5 कहाण्यांचा संग्रह तयार करावा।

6. संदर्भ ग्रंथ (Bibliography) :–

1. मराठी व्याकरण – मोरेश्वर सखाराम मोरे
2. सुलभ व्याकरण – श्री शनिवारे
3. बोबड़ गीते –
4. पंचतंत्र मराठी भाषांतर
5. इसप नीती मराठी भाषांत

D.El.Ed. SECOND YEAR

Pedagogy of English

(Paper 12)

Maximum Marks : 75

Part I (Theory) –50 marks, to be evaluated externally

Part II (Field Based Experiences) – 25 marks, to be evaluated internally

Periods -110

1. Area of Study:- Pedagogic Studies

2. Design of the Course:-

- The course contains 5 units. These units are field based and provide for practical experience to the student-teachers.
- In delivering these units, maximum time should be spent on discussing specific strategies for teaching English at the elementary level.
- Specific readings followed by group discussions will ensure better understanding of the content in the units.
- Close reading of theoretical texts in groups should be encouraged and guided.
- Part I (Theory) and Part II (Practical) will be transacted simultaneously in the classroom, but they will be evaluated separately.
- Part III (School Internship) will be of 50 days, inclusive of internship in other subjects.

3. Rationale and Aim:-

The course focuses on teaching of English at the elementary level. The aim is to expose the student-teachers to the contemporary practices in English Language Teaching. The aim is also to equip the student-teachers with knowledge and understanding of the methodology of teaching English, so that they are capable to critique the existing classroom methodology of ELT.

The theoretical perspective of the course is based on a constructive approach to language learning. After going through this course the student-teacher will be capable of creating a supportive environment for their learners to use English appropriately in context. The course specifically stresses in developing an understanding of second language learning and teaching.

4. Specific Objectives:-

- To equip the student-teachers with a theoretical perspective on teaching and learning of English as a second language
- To enable the student-teachers to grasp the general principles of language acquisition and language teaching
- To enable the student-teachers to understand young learners and their learning context
- To enable the student-teachers to develop resource materials for young learners
- To enable the student-teachers to develop classroom management skills; procedures and techniques for teaching English
- To enable the student-teachers to grasp the principles and practice of unit and lesson planning for effective teaching
- To enable the student-teachers to understand the strategies to be used in a diverse classroom with multiple levels
- To enable the student-teachers to examine the issues in language assessment and their impact on classroom teaching
- To enable the student-teachers to understand multiple assessment strategies for language learning

5. Running Thread of the Course :-

The course designed equips the student teacher with numerous teaching ideas to try out in the real classroom. Thus it is very practical in nature. These practical ideas must be related to current theory and best practice in the teaching of young learners. The student teachers must learn to make a constant theory practice connection.

Part I (Theory)

The theory paper will comprise of the following five units:

1. Teaching of English at the Elementary Level

- Perspectives of beginning of teaching English at the elementary level(including perspectives on 'appropriate age' for beginning the teaching of English)
- Learning English in a multi-lingual, multi-cultural Indian context
- Mother tongue and second language acquisition and learning; teaching English as a second language

2. Approaches and Methods of teaching English

- A historical view of English as a second language
- Different approaches to teaching of ESL: behaviouristic (direct method, audio-lingual, structural, grammar-translation method); cognitive and constructive approaches (nature and role of learner, different kinds of learners-young learners, beginners; teaching large classes; socio-psychological factors)
- Activity Based Learning (ABL), Active Learning Methodology (ALM)
- Communicative language teaching: focusing on meaning, role of text books and other resources, role of teacher, classroom management .

3. Strategies of teaching English

- Development of listening and speaking skills, role of talk in the classroom(reducing teacher talk time);Total physical response : simple instructions and story telling;Using pair work, group work to encourage speaking;Some activities for the classroom: poems, songs, story telling, role play, situational conversation
- Development of vocabulary through pictures, flow charts, language games etc.
- Development of reading skills; beginning reading, alphabet method, phonetic method; using the word wall, pre-reading, while-reading and post-reading activities; reading aloud and silent reading; practice of skimming, scanning, intensive and extensive reading; comprehension skills-guessing meaning from context
- Development of writing skills; providing triggers for writing: brainstorming discussion, mind-mapping; drafting and sequencing, controlled, guided and free writing

4. Process and planning

- Unit planning for a learner-centred classroom for teaching different genres/topics: teaching prose:reading aloud, silent reading; comprehension – mind-mapping, summarization, presentation, consolidation; enrichment) ; teaching poetry: recitation; comprehension; appreciation; teaching grammar; presentation, practice, production(making grammar meaningful and fun); teaching composition(controlled, guided, free composition; different forms of composition–paragraph, notice, message, poster, advertisement, diary entry, résumé)

- Preparation of TLM; low-cost/no-cost, using the classroom as a resource, using ICT
- Creating constructivist situations using formats like 5E's (Engage, Explore, Explain, Elaborate, Evaluate) etc

5. Assessment

- CCE – concept and procedure : assessment for learning in place of assessment of learning; maintaining teacher's diary, anecdotal record; informal feedback from the teacher; measuring progress; using portfolio for subjective assessment
- Assessing speaking and listening, reading and writing abilities through CCE
- Attitude towards errors and mistakes in second language learning

Part II (Field Based Experiences)

The students will actively perform the following activities in classroom situations, real and simulated, and will discuss freely on the strategies and importance of each one of them and submit five assignments compulsorily.

1. Integrating the teaching of English with other subjects
2. The textbook; text analysis, responding to prose and poems, strategies of teaching text and solving exercises in the textbook; Beyond the textbooks: stories, poems etc.(including children's literature)
3. Developing listening and speaking skills, following oral instructions, reciting poems, story-telling, role-play, situational talk, using pair work and group work, teaching pronunciation, rhythm, intonation and stress
4. Developing reading skills, alphabet method, phonetic method, reading aloud and silent reading, pre-reading, post-reading and while-reading activities, comprehension Exploring relationship between reading and writing, oracy and literacy
5. Developing writing skills, controlled, guided and free composition, notice, letter, diary writing, drafting emails and SMS
6. Teaching grammar as a functional aid, meaningful and fun

7. Evaluation in English, interviews, story-telling, re-telling to assess speaking and listening; reading comprehension, teacher's diary, anecdotal records, CCE, errors and mistakes, dictation
8. Lesson planning
9. Preparation of low cost TLM, analysis of TLM
10. Language games
11. Review of current assessment procedures

6. D.El. Ed. Curriculum unitwise distribution of Marks and Period Allotment

S. No.	Title	Unit No.	Name of the Unit	Marks Allotted	Periods
1	Teaching of English	1	Teaching of English at the elementary Level	05	10
		2	Methods and Approaches of teaching English	12	25
		3	Strategies of teaching English	12	25
		4	Process and Planning	15	35
		5	Assessment	06	15
			Sessional -	**25**	**-**
			Total -	**75**	**110**

7- संदर्भ ग्रंथ (Bibliography) :-

1. The Primary English Teacher's Guide Penguin (New edition) : Brewster, E, Girard D, & Ellis G (2004)
2. Tell it again! The new story telling Handbook for Teachers- Penguin: Ellis G Brewster J (2004)
3. National Curriculum Framework, New Delhi, NCERT (2005)
4. Position paper National focus group on "Teaching of English", New Delhi NCERT (2006)
5. Teaching English to Children, London – Longman, Scott, W.A. and Ytreberg, L.H. (1990)

डी.एल.एड. द्वितीय वर्ष
पर्यावरण अध्ययन शिक्षण
(प्रश्न पत्र –13)

पूर्णांक –100
बाह्य अंक –70
आंतरिक अंक –30
कालखंड – 120

1. अध्ययन का क्षेत्र (Area of study):–शिक्षाशास्त्रीय विषय

2. विषय की रुपरेखा (Design of the Course) :–

- यह पाठ्यक्रम पर्यावरण अध्ययन की प्रारंभिक स्तर तक की विषय–वस्तु को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है, जिससे विषय–वस्तु और पैडागॉगी समन्वित की जा सकें।
- पर्यावरण अध्ययन की प्रत्येक इकाई पर निर्दिष्ट कार्य (Assignment) अथवा प्रोजेक्ट कार्य डी. एल.एड. प्रशिक्षार्थियों को दिया जायेगा।
- विद्यार्थियों की सीखने की विशिष्ट समस्याओं पर केस स्टडी के अवसर भी छात्राध्यापकों को उपलब्ध होंगे, जिससे वे तात्कालिक रुप में उन समस्याओं का समाधान कर अपने शिक्षण अधिगम को प्रभावी रूप से कक्षा में क्रियान्वित कर सकेंगे।

3.प्रस्तावना (Introdation) :–

बच्चे स्वाभाविक तौर पर अपने आसपास की दुनिया के संपर्क में आते हैं जिससे रोजाना ही उनके अनुभवों में नए अनुभव, नई जानकारियाँ जुड़ती हैं और उनकी उत्सुकताओं से नए सवाल खड़े होते हैं। रोजाना उनके आस–पास घटित होने वाली घटनाओं की जानकारियों को कक्षा में स्थान देने से विद्यालयीन शिक्षा का दैनिक जीवन से जुड़ाव तो बनता ही है, बच्चों को उन अनुभवों को एक विशेष संदर्भ में देखने, जोड़ने, अपने आस–पास की समस्याओं को सुलझाने और नए ज्ञान के निर्माण के लिए मंच भी मिलता है।

उल्लेखनीय है कि पर्यावरण अध्ययन विषय को लेकर समझ लगातार एक–सी नहीं रही है। राज्य सरकार द्वारा अभी तक चलाए जा रहे पाठ्यक्रम में पर्यावरण अध्ययन को दो भागों में विभाजित करके देखा गया है। पहले भाग में भौतिक एवं जैविक पर्यावरण से वैज्ञानिक अवधारणाओं जैसे–शरीर के आंतरिक तंत्र, बल, प्रकाश प्राकृतिक संसाधन और उनके संरक्षण आदि को स्थान मिला है, तो दूसरे भाग में सामाजिक अध्ययन से संबंधित अवधारणाओं जैसे मानव विकास की कहानी लोकतंत्र, औद्योगिक विकास, जलवायु आदि पर परिचर्चा रखी गई है, परंतु पर्यावरण अध्ययन विषय को नये तरीके से देखने की बात एन.सी.एफ.–2005 में कही गई है, वह यह मानती है कि पर्यावरण अध्ययन, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और विभिन्न पर्यावरणीय मुद्दों का एक समेकित विषय है। इन्हें अलग–अलग तरीके से देखा जाना उचित नहीं है, क्योंकि वस्तुतः यह ज्ञान इतना अलग भी नहीं है।

प्राथमिक स्तर पर बच्चों के अनुभव भी काफी समेकित होते हैं, उदाहरणार्थ–बारिश के अनुभव के साथ–साथ जीव–जंतुओं व पौधों के लिये पानी की जरूरत का एहसास भी बच्चों को होता है। इसी तरह पानी की कमी का भी अनुभव होता हैं, जैसे पीने के पानी के लिये दूर–दूर तक जाना उसको संरक्षित करना आदि मुद्दे भी इस आयु वर्ग के बच्चों के अनुभवों में शामिल होते हैं। पर्यावरण अध्ययन पाठ्यक्रम में बच्चों के अनुभव और उनके सवालों को कक्षा में लाने के लिए पर्याप्त मौके भी उपलब्ध कराए गये हैं। गतिविधियों से सीखने के अनुभवों को स्थान देने से क्रियात्मक वातावरण निर्माण के अवसर प्रदान किए गए हैं। बच्चों को केन्द्र में मानकर चलने वाली इस व्यवस्था में आकलन को लेकर भी समझ में काफी बदलाव आए हैं और इस पाठ्यक्रम से अपेक्षा है कि छात्राध्यापक इन बदलावों को समझकर अपनी कक्षाओं में अलग–अलग चर्चाएँ एवं गतिविधियाँ कराने के लिये तैयार हो सकेंगे। उनकी भूमिका को अब मार्गदर्शक के रूप में देखा जा रहा है, जो समय–समय पर उचित प्रश्न पूछ कर अपने अनुभवों से कुछ नया जोड़कर या ऐसे ही किसी और तरीकों से बच्चों को उनके ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया में सहयोग करेंगे।

पर्यावरण अध्ययन शिक्षण के इस नये पाठ्यक्रम को मूलतः पाँच भागों में बांटा गया है–

1. पर्यावरण अध्ययन की अवधारणा।
2. विषय वस्तु का कक्षा कक्ष में संपादन ।
3. पर्यावरण के संदर्भ में बच्चों की समझ।
4. पर्यावरण शिक्षा का आकलन।
5. पर्यावरण शिक्षण की योजना।

4 विषय का औचित्य एवं लक्ष्य (Rational and Aims):–

- इस पाठ्यक्रम का मुख्य लक्ष्य पर्यावरण अध्ययन का शिक्षण करने वाले शिक्षकों को इस तरह तैयार करना है कि वे पर्यावरण शिक्षा का सैद्धांतिक एवं शिक्षाशास्त्रीय आधार समझते हुए इस विषय से जुड़ी विज्ञान, सामाजिक–विज्ञान एवं पर्यावरणीय अध्ययन की अवधारणाओं को कक्षा शिक्षण के दौरान सिखा सकें।
- कक्षा में जाने से पूर्व शिक्षक इन विषयों की सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक समझ स्वयं प्राप्त करते हुए अपनी पाठ्य योजनाओं का स्वरूप इस तरह से तैयार करेंगे कि उसमें बच्चों के विचारों को, अनुभवों को एवं उनकी भागीदारी को बढ़ाने के पर्याप्त अवसर होंगें।
- छात्राध्यापक ऐसी चुनौतियाँ स्वीकार करने के लिए भी तैयार रहेंगे, जिसमें यह छात्र–छात्राओं की अवधारणाओं संबंधी भ्रमों एवं उनकी परिवेशीय समस्याओं की पहचान करते हुए उन्हें दूर करने की समझ बनाएँगे एवं जिम्मेदार नागरिक बनने की ओर अग्रसर कर सकेंगे।

5 विशिष्ट उद्देश्य (Speeifie objectives):–

- पर्यावरण से जुड़ी अवधारणाओं के बारे में छात्राध्यापक बच्चों के अनुभव और उनकी समझ के प्रति सजग हों तथा उन अनुभवों और उनके परिवेश को कक्षा में सीखने के संसाधन के रूप में प्रयोग कर सकें।

- बच्चों की जिज्ञासाओं (विशेषकर पर्यावरण के संबंध में) का सम्मान कर उन्हें प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित करना तथा उनके साथ मिलजुल कर उन्हें प्रश्नों के उत्तर खोजने की दिशा में बढ़ाना।
- कक्षा में करके सीखने के दृष्टिकोण से इकाई योजना (पाठ्य योजना) का विकास करना।
- छात्राध्यापकों को बच्चों के सीखने की गति का विभिन्न तरीकों से आकलन करने के लिए तैयार करना।
- परिवेशीय समस्याओं के प्रति जागरूक बनाना एवं उनके समाधान खोजने के लिए वातावरण निर्माण करना।

6. इकाईवार अंकों का विभाजन (Unitwise division of marks) :–

क्र.	इकाई	विषय	कालखंड	अंक
1	1	पर्यावरण अध्ययन की अवधारणा	20	10
2	2	विषयवस्तु का कक्षा कक्ष में संपादन	40	30
3	3	पर्यावरण के संदर्भ में बच्चों की समझ	20	10
4	4	पर्यावरण शिक्षा में आकलन	20	10
5	5	पर्यावरण शिक्षण की योजना	20	10
प्रोजेक्ट कार्य 10 पाठ योजनाओं पर			– –	10 20
कुल योग			120	100

7. इकाई का अध्ययनः–

इकाई–1 पर्यावरण अध्ययन की अवधारणा

- पर्यावरण शिक्षा का अर्थ, क्षेत्र एवं कौशल
- प्रकृति का महत्व, पर्यावरण पाठ्यक्रम की अधोसंरचना, पाठ्यपुस्तक विश्लेषण(प्रमुख बिंदु एवं प्रारूप)
- पर्यावरण अध्ययन–पर्यावरण शिक्षा–विज्ञान और सामाजिक विज्ञान की समझ के लिये समग्र क्षेत्र के रूप में।

इकाई–2 विषयवस्तु का कक्षा कक्ष में संपादन (शिक्षण प्रविधियाँ)

- कहानी, रोलप्ले, परिचर्चा, एकांकी, अभिनय, फिल्म डॉक्यूमेंटरी, खेल अवलोकन, भ्रमण, सर्वे प्रोजेक्ट, असाइनमेंट, प्रयोग प्रदर्शन एवं समूह, असाइनमेंट प्रयोग प्रदर्शन एवं समूह चर्चा, समस्या– समाधान , आगमन।

नोट :– (इन विधियों को निम्नांकित विषयवस्तु के साथ जोड़ते हुए स्थानीय सामग्री के प्रयोग से उदाहरणार्थ बताया जाए, जिससे कक्षा की पैडागॉगी स्थानीय संस्कृति और परिवेश में समझी जा सके)।

पर्यावरण अध्ययन–पर्यावरण शिक्षा के रूप में

- पर्यावरण शिक्षा की अवधारणा एवं आवश्यकता।
- पर्यावरण के विभिन्न प्रकार–प्राकृतिक, भौतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक पर्यावरण।
- पर्यावरणीय मूल्य एवं उनके प्रति बच्चों की जागरूकता, समाज में पर्यावरणीय जागरूकता।
- पर्यावरणीय प्रदूषण एवं संरक्षण, वर्षा जल संग्रहण।

- आर्थिक स्थायित्वता (Economic Sustainability) के लिए ऊर्जा के नवीनीकृत और अनवीनीकृत स्रोतों का उपयोग।
- अपशिष्ट पदार्थों के स्रोत एवं उनका प्रबंधन।
- पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में योगदान– सुन्दरलाल बहुगुणा, चिपको आंदोलन, मेधा पाटकर, नर्मदा आंदोलन, मोगली उत्सव आदि।

पर्यावरण अध्ययन– विज्ञान के रूप में –

- भोजन एवं उसके तत्व, शरीर के लिये भोज्य पदार्थों का स्वाथ्यवर्धक संयोजन ।
- हमारी फसलें–उद्योग, कृषि के लिए अनुकूल एवं प्रतिकूल पर्यावरणीय स्थितियाँ।
- पर्यावरणीय परिवर्तन–ओजोन परत का अपक्षय, अम्ल वर्षा ,ग्लोबल वार्मिंग, ग्रीन हाउस प्रभाव।
- प्राकृतिक आपदाएँ एवं संरक्षण के उपाय।

पर्यावरण अध्ययन–सामाजिक विज्ञान के रूप में –

- हमारा ब्रह्माण्ड– सूर्य, चंद्रमा, पृथ्वी की गतियाँ, तारे, ग्रह, उपग्रह, इत्यादि की सामान्य जानकारी ।
- प्राकृतिक परिवर्तन, दिन एवं रात का होना मौसम परिवर्तन, बिजली का चमकना, इन्द्रधनुष का बनना इत्यादि।
- डेम, खदान (खनिज दोहन) खोदने में समाज के विभिन्न संदर्भों पर पड़ने वाले प्रभावों / दुष्प्रभावों को समझना। (Critical Pedgogy)
- मध्यप्रदेश का भूगोल एवं धरातली संरचना– पर्वत, पठार, मैदान, नदियाँ, जैव विविधता, खनिज संपदा, यातायात के साधन एवं यातायात सुरक्षा के नियम।
- हमारी शासन व्यवस्था (पंचायती राज)
- नक्शा– कोई जगह कैसे ढूंढें।

इकाई–3 पर्यावरण के संदर्भ में बच्चों की समझ

- पियाजे, वायगाट्स्की, ब्रूनर और आसुबेल के परिप्रेक्ष्य में अधिगम
- बच्चों के विचार : पूर्वाग्रह एवं परिवर्ती अवधारणाएँ।
- बच्चों के विचारों की विशेषताएँ , बच्चों के विचारों पर शोध, केस स्टडी
- कक्षा शिक्षण के दौरान बच्चों के विचारों की समझ के लिये विभिन्न गतिविधियों का आयोजन।

इकाई–4 पर्यावरण शिक्षा में आकलन

- छात्राध्यापकों द्वारा शाला में बच्चों के आकलन हेतु अपनाई जाने वाली आकलन पद्धतियाँ– फोटोग्राफ, ड्राइंग, वृत्तान्त, बच्चों की परिचर्चा, समूहकार्य, प्रोजेक्ट, सर्वे प्रश्नोत्तरी में भागीदारी, प्रश्नों के उत्तर खोजना, लिखना और कोलाज बनाना।
- अभिव्यक्ति, अभिरूचि, लीडरशिप, न्यायप्रियता, समानता, इत्यादि सूचकों पर आधारित बच्चों का प्रगति पत्रक और पोर्टफोलियो तैयार करना।

इकाई–5 पर्यावरण शिक्षण की योजना / पूर्व तैयारी

- पाठ्यपुस्तक वाचन एवं विश्लेषण– प्रक्रिया एवं महत्व

- विषय प्रकरण से संबंधित Concept map की तैयारी एवं इकाई पाठ योजना का निर्माण
- सेमीनार आयोजना के लिए inter disciplinary, Multidisciplinary approach पर आधारित पाठयोजनाओं का निर्माण ।
- स्रोत सामग्री का निर्माण, संग्रह एवं उपयोग, स्थानीय स्रोतों से प्राप्त सामग्री, समाचार पत्र पत्रिकाओं से एकत्रित सामग्री।
- फिल्म एवं उनकी क्लिपिंग का अधिगम में प्रयोग।
- आइकॉनिक मैप की तैयारी।
- इंटर्नशिप के दौरान भुगतान प्रक्रियाओं, अनुभवों पर पुर्नविचार और पत्रिका/जर्नल के रूप मे उनका संधारण।
- प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु विभिन्न गतिविधियाँ।

प्रायोगिक– (कोई दो)

1. **पाठ्ययोजना निर्माण**– पर्यावरण की विषयवस्तु पर आधारित पाठयोजनाएँ निर्मित होगी।

- Inter disciplinary, Multi disciplinary approach पर आधारित पाठयोजनाएँ
- ए.एल.एम. आधारित– पाठयोजनाएँ
- समस्या समाधान आधारित पाठयोजनाएँ

इन पाठयोजनाओं में अभ्यास के दौरान सूक्ष्म शिक्षण की व्यवस्था करना।

2. **प्रोजेक्ट निर्माण –**

- इकोक्लब की स्थापना एवं उसके क्रियाकलापों का निर्धारण जैसे वृक्षारोपण, वृक्षों का रखरखाव आदि।
- पर्यावरणीय भ्रमण पर रिपोर्ट तैयार करना– ऐतिहासिक, धार्मिक स्थल पर।
- आसपास की खोज प्रायोजना निर्माण– जलस्त्रोत एवं उनका संरक्षण, फसलें, मिट्टी के प्रकार आदि।
- अध्यापन अभ्यास के दौरान केस स्टडी– सामाजिक, पर्यावरण के सुधार के संदर्भ में कुपोषित बालक, उग्र/उद्दंड बालक ।
- पाठ्यपुस्तक विश्लेषण– किसी एक पुस्तक का पाठवार विश्लेषण।
- स्थानीय स्रोतों के संरक्षण हेतु गतिविधियाँ (वादविवाद, प्रहसन नाटिका आदि) तैयार करना।

8. **पाठ्यक्रम की अंतरण की विधियाँ (Mode of transaction)** :–

- गतिविधिपूर्ण वातावरण का निर्माण करते हुए आसपास के परिवेश के उदाहरण एवं समस्याओं पर कक्षाओं में चर्चा एवं स्थानीय क्षेत्रों का भ्रमण कराया जाना।
- संस्थान में वर्कशॉप, सेमीनार आयोजित करके छोटे–छोटे समूह कार्य कराए जा सकते हैं जैसे पाठ्यपुस्तकों का विश्लेषण, समाचार पत्रिका का लेखन, क्षेत्र भ्रमण की रिपोर्ट का निर्माण आदि।
- छात्राध्यापकों के साथ शिक्षकों के निरंतर संवाद एवं क्षमता संर्वधन के लिए वाद–विवाद,

- परिचर्चा, ड्रॉइंग, पेंटिंग, फिल्म, डाक्यूमेंट्री, आसपास का भ्रमण, गतिविधियाँ, प्रोजेक्ट कार्य, सर्वेक्षण, प्रयोग, प्रदर्शन करना, चर्चा, प्रश्नोत्तरी सामूहिक एवं व्यैक्तिक रूप से आयोजित कराया जाना जैसे – पर्यावरणीय मूल्यों के प्रति जागरुकता हेतु– वादविवाद।
- अपशिष्ट के प्रकार एवं प्रबंधन– प्रोजेक्ट कार्य।
- प्राकृतिक संसाधनों के प्रदूषण एवं नियंत्रण– सर्वे।
- भोज्य पदार्थो का स्वास्थ्यवर्धक संयोजन– चार्ट निर्माण, प्रश्नोत्तरी।
- कुपोषित बालक एवं सीखने की गति– केसस्टडी।
- फसलें/कृषि हेतु मिट्टी–पानी आदि अनुकूल–प्रतिकूल परिस्थितियाँ– भ्रमण, सर्वे ।
- प्राकृतिक आपदाएँ एवं जागरूकता– फिल्म, विडियो क्लिपिंग।
- अम्लीय वर्षा ग्लोबल वार्मिंग, ग्रीन हाउस प्रभाव– निबंध, वाद विवाद।
- सांस्कृतिक पर्यावरण– एकांकी, नृत्यनाटिका
- पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में शिक्षाविदों/समाजशास्त्रियों, पर्यावरणविदों के योगदान– तात्कालिक भाषण, चर्चा।
- बच्चे किस तरह समझते हैं, यह जानने के लिये सरल गतिविधियों का आयोजन जैसे–सरल प्रयोग–तैरने वाली वस्तुएँ, आसपास के अस्पताल, तालाब, बाजार, बगीचा, पत्ती, बीजों का संग्रहण, सामाचार पत्रों की सूचनाओं का विश्लेषण इत्यादि।
- इन गतिविधियों के माध्यम से छात्राध्यापक जानेंगे कि बच्चे किस प्रकार विचार करते हैं, बच्चों के अनुभवों को प्रस्तुत करने के अवसर देना और वे अपने विचारों को किस प्रकार से जोड़ते, वर्गीकृत, विश्लेषित करते हैं एवं किस प्रकार से स्वयं को अभिव्यक्त करते हैं, जानना एवं उन अनुभवों एवं विचारों की अभिव्यक्ति के समन्वय से परिष्कृत समझ बनाना।
- विचारों के प्रस्तुतीकरण के लिये– चित्रात्मक प्रदर्शन–तात्कालिक समसामायिक विषयों जैसे चुनाव, पॉलीथीन का प्रयोग पर मौखिक एवं लिखित चर्चा, परिचर्चा आयोजित करने के लिए प्रशिक्षण देना।
- प्रत्येक इकाई पर क्षेत्र आधारित, क्रियात्मक अनुसंधान अथवा समस्या विशेष पर आधारित प्रायोगिक कार्य/सत्रगत् क्रियाकलाप दिये जा सकते हैं।
- केस स्टडी के रूप में बच्चे का पोर्टफोलियो तैयार करना एवं विविध पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आयोजन किया जाने के लिए छात्राध्यापकों को प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।

9. संदर्भ ग्रंथों की सूची (Bibliography):–

- पर्यावरणीय पाठ्य पुस्तकें (प्राथमिक स्तर)
- दिगन्तर जयपुर का साहित्य
- एकलव्य मध्यप्रदेश का साहित्य
- संगति, एवेही एबेकस मुंबई
- एनसीईआरटी (2007) एन्वायारमेंटल स्टडीज–लुकिंग एराउन्ड Class-III-V नई दिल्ली
- एनसीएफ (2005) एवं एनसीटीई (2009) दिल्ली
- पर्यावरणीय अध्ययन–ए.बी. सक्सेना (रीजनल कॉलेज, भोपाल)
- विज्ञान शिक्षण का आयोजन–ए.बी. सक्सेना (रीजनल कॉलेज, भोपाल)

विद्यार्थी–शिक्षकों को पर्यावरण संबंधी अवधारणाओं के बारे में बच्चों से अनुभव एवं उनके परिवेश पूर्वज्ञान उपयोग करना तथा उनके एवं कक्षा मे सीखने के संसाधन के रूप में प्रयोग करने योग्य बनाना।

डी.एल.एड. द्वितीय वर्ष
सामाजिक विज्ञान शिक्षण
(प्रश्न पत्र –14)

पूर्णांक – 50
बाह्यअंक – 35
आंतरिक अंक – 15
कालखंड – 70

1. अध्ययन का क्षेत्र (Area of study):–शिक्षा शास्त्रीय विषय

2. विषय की रूपरेखा (Design of the Course) :–

पाठ्यक्रम में सामाजिक विज्ञान विषय की कुछ इकाईयों में विषय–वस्तु क्षेत्र आधारित सत्रगत कार्य के रूप में दी गई है। कुछ क्षेत्रों पर विषय–वस्तु से संबंधित पठन सामग्री उपलब्ध कराकर उस पर चर्चा कराकर विषय–वस्तु पर बेहतर समझ बनाने की कोशिश की जा सकेगी।

2. भूमिका (Rationale and Aim) :–

सामाजिक विज्ञान की विषय–वस्तु मानव एवं समाज के आपसी संबंधों की विशिष्ट अवधारणाओं पर आधारित है। यह पाठ्यक्रम छात्राध्यापकों को यह सुझाव देता है कि सामाजिक विज्ञान किस प्रकार से बच्चों में स्वंतत्र चिंतन, परस्पर सम्मान व विविधता के प्रति संवेदनशीलता के प्रति सुदृढ़ आधार तैयार करता है। सामाजिक विज्ञान मानवीय जीवन के विभिन्न आयामों जैसे– ऐतिहासिक पृष्ठभूमि व लंबे समय के दौरान आए बदलाव, आसपास के भौगोलिक परिवेश, सामाजिक राजनीतिक व आर्थिक पहलुओं का अध्ययन करते हुए किसी तथ्य का विवेचनात्मक चिंतन करने पर बल देता है। यह पाठ्यक्रम छात्राध्यापकों को यह भी सुझाव देता है कि सामाजिक विज्ञान उन कौशलों का विकास करता है जिससे सामाजिक संरचना, सामाजिक व राजनीतिक प्रक्रियाएँ एवं सत्ता आदि के संदर्भ में समाज की वास्तविकता पर आलोचनात्मक समझ को विकसित किया जा सकता है।

यह पाठ्यक्रम समाज एवं आसपास के वातावरण को समझने की क्षमता विकसित करने के साथ ही विभिन्न दृष्टिकोण एवं समझ का परीक्षण करने में भी सहायक है। जैसे विभिन्न मतों, जीवन शैलियों और सांस्कृतिक रीति–रिवाजों का सम्मान करना सिखाता है।

3. विशिष्ट उद्देश्य (Specific Objectives) :–

1. इतिहास, भूगोल, सामाजिक व राजनीतिक जीवन, अर्थशास्त्र व समाजशास्त्र की मदद से छात्रध्यापकों में उस ज्ञान एवं कौशलों का विकास करना, जिससे वह समाज का समालोचनात्मक चिंतन व विश्लेषण कर सकें।
2. आंकड़ों के एकत्रीकरण, व्याख्या एवं विश्लेषण के कौशलों का विकास कर सकें।
3. सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तक का समीक्षात्मक अध्ययन कर सकें।
4. विभिन्न शिक्षण प्रविधियों के उपयोग करने के कौशलों का विकास करना जिससे वे बच्चों में सवाल करने की क्षमता विकसित कर सकें।
5. स्वतंत्रता, समानता, न्याय, विविधता का सम्मान आदि मूल्यों को कायम रखने एवं उन सामाजिक चुनौतियों का सामना करने की समझ विकसित करना जिससे इन मूल्यों को खतरा है।

4. विषय का महत्व (Running Thread of the course) :-

यह पाठ्यक्रम इतिहास, भूगोल, राजनीति शास्त्र, अर्थशास्त्र एवं समाजशास्त्र के विभिन्न परिप्रेक्ष्यों में सामाजिक विज्ञान विषय को समझने का आधार प्रदान करते है जिससे हम इसके मूल उद्देश्य को ऐतिहासिक व सामाजिक परिप्रेक्ष्य में समझ सकें। इतिहास, भूगोल, राजनीति शास्त्र, अर्थशास्त्र एवं समाजशास्त्र आदि की प्रकृति एवं उद्देश्य से परिचय देते हुए यह संभावना पैदा करता है कि छात्राध्यापक पाठ्यपुस्तकों से परे जाकर विभिन्न प्रविधियों एवं स्रोत सामग्री के माध्यम से इन उद्देश्यों को प्राप्त करने की ओर बढ़ सकेंगे।

5. इकाईवार अंकों का विभाजन (Unitwise division of marks) :–

क्र.	इकाई	विषय	कालखंड	अंक
1	1	सामाजिक विज्ञान की प्रकृति	15	8
2	2	सामाजिक विज्ञान की प्रमुख अवधारणाएँ	40	20
3	3	सामाजिक विज्ञान की शिक्षण विधियाँ, आकलन मूल्याकन	15	7
		सत्रगत कार्य	—	**15**
		कुल योग	**70**	**50**

6. इकाई का अध्ययन (Units) :–

इकाई– 1 सामाजिक विज्ञान की प्रकृति

- सामाजिक विज्ञान से आशय व प्रकृति एवं क्षेत्र
- सामाजिक विज्ञान अध्ययन के कौशल
- सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र : इतिहास, राजनीति शास्त्र, भूगोल, अर्थशास्त्र शिक्षण के उद्देश्य व सामाजिक विज्ञान को समझने के विभिन्न परिप्रेक्ष्यों को जानना।

इकाई– 2 सामाजिक विज्ञान की प्रमुख अवधारणाएँ

- इतिहास जानने के स्त्रोत
- भारत के ऐतिहासिक कालक्रम एवं मुख्य शासन और घटनाएँ
- सभ्यता का विकास : नदी घाटी सभ्यता विशेष रूप से सिंधु घाटी सभ्यता
- समाज : सामाजिक संरचना, सामाजिक स्तरीकरण (असमानताएँ), समुदाय व समूह
- शासन प्रशासन : संविधान, लोकतंत्र, स्थानीय स्वशासन, राज्य व केन्द्र शासन
- मानचित्र : मानचित्र के कारक, अक्षांश व देशान्तर रेखाएं, नक्शा बनाना, ग्लोब व प्रदेश, देश एवं विश्व के मानचित्र का पठन।
- विश्व के क्षेत्र : विभिन्न क्षेत्रों में मानव जीवन व संसाधन (मरूस्थल, ध्रुवीय क्षेत्र, वनाच्छादित क्षेत्र)

इकाई– 3 सामाजिक विज्ञान की शिक्षण विधियाँ, आकलन एवं मूल्यांकन

3.1 शिक्षण विधियाँ

- संवाद एवं चर्चा विधि
- व्याख्यान विधि
- प्रोजेक्ट विधि
- तुलनात्मक विधि
- संकलन विधि
- अभिनय विधि
- ए.एल.एम. / सक्रिय अधिगम प्रविधि

3.2 आकलन एवं मूल्यांकन

- सतत एवं व्यापक मूल्यांकन
- ओपन बुक (Open Book) द्वारा मूल्यांकन
- गतिविधि द्वारा– प्रश्न मंच, रोल प्ले, खेल,वाद विवाद,परिचर्चा, रीडिंग्स आदि।

7. सत्रगत कार्यः–आंतरिक मूल्यांकन (कोई दो) नोटः प्रथम बिन्दु अनिवार्य है।

1. किसी एक पिछड़ी बस्ती का सामाजिक व आर्थिक तथ्यों की जानकारी लेते हुए आज के संदर्भ में उनकी समस्याओं का अध्ययन (केस स्टडी) एवं सुझावात्मक समाधान।
2. अपनी संस्था से किसी बस्ती का नक्शा तैयार करना। प्रमुख सुझावात्मक बिन्दु–स्थिति, स्थान, बैंक, बाजार, संस्था, मंदिर / मस्जिद / चर्च / गुरूद्वारा इत्यादि।
3. सामाजिक विज्ञान के किसी विषयांश को लेकर तिथि एवं घटनाओं के आधार पर प्रोजेक्ट तैयार करना। अन्य स्त्रोतों से इन तथ्यों की विश्वसनीयता एवं प्रमाणिकता।
4. सामाजिक विज्ञान के शिक्षण में डाक टिकट, मुद्रा, समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, डाक्यूमेंट्री (छोटी फिल्म), नाटक, नक्शे, ग्लोब, ऐतिहासिक फिल्में, सीरियल किस प्रकार उपयोगी है, खोजकर स्पष्ट करना।(कोई एक)
5. पाठ्य पुस्तक समीक्षा– भौतिक स्वरूप, वर्तनी, चित्र एवं मानचित्र, अवधारणात्मक बिन्दु आदि।
6. प्रश्न पत्र का विश्लेषण।

8. संदर्भ पुस्तकें / सामग्री :–

- सामाजिक विज्ञान एवं उसका शिक्षण, माध्यमिक शिक्षा मंडल म.प्र. भोपाल
- सामाजिक विज्ञान (विषय–वस्तु एवं शिक्षण विधियाँ) आपरेशन क्वालिटी–एस.सी.ई.आर.टी.
- एन.सी.ई.आर.टी. की कक्षा 6 से 8 तक की पाठ्यपुस्तकें।
- राष्ट्रीय फोकस समूह (एन.सी.एफ.) सामाजिक विज्ञान शिक्षण आधार पत्र।

- Batra, P. (ed.) (2010). Social Science Learning in Schools: Perspective and Challenges, New Delhi: Sage.
- George, A. and Madan, A. (2009). Teaching Social Science in Schools: NCERT's New Textbook Initiative.New Delhi: Sage. ppkZ gsrq lq>kokRed kBB&
- Eklavya, (1994), Samajik Adhyayan Shikshan: Ek Prayog, Hoshangabad: Eklavya.
- Social science Textbooks for classes VI – VIII, Madhya Pradesh: Eklavya.

डी.एल.एड द्वितीय वर्ष
विज्ञान शिक्षण
(प्रश्न पत्र – 15)

पूर्णांक – 75
बाह्य. प्रायोगिक अंक –35. 25
आंतरिक अंक – 15
कालखंड – 110

1. अध्ययन का क्षेत्र (Area of study):–शिक्षा शास्त्रीय विषय

2. विषय की रूपरेखा (Design of the Course):–

इस कोर्स की रूपरेखा इस तरह से तैयार की गई है, जिसमें पेपर के सैद्धांतिक विषयों से संबंधित एक इकाई और कक्षा कक्षीय प्रक्रिया और मूल्यांकन पर दो इकाईयां दी गई हैं। साथ ही यह सुनिश्चित किया गया है कि–

- प्रत्येक इकाई के अध्ययन के अंतर्गत स्थानीय क्षेत्र आधारित (field based) सत्रगत कार्य दिया जाएगा।
- सामूहिक चर्चा के लिये विशिष्ट अध्ययन सामग्री का इस्तेमाल किया जाना ताकि विज्ञान शिक्षण की समझ विकसित किया जा सके और साथ ही सामूहिक चर्चाएं गहन एवं वस्तुपरक हो सकें।

3. विषय का महत्व (Objectives of the course) :–

इस पाठ्यक्रम द्वारा छात्राध्यापक, विज्ञान शिक्षण के सभी क्षेत्र जैसे– विज्ञान विषय की प्रकृति, उसका क्षेत्र, समाज और विज्ञान का अंतर्संबंध, विज्ञान की दुनिया में ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया, वैज्ञानिक दृष्टिकोण आदि से परिचित होगें। यह सारे विषय और क्षेत्र इस तरह से आपस में गूंथकर रखे गये है कि उपरोक्त सभी क्षेत्रों की समझ के साथ–साथ इस विषय को पढ़ाने में जरूरी अवधारणाओं और कौशल भी प्राप्त करे सकेंगे। इस पाठ्यक्रम का एक जरूरी उद्देश्य यह भी है कि विज्ञान के बारे में और विज्ञान के सिद्धांतों के बारे में विकसित गलत अवधारणाओं पर सवाल खड़े किये जा सकें और उन्हें बेहतर और सही समझ की ओर अग्रसर किया जा सके।

यहाँ छात्राध्यापकों में स्व–अधिगम और स्वतंत्र चिन्तन का विकास, कक्षा में उनकी सक्रिय भागीदारी, प्रायोगिक एवं खोज आधारित परियोजनाओं के लिए पर्याप्त अवसर दिए जा रहे हैं।

4. विशिष्ट उद्देश्य (Specific Objectives):–

- विज्ञान और वैज्ञानिक अवधारणाओं की स्वयं की समझ का पुर्न अवलोकन करना।
- समाज और विज्ञान के अंर्त संबंधों को समझना।
- विज्ञान सीखने के आवश्यक कौशल जैसे– अवलोकन, मापन, समूह बनाना, वर्गीकरण, प्रयोग करना, जांच करना, नियम बनाना और नियमों को जांचना आदि को समझना। साथ ही छात्राध्यापकों में अपने बच्चों में इनके विकास की कुशलता विकसित करना।
- छात्राध्यापकों में प्रयोग व विज्ञान संबंधी गतिविधियाँ करने की कुशलता विकसित करना।
- छात्राध्यापकों में विज्ञान शिक्षण की महत्वपूर्ण विधियों को कक्षा संचालन में इस्तेमाल करने की कुशलता विकसित करना।

- पर्यावरणीय प्रदूषण के दुष्प्रभावों से अवगत कराना और इस संदर्भ में आव यक अभिवृत्ति विकसित करना।
- विज्ञान शिक्षण हेतु कक्षा कक्ष संचालन की महत्वपूर्ण विधियों को जानना।

5. कोर्स का महत्व (Running Thread of the Course) :–

यह पेपर पर्यावरणीय अध्ययन के शिक्षाशास्त्रीय क्षेत्र पर ही आधारित है। इसका उद्देश्य है कि छात्राध्यापक विषय की प्रकृति की समझ विकसित कर सकें और इसका इस्तेमाल कक्षा कक्षीय अंतरण की विधियां चुनने और अंतरण में कर सकें।

6. इकाईवार अंकों का विभाजन (Unitwise Division of Marks):–

क्र.	इकाई	विषय	कालखंड	अंक
1	1	(अ) विज्ञान की प्रकृति एवं अवधारणाएँ (ब) विज्ञान और समाज	20	10
2	2	विज्ञान पाठ्यचर्चा, पाठ्यक्रम एवं शिक्षण के उद्देश्य	30	10
3	3	(अ) विज्ञान की कक्षा कक्ष प्रक्रिया, और मूल्यांकन	20	15
		(ब) **प्रोजेक्ट कार्य एवं विभिन्न प्रयोग**	40	25
		सत्रगत कार्य	—	**15**
		कुल योग	**110**	**75**

7. इकाई का अध्ययन (Units) :–

इकाई 1

(अ) विज्ञान की प्रकृति उसकी अवधारणाएँ

- विज्ञान के ज्ञान की प्रकृति जैसे परिवर्तनशील, परीक्षण योग्य, तथा उत्पाद के रूप में।
- विज्ञान एक प्रक्रियाओं के रूप में: अवलोकन, मापन, परिकल्पनाएँ बनाना, प्रयोग, वर्गीकरण, विलेषण, सामान्यीकरण से पैटर्न खोजना तथा इससे नियम तक पहुँचना।
    - वैज्ञानिक खोज एवं अन्वेषण की अवधारणा एवं प्रक्रिया।
    - प्राकृतिक घटनाओं, प्रक्रियाओं आदि में कार्य–कारण संबंध।
- विज्ञान एक उत्पाद के रूप में: विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में अंर्त संबंध, एक दूसरे पर परस्पर प्रभाव।

(ब) विज्ञान और समाज

- दैनिक जीवन में विज्ञान का प्रभाव।
    - विभिन्न सामाजिक अंधविश्वास और कुरीतियों से निपटने में विज्ञान की भूमिका।
    - समस्याओं के तार्किक वि लेषण में विज्ञान का प्रयोग।
- बदलता हुआ समाज और विज्ञान।
- विज्ञान और लैंगिकता
- विज्ञान शिक्षण और सामाजिक अंधविश्वास और कुरीतियों से निपटने में विज्ञान की भूमिका।
- समस्याओं के तार्किक विश्लेषण और उनको हल करने में विज्ञान का उपयोग।
- प्रमुख भारतीय वैज्ञानिकों की सामाजिक परिस्थितियाँ और उनकी उपलब्धियों का संक्षिप्त परिचय। (ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, होमी जहांगीर भाभा, जगदीश चन्द्र बसु, पंचानन माहेश्वरी, सी. वी. रमन) द्वारा विभिन्न परिस्थतियों में काम करना।

इकाई 2

विज्ञान पाठ्यचर्चा, पाठ्यक्रम एवं शिक्षण के उद्देश्य

- पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम एवं पाठ्य पुस्तक की अवधारणा। पाठ्यचर्या निर्माण में शिक्षक की भूमिका, स्थानीय स्रोतों का उपयोग।
- विज्ञान शिक्षण के उद्देश्य।
  भारतीय संदर्भ में विज्ञान शिक्षण।
- व्यवहारवाद एवं निर्माणवाद का विज्ञान शिक्षण में उपयोग।
    - हमारे चारों ओर के परिवर्तनः भौतिक एवं रासायनिक परिवर्तन।
    - उष्मा, वातावरण को प्रभावित करने वाले कारक, 'अम्ल, क्षार एवं लवण', जन्तुओं का पोषण, श्वसन, जनन, गति, प्रकाश, विद्युत धारा, धातु–अधातु, बल एवं दाब, ध्वनि, चुम्बक, सौर मण्डल, स्थानीय वनस्पतियाँ, मानव में किशोरावस्था, प्रजनन एवं लिंग निर्धारण तथा संबंधित भ्रांतियाँ।

इकाई 3

(अ) विज्ञान की कक्षा कक्ष प्रक्रिया और बच्चों का आकलन

- विज्ञान शिक्षण की विभिन्न विधियाँ : सक्रिय अधिगम प्रविधि (ALM) एवं उसके विभिन्न चरण, प्रदर्शन विधि, प्रयोग विधि,विज्ञान संबंधी शैक्षिक भ्रमण, विज्ञान प्रदर्शनी, प्रोजेक्ट आदि।
    - प्रभावी कक्षा कक्ष निर्देशन,
    - कक्षा में सीखने हेतु उपुयक्त वातावरण निर्माण की प्रस्तावित रणनीतियाँ।
- वैज्ञानिक कौशल निम्न आधारों पर आकलन–
    - अवलोकन, मापन, ग्राफ बनाना, वर्गीकरण, पृथक्करण, सामान्यीकरण, निष्कर्ष आदि ।
    - तार्किकता,
- सीसीई के संदर्भ में विज्ञान की अवधारणाओं के अवबोधन का आकलन।
  प्रायोगिक कार्य–,15 प्रयोग करके रिपोर्ट बनाना (कक्षा 6,7,8,की पाठ्यपुस्तको पर आधारित) समालोचना एवं परिणामों की विवेचना करना। **सत्रगत कार्य–3** प्रयोगो पर आधारित प्रोजेक्ट रिपोर्ट बनना उनकी

8. पाठ्यकम अंतरण की विधियाँ (Mode Of Transaction) :–

- इकाईवार अध्ययन के लिए साहित्य उपलब्ध करवाना।
- सरल गतिविधियाँ, प्रयोग करवाना, अभिलेखों का अवलोकन, शिक्षक और साथी के साथ चर्चा करना यह देखना कि, प्रश्न कैसे पूछे जाते है? बनाते है? जिज्ञासाओं का जवाब कैसे दिया जाता है आदि। यहाँ शिक्षक सुविधादाता के रुप में होगा।
- पाठयोजना का प्रस्तुतीकरण (TLM सामग्री एवं मल्टी मीडिया उपयोग करते हुए) एवं अभिलेखीकरण उसकी विवेचना करना। उसका विश्लेषण तथा बच्चों के विचार को विज्ञान की अवधारणा प्रोजेक्ट कार्य एवं प्रायोगिक कार्य जोड़ना।

- म.प्र. में प्रचलित कक्षा 6, 7 एवं 8 की पुस्तकों का शिक्षण में उपयोग किया जाए। विज्ञान विषय शिक्षण अंतर्गत कार्य–कारण प्रभाव एवं विषय वस्तु की अवधारणाएँ स्पष्ट करने हेतु परिवेश में उपलब्ध संसाधनों, सामान्य गतिविधियों एवं प्रयोग का उपयोग किया जाये। आवश्यक गतिविधियाँ/प्रयोग कर प्रस्तुतीकरण के अवसर भी सुनिश्चित किया जाना आवश्यक है।
- विज्ञान के समसामयिक मुद्दों पर संदर्भ सामग्री एकत्रित करना, विज्ञान के साहित्य पर चर्चा करना पोस्टर के माध्यम से प्रचार करना, जनता को सुनना, संदर्भित क्षेत्रों के विशषज्ञों जैसे किसान आदि से बातचीत करना। जैसे–
    - पानी एक प्राकृतिक संसाधन है क्या सभी लोगों को उनकी घरेलू और कृषि की जरूरत के हिसाब से पानी मिल पाता है ?
    - हरित क्रांति क्या वाकई टिकाऊ है और खुशहाली का आगाज देती है ?
    - हमारे परांपरागत ज्ञान को बचाने और संर्वधन करने से क्या नए ज्ञान को कोई खतरा है?
    - बदलता समाज और जीवन की परिभाषा और अलग–अलग सभ्यताओं के बचाव का सवाल ?

इस तरह के कई और भी मुद्दे और सवाल हो सकते हैं। जिन्हें उपर्युक्त प्रक्रियाओं का आधार बनाया जा सकता है।

9. संदर्भ ग्रंथों की सूची (Bibliography):–

1. पाठ्यपुस्तकें।
    - म.प्र. में संचालित कक्षा 6, 7, एवं 8 की विज्ञान विषय की पुस्तकें।
    - विज्ञान कक्षा 6, 7, एवं 8 की विषय की पाठ्यपुस्तकें वर्ष 2006, NCERT, NCERT नई दिल्ली
    - बालवैज्ञानिक, कक्षा 6, 7, एवं 8 विज्ञान कार्य पुस्तकें, 2000, पाठ्यपुस्तक निगम भोपाल
    - स्माल साइंस, विज्ञान कक्षा 6, 7, एवं 8 पाठ्यपुस्तकें वर्ष 2003, होमी भाभा साइंस सेन्टर मुंबई
2. प्राथमिक स्तर की पर्यावरण विषय की पुस्तकें। सी ई ई की किताबें।
3. सक्सेना ए. बी (2008) विज्ञान शिक्षण का आयोजन, आगरा एच पी भार्गव बुक हाउस।
4. सक्सेना ए बी 2011 निर्माणवाद विज्ञान शिक्षा।
5. ALM - शिक्षक संदर्शिका राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल विज्ञान क्या है केरेन हेडाक
6. विज्ञान में ज्ञान क्षेत्र, एन सी एफ (2005),NCERT, NCERT नई दिल्ली
7. विज्ञान शिक्षण, एन सी एफ पोजी शान पेपर (2005), NCERT, NCERT नई दिल्ली।
8. classroom interaction that works, McRELL (2014), www.mcrell.com

डी.एल.एड द्वितीय वर्ष
गणित शिक्षण प्रारंभिक स्तर–2
(प्रश्न पत्र – 16)

पूर्णांक –50
बाह्यअंक–35
आंतरिक अंक –15
कालखंड –70

1. अध्ययन का क्षेत्र (Area of study):– शिक्षा शास्त्रीय विषय

2. विषय की रुपरेखा (Design of the Course):–

- प्रत्येक इकाई की विषय–वस्तु इस तरह तैयार की गई है कि बच्चों के स्तरानुकूल हो तथा गणित शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति हो सके।
- यथा संभव विषय–वस्तु में करके सीखने के अवसर रखे गए हैं।

3. भूमिका (Rationale and Aims) :–

प्राथमिक स्तर पर बच्चे व्यावहारिक समस्याओं को हल करने हेतु अपने गणितीय ज्ञान को व्यवस्थित रुप से उपयोग करना सीखते हैं, साथ ही गणितीय प्रक्रियाओं में अवधारणाओं की समझ को संबंधित करना भी सीखते हैं। गणितीय ज्ञान के विकास हेतु यह आवश्यक है कि बच्चे अमूर्त रुप में गणित के महत्त्वपूर्ण पहलुओं को समझें, सामान्यीकरण कर सकें, तर्क के गणितीय तरीकों के प्रति जागरूक हों, गणितीय प्रतीकों का उपयोग कर सकें तथा सूचनाओं को अर्थ प्रदान कर सकें।

यह पाठ्यक्रम शिक्षकों को अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। इससे शिक्षक प्रारंभिक स्तर पर पढ़ाई जाने वाली विषय–वस्तु की व्यापक समझ बना सकेंगे तथा गणित शिक्षण की नवीन विधियों का उपयोग कक्षा शिक्षण में करते हुए अपनी संप्रेषण क्षमता का विकास कर सकेंगे।

4. विशिष्ट उद्देश्य (Specific Objectives) :–

- उच्च प्राथमिक कक्षाओं में पढ़ाई जाने वाली गणित के संदर्भ में विषय–वस्तु की व्यापक समझ बनाना।
- गणित को ज्ञान क्षेत्र के रूप में समझना।
- गणित की विभिन्न शाखाओं–अंकगणित, बीज गणित तथा ज्यामिति के अंतः संबंधों को समझना।
- उच्च प्राथमिक कक्षाओं में गणित शिक्षण के अवसर प्रदान करना।
- गणित शिक्षण के संदर्भ में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के विचार को समझना।
- विभिन्न गणितीय संकेतों का उपयोग कर भौतिक समस्या को गणितीय भाषा में लिखना।
- गणित शिक्षण की नवीन विधियों (क्रियाकलापों) का कक्षा शिक्षण में उपयोग करने की क्षमता का विकास करना।

5. कोर्स का महत्व (Running Thread of the Course) :–

गणित विषय के अध्ययन के बाद शिक्षको में विचार व्यक्त करने की क्षमता विकसित होगी तथा गणितीय विचारों व अवधारणाओं को बच्चों तक संप्रेषित कर सकेंगे।

6. इकाईवार अंकों का विभाजन (Unitwise division of marks) :–

क्र.	इकाई	विषय	कालखंड	अंक
1	1	व्यावहारिक अंकगणित एवं सांख्यिकी	15	7
2	2	बीजगणित एवं बीजगणितीय चिंतन	15	7
3	3	ज्यामिति	15	7
4	4	गणितीय तार्किकता	20	9
5	5	गणित में अधिगम सामग्री एवं मूल्यांकन	5	5
		सत्रगत (प्रायोगिक)कार्य	–	15
		कुल योग	70	50

7. इकाई का अध्ययन (Units):–

इकाई 1 व्यावहारिक अंकगणित एवं सांख्यिकी

- अनुपात एवं समानुपात
- प्रतिशत एवं उसके अनुप्रयोग, बट्टा, साधारण ब्याज, चक्रवृद्धि ब्याज
- सांख्यिकी : आंकड़े, परिसर, आरोही एवं अवरोही क्रम, बारंबारता, बंटन आंकड़ों का वर्गीकरण, वर्ग अंतराल, औसत, माध्य, माध्यिका
- आलेख (दण्ड आलेख, आयत चित्र, चित्र आलेख)

इकाई 2 बीजगणित एवं बीजगणितीय चिंतन

- चर, अचर, चर का उपयोग– कब और क्यों?
- एक चरीय रेखिक समीकरण का निर्माण एवं हल
- बीजगणित सीखने की प्रक्रिया में बच्चों को आने वाली कठिनाइयाँ एवं उनका निराकरण।
- गणितीय पहेलियां एवं उनके तार्किक / बीजगणितीय हल

इकाई 3 ज्यामिति

- वेन हाइलिख (Van Hieles) द्वारा प्रस्तुत ज्यामितीय चिंतन के स्तर
- द्वि–विमीय एवं त्रिविमीय ज्यामितीय आकृतियां
- सममिति, समरूपता एवं सर्वांगसमता
- ज्यामितीय उपकरणों की सहायता से ज्यामितीय रचनाएँ
- त्रिविमीय आकृतियों की स्थानिक समझ एवं प्रत्यक्षीकरण

इकाई 4 गणितीय तार्किकता

- सामान्यीकरण की प्रक्रिया एवं पैटर्न पहचान
- परिकल्पना निर्माण में आगमनात्मक तार्किक प्रक्रिया
- गणितीय संरचना के संदर्भ में स्वयं सिद्धियाँ, परिभाषा एवं प्रमेय

- गणितीय कथनों के सत्यापन की प्रक्रिया : उपपत्ति, प्रतिउदाहरण और गणितीय निष्कर्ष
- गणित में सृजनात्मक सोच
- गणित के प्रति भय और असफलताओं से जूझना
- गणित में समस्या समाधान प्रक्रिया

इकाई 5 गणित में अधिगम सामग्री एवं मूल्यांकन

- गणित शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में पाठ्यपुस्तक की भूमिका
- पाठ्यचर्या एवं कक्षागत प्रक्रियाएँ
- अवधारणागत समझ के लिए मूल्यांकन
- संप्रेषण एवं तार्किक कौशलों के विकास के लिए मूल्यांकन
- खुले प्रश्न एवं समस्याएँ (Open ended questions and problems)

8 सत्रगत कार्य भाग II (कोई एक):–

1. कम्पास यंत्र (ज्यमिति बॉक्स) का निर्माण एवं ज्यामिति के शिक्षण में इसका प्रयोग।
2. गोला, शंकु, बेलन के मॉडल का निर्माण तथा इनका आयतन व क्षेत्रफल ज्ञात करना।
3. किसी एक कक्षा में विद्यार्थियों की आयु, ऊँचाई तथा भार संबंधी आंकड़ों का संग्रह करना एवं उनका आलेख बनाना तथा मध्यमान ज्ञान करना।
4. गणित के पैटर्न
5. कागज मोड़कर त्रिविमीय आकृतियों का निर्माण एवं उनका शिक्षण में उपयोग।
6. बीजीय सर्वसमिकाओं के ज्यामितीय प्रमाण हेतु मॉडल तैयार करना।
   a. $(a+b)^2 = a^2+2ab+b^2$
   b. $(a-b)^2 = a^2-2ab+b^2$
   c. $a^2-b^2 = (a+b)(a-b)$
7. π के सत्यापन हेतु मॉडल तैयार करना।
8. वृत्त के क्षेत्रफल के सत्यापन हेतु मॉडल का निर्माण एवं उसका शिक्षण में उपयोग।
9. अनियमित आकृति के क्षेत्रफल की गणना हेतु मॉडल निर्माण एवं उसका कक्षा शिक्षण में उपयोग।
10. संख्या रेखा पर परिमेय संख्याओं के प्रदर्शन हेतु मॉडल का निर्माण एवं उसका शिक्षण में उपयोग।
11. किसी बैंक में जाकर तीन जमा/ऋण योजनाओं का विवरण पताकर लाभकारी स्थिति का विश्लेषण करना।
12. ज्यमिति अवधारणाओं के सत्यापन हेतु मॉडल निर्माण एवं शिक्षण में उपयोग।

9 पाठ्यक्रम की अंतरण की विधियाँ (Mode of transaction) :–

- बच्चे कैसे सीखते हैं ? कैसे प्रत्युत्तर देते हैं ? का अवलोकन कर समूह में चर्चा।
- तार्किक प्रश्न बनाने एवं प्रश्न पूछने की परिस्थितियाँ निर्मित करना।

- गणितीय अवधारणाओं की समझ बनाने के लिए समूह कार्य एवं व्यावहारिक उपयोग के अवसरदेना।
- गणितीय मॉडल तैयार करना।
- गणित की सहायक सामग्री को तैयार करना,उसका परीक्षण कर कक्षा शिक्षण में उपयोग करना।
- समूह चर्चा एवं प्रस्तुतीकरण।
- स्व–अध्ययन एवं पुस्तकालय अध्ययन द्वारा विभिन्न प्रकरणों पर तैयार किए गये आलेखों का प्रस्तुतीकरण।
- गणितीय किट, गणित लैब व गणित संसाधन कक्ष का उपयोग करना।

10 संदर्भ ग्रंथों की सूची (Bibliography) :–

1. म.प्र. पाठ्य पुस्तक निगम द्वारा प्रकाशित कक्षा 1 से 8 तक की गणित विषय की प्रचलित पाठ्य पुस्तकें।
2. गणित शिक्षण – एम.एस. रावत व एस.बी. लाल
3. गणित अध्ययन सत्संगी एवं दयाल
4. NCF 2005, NCERT द्वारा प्रकाशित
5. Position paper National focus Group on teaching of mathematics
6. NCERT द्वारा तैयार गणित किट प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर
7. निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009
8. वैदिक गणित स्वामी भारती कृष्ण तीर्थ।
9. वैदिक गणित भाग 1,2,3 – डॉ. कैलाश विश्वकर्मा
10. मापन एवं मूल्यांकन – आर.ए. शर्मा
11. राज्य शिक्षा केन्द्र द्वारा प्रकाशित विद्यार्थी मूल्यांकन निर्देश पुस्तिका

डी.एल.एड द्वितीय वर्ष
विविधता, समावेशित शिक्षा और जेण्डर
(प्रश्न पत्र –17)

पूर्णांक – 50
बाह्य अंक –35
आंतरिक अंक –15
कालखंड –70

1. अध्ययन का क्षेत्र (Area of S tudy):– बुनियादी विषय

2. विषय की रूपरेखा (Design of the Course) :–

यह पेपर सभी विषयों के साथ जुड़ा हुआ है। प्रत्येक इकाई का कुछ अंश क्षेत्र आधरित ज्ञान से जुड़ा हुआ है। चर्चा हेतु विशिष्ट पाठ्यवस्तु के सुझाव दिए गए है। प्रत्येक इकाई के गहन एवं संपूर्ण अध्ययन की समझ बनाने के लिए आवश्यक अध्ययन सामग्री सुझाई गई है।

3. भूमिका (Rationale and Aim) :–

यह पाठ्यक्रम विविधता, जेण्डर और समावेशी शिक्षा के विभिन्न संदर्भों के संयुक्त संबंधों को रेखांकित करता है। इसका महत्त्वपूर्ण लक्ष्य है कि छात्रों एवं अध्यापकों में जीवन के विभिन्न अनुभवों की विविधता और विभिन्न प्रकार के बच्चों की सीखने की आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशीलता विकसित की जा सके। साथ ही शिक्षा के सरोकारों से दूर विशेष आवश्यकता वाले बच्चे जिनमें विशेषकर छात्राएँ जो समाज के वंचित एवं कमजोर वर्ग से आई हैं, ऐसे बच्चों की शिक्षा सुनिश्चित कराने को तैयार करती है।

समावेशी शिक्षा वर्तमान समय की महती जरुरत है और सभी बच्चों का शिक्षा में स्थान सुनिश्चित कराती है। RTE 2009 के प्रकाश में भी समावेशी शिक्षा महत्त्वपूर्ण है। RTE को दृष्टिगत रखते हुए गंभीरतापूर्वक विचार करने पर यह पाठ्यक्रम ऐसे बच्चों (CWSN एवं वंचित वर्ग समूह) के संदर्भ में शिक्षकों के लिये अपेक्षित संवेदनशीलता एवं कौशलों की खोज का प्रयास है।

4. विशिष्ट उद्देश्य (Specific Objective) :–

- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिये वर्तमान में प्रचलित उपागमों को समझाना।
- पाठ्यक्रम, शिक्षण उपागमों, शाला संगठन, एवं सामाजिक–सांस्कृतिक कारको में भेदभाव अपनाने से सीखने में बाधा उत्पन्न होती है। शिक्षक को यह जानना बहुत जरूरी है कि किसी बच्चे की अधिगम अक्षमता के लिये उस बच्चे को दोषी ठहराना उचित नही है ।
- समावेशी शिक्षा के द्वारा परिवर्तन की संभावनाओं को तराशना।
- समावेशी शिक्षा में अक्षमता एवं marginalization की गहन समझ विकसित करना।
- विविधता एवं जेण्डर के आधार पर समावेशी शिक्षा के प्रभावों को जानना।

5. कोर्स का महत्व (Running Thread of the Course) :–

यह पाठ्यक्रम भारतीय पुरातन एवं आधुनिक सामाजिक व्यवस्थाओं में वंचित वर्ग एवं विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के प्रति वैचारिक कुंठाओं को दूर करने एवं उनके प्रति समदृष्टि विकसित करने के लिए है।ऐसे बच्चों को समझने एवं उनके अध्यापन के लिए विभिन्न तरीकों को जानने में यह पाठ्यक्रम

छात्राध्यापकों को मदद करेगा। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिये शिक्षण कौशल के साथ भावनात्मक बुद्धिमता एक शिक्षक के लिए आवश्यक है। Internship एवं सत्रगत कार्य छात्राध्यापकों में इन बच्चों के प्रति भावनात्मक जुड़ाव पैदा कर उन्हें इसके लिये मानसिक रुप से तैयार कर सक्षम बनायेगा। समावेशित शिक्षा केवल शिक्षण कार्य नहीं है, वरन मानसिक सेवा कार्य है। सत्रगत कार्य एवं स्कूल इंटर्नशीप कार्यक्रमों से भी छात्राध्यापकों में इस पाठ्यक्रम के प्रति अंर्तदृष्टि विकसित हो सकेगी।

6. इकाईवार अंक विभाजन (Units wise Distribution of Marks) :–

क्र	इकाई	विषय	कालखंड	अंक
1	1	समावेशी शिक्षा	20	10
2	2	विशेष आवश्यकता वाले बच्चे	30	15
3	3	जेण्डर , शाला और समाज	20	10
सत्रगत कार्य			—	**15**
कुल योग			**70**	**50**

7. इकाई का अध्ययन (Units) :–

इकाई 1 समावेशी शिक्षा (Inclusive Education)

- भारतीय शैक्षिक व्यवस्था में समावेशन एवं बहिष्करण (समाज के सीमांत (हाशिये पर) वर्ग, जेण्डर एवं विशेष आवश्यकता वाले बच्चे)
- समावेशी शिक्षा : अर्थ, आवश्यकता और महत्व तथा म.प्र. में समावेशी शिक्षा की स्थिति
- शिक्षाशास्त्र एवं पाठ्यचर्या के सरोकारों के संदर्भ में भारतीय कक्षाओं में असमानता एवं विविधता : कारण एवं निवारण
- समावेशी शिक्षा के लिए मूल्यांकन

इकाई 2 विशेष आवश्यकता वाले बच्चे (Childern With Special Needs) (CWSN)

- CWSN) बच्चों की समावेशी शिक्षा के लिए विभिन्न प्रयास।
- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की पहचान, आकलन एवं अंतःक्रिया।
- अधिगम निःशक्तता– अवधारणा, प्रकार एवं समाधान।
- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (CWSN) बच्चों के सीखने में आने वाली कठिनाइयों के लिये शिक्षण उपागम एवं कौशल।
- म.प्र. की शालाओं में CWSN बच्चों के लिये शिक्षण व्यवस्था, संसाधन एवं प्रोत्साहन योजनाएँ।

इकाई 3 जेण्डर, शाला और समाज (Gender, School and Society)

- सामाजिक संरचना में पुरुषत्व (masculinity) एवं स्त्रीत्व (femininity) की अवधारणा एवं प्रक्रिया।
- पुरुष एवं महिला प्रधान समाज की अन्तःक्रिया एवं पहचान
- शालाओं में जेण्डर का प्रतिबिंबन (Reflection) – पाठ्यचर्या, पाठ्यवस्तु, कक्षागत प्रक्रिया एवं शिक्षक छात्र अन्तःक्रिया में।

- कक्षा में जेण्डर समानता के लिये किए जाने वाले प्रयास।
- CWSN बच्चों के लियेभारतीय पुनर्वास परिषद Rehabilitation Council of India (RCI) की भूमिका एवं निःशक्तता अधिनियम (PWD Act)1995 के प्रावधान।

8. सत्रगत कार्य (Assignments) :–

1. अपने ग्राम/वार्ड के विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की निःशक्ततावार जानकारी एकत्रित कीजिए एवं उनकी कक्षा में समावेशन की स्थिति पर रिपोर्ट तैयार कीजिए।
2. अपने विद्यालय में अध्ययनरत विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की शैक्षिक कठिनाइयों को सूची बद्ध कीजिए एवं किसी एक विषय पर इन बच्चों के लिए दो शिक्षण सहायक सामग्री विकसित कीजिए।
3. अपने क्षेत्र/जिले में निःशक्तजनों के क्षेत्र में कार्यरत प्रमुख संस्थाओं की सूची बनाइए तथा किसी एक के कार्य, प्रक्रिया एवं उपादेयता पर रिपोर्ट तैयार कीजिए।
4. अपने क्षेत्र में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की निःशक्तता के प्रकार, प्रकृति, कारण तथा रोकथाम के प्रयास पर आलेख तैयार कीजिए।
5. अपने विद्यालय/कक्षा के विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की शिक्षण की आवश्यकताओं की सूची बनाइए एवं इनके बेहतर शिक्षण हेतु किए जा रहे प्रयास लिखिए।
6. अपने विद्यालय में श्रवणबाधित एवं दृष्टिबाधित बच्चों की सामान्य पहचान कैसे करेंगे इसके लिए चेकलिस्ट तैयार करें।
7. कक्षा शिक्षण के दौरान CWSN बच्चों से परस्पर संवादके विभिन्न अवसरों को लक्षित कीजिए तथा सामान्य शिक्षण में उसकी सार्थकता लिखिए।
8. आपकी कक्षा के विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की शैक्षिक कठिनाइयों की पहचान करते हुए उनके निराकरण के लिए किए जाने वाले प्रयासों को सूचीबद्ध कीजिए। (किन्हीं दो छात्रों की केस स्टडी)
9. अपनी कक्षा के दस बच्चों की गृहकार्य की कॉपी का मूल्यांकन कर इन बच्चों की विषयवार अधिगम कठिनाइयों की सूची बनाइए एवं इनके निराकरण लिखिए।

9. संदर्भ ग्रंथों की सूचीः–

- मध्य प्रदेश राज्य शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद (2001) विकलांग बच्चों हेतु समेकित शिक्षा शिक्षक मार्गदर्शिका।
- राज्य शिक्षा केन्द्र (2010) आधार, भोपाल,राज्यशिक्षा केन्द्र।
- रज्य शिक्षा केन्द्र (2005) भारतीय समाज में शिक्षा भाग–2 (प्रथम वर्ष) राज्य शिक्षा केन्द्र।
- अग्रवाल गीता (1981) किवलांगता समस्या और समाधान,निधि प्रकाशन, दिल्ली।
- भार्गव ,महेश (2004) पब्लिकेशन चिल्ड्रेनः देयर एजूकेशन एण्ड रिहबिलेटशन, एच.पी.भार्गव बुक हाउस,कचहरी घाट,आगरा।
- भार्गव,महेश(2004) विशिष्ट बालक, एच.पी.भार्गव बुक हाउस,कचहरी घाट,आगरा।

- मिश्र,विनोद कुमार (2003) विकलागो के अधिकार कल्याणी शिक्षा परिषद,जटवाड़ा दरियागंज, नई दिल्ली
- जोसेक, आर.ए.(2003) विकलागंता के क्षेत्र में अधिनियम पुनर्वास के आयाम समाकलन पब्लिकेशन, वाराणसी।
- जोसेक, आर.ए. (2004) विकलांगों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि विशेष शिक्षा एवं पुनर्वास, समाकलन पब्लिकेशन, वाराणसी।
- शर्मा,आर.ए. (2008) विशिष्ट शिक्षा का प्रारूप, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ।

डी.एल.एड.द्वितीय वर्ष
कम्प्यूटर शिक्षा
भाग–2

अधिकतम अंक–50
आंतरिक मूल्यांकन–25
बाह्य मूल्यांकन–25
(प्रायोगिक मूल्यांकन)
कालखंड–40

1. अध्ययन का क्षेत्र (Area of study) :–व्यावहारिक

2. भूमिका (Rationale and Aim) :–

शिक्षा के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में कम्प्यूटर समर्थित शिक्षा का ज्ञान अति आवश्यक है। इस तारतम्य में डी.एड. प्रथम वर्ष में कम्प्यूटर शिक्षा के प्रारंभिक रूप में छात्राध्यापक परिचित हो चुके हैं। सीडी/वी.सी.डी./डी.वी.डी/पेन ड्राईव आदि का उपयोग कर कक्षा–शिक्षण को रुचिकर बनाया जा सकता है। कक्षा–शिक्षण में स्प्रेडशीट (एक्सेल/केल्क) का उपयोग कर टेबल, ग्राफ आदि के माध्यम से शिक्षण कार्य को रूचिकर बनाया जा सकता है। कम्प्यूटर शिक्षा को कक्षा–शिक्षण से जोड़ने हेतु कई तकनीक हैं, जिसमें वांछनीय तकनीकी का प्रावधान द्वितीय वर्ष में किया गया है। जिससे छात्राध्यापक कम्प्यूटर के साथ सहज रुप से जुड़ सकें।

3. विशिष्ट उद्देश्य (Specific Objectives) :–

- प्रशिक्षण के दौरान कम्प्यूटर शिक्षा को कक्षा–शिक्षण से जोड़ना।
- मल्टीमीडिया के संबंध में जानकारी देना।
- वर्कशीट निर्माण की जानकारी व उपयोग बताना।
- प्रजेंटेशन (पावरपाइंट/इम्प्रेस) का उपयोग बताना।
- इंटरनेट से परिचय करा कर उपयोग में लाना।
- एजूकेशन पोर्टल एवं अन्य शैक्षणिक पोर्टलों के उपयोग के बारे में जानकारी देना।

4. इकाईवार अंकों का विभाजन (Unit-wise division of marks) :–

क.	इकाई	विषय	कालखंड	अंक
1	1	कम्प्यूटर समर्थित शिक्षा (Computer Aided Learning /Technology Enabled Learning)	10	5
2	2	इलेक्ट्रानिक स्प्रेडशीट एवं प्रेजेन्टेशन	15	10
3	3	इंटरनेट	15	10
सत्रगत कार्य			**.**	**25**
कुल			**40**	**50**

5. इकाई का अध्ययन (Units) :–

इकाई– 1 कम्प्यूटर समर्थित शिक्षा

- कक्षा शिक्षण में कम्प्यूटर का प्रयोग
- मल्टीमीडिया पाठ
- साउंड रिकार्डर एवं हेडफोन का प्रयोग
- सी.डी. / वी.सी.डी. / डी.वी.डी. / पेन ड्राईव का उपयोग
- सी.डी. / वी.सी.डी. / डी.वी.डी. राइट करना

इकाई– 2 इलेक्ट्रानिक स्प्रेडशीट एवं प्रेजेन्टेशन

- केल्क / एक्सेल
    - वर्कशीट रो, कॉलम तथा सेल के साथ कार्य करना
    - वर्कशीट पर विभिन्न फंक्शन की सहायता से गणना करना
    - आंकड़ों के आधार पर ग्राफ तैयार करना
- इम्प्रेस / पॉवरप्वाइंट
    - स्लाइड तैयार करना
    - मल्टीमीडिया का उपयोग (साउंड, वीडियो, इमेज, टेक्स्ट, एनीमेशन इत्यादि)
    - स्लाइड शो

इकाई– 3 इंटरनेट

- इंटरनेट का परिचय एवं उपयोग
- वेब ब्राउजर, वेबसाइट एवं वेब पेज
- ई–मेल अकाउण्ट बनाना तथा ई–मेल भेजना एवं प्राप्त करना
- डाउनलोड तथा अपलोड (अटैचमेंट) करना
- सर्च इंजन की सहायता से आवश्यक जानकारी प्राप्त करना
- एजुकेशन पोर्टल एवं अन्य शैक्षणिक पोर्टलों का उपयोग

6. सत्रगत कार्य (Assignments) :–

सभी प्रायोगिक कार्य आवश्यक हैं। दिए गए कार्यो में से कोई पांच कार्य सत्रगत कार्य के रूप में जमा कराये जाएंगे।

उपस्थिति पत्रक तैयार करना।

1. पाँच मित्रों की अंकसूची जनरेट करना।
2. गणितीय इबारती सवालो के लिए शीट का निर्माण।
3. अपना वेतन विवरण तैयार करना।
4. एक विषय की स्वनिर्मित पाठ योजना का प्रेजेंटेशन तैयार करना। (AutoCollage, Photo story, Songsmith का उपयोग करते हुए।)
5. इंटरनेट की मद्द से कम्प्यूटर के विभिन्न भागों का प्रेजेंटेशन तैयार करना।
6. स्वयं की ई–मेल आई.डी. तैयार कर संदेश भेजना एवं प्राप्त करना।

7. ई–मेल के द्वारा फाइल ट्रांसफर करना।
8. सर्च इंजन की मद्द से विज्ञान अथवा भाषा शिक्षण की आधुनिक विधियों को खोजना।
9. एजुकेशन पोर्टल से अपना यूनिक आई.डी. एवं वेतन विवरण प्राप्त करना।

7. संदर्भ ग्रथों की सूची (Bibliography) :–

1. Head start Training Manual 2011(Hindi)

2- Microsoft Teacher Training Module (Hindi)

3- Intel Teacher Module (Hindi)

4- Linux Pustak 2011 (Hindi)

Website:-

1- www.computerseekho.com

2- www.dsaksharta.in

3- www.educationportal.mp.gov.in

4- www.teindia.nic.in

5- www.ncte-in.org

6- www.teachersofindia.org

डी.एल.एड. द्वितीय वर्ष

स्वास्थ्य, स्वच्छता, भावनात्मक विकास एवं शारीरिक शिक्षा

भाग–2

पूर्णांक –40

बाह्यअंक–20

आंतरिक अंक –20

कालखंड –40

1. अध्ययन का क्षेत्र (Area of study):–व्यावहारिक

2. विषय की रुपरेखा (Design of the Course):–

यह पाठ्यक्रम विद्यार्थी के समुचित स्वास्थ्य को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है जिसमें व्यक्तिगत, विद्यालयीन, परिवेशीय, उपभोक्ता एवं सामुदायिक स्वास्थ्य तथा स्वच्छता जैसे सभी घटकों को समाहित किया है। प्रथम वर्ष में 30 अंक एवं द्वितीय वर्ष में 40 अंक के अनुसार मूल्यांकन किया जावेगा।

3. भूमिका (Introduction) :–

शिक्षा के लक्ष्य के अनुसार बच्चों के लिए विद्यालयीन स्वास्थ्य का सुदृढ़ होना भी आवश्यक है जिससे उन्हें पाठ्य शिक्षण की उचित व्यवस्थाओं के साथ–साथ विद्यालय के अन्य घटक जैसे–स्वच्छ पेयजल, शौचालय, खेल मैदान जैसी सुविधाओं को भी सुलभ कराया जाए, जिससे स्वच्छ एवं स्वस्थ्य वातावरण में शिक्षण प्राप्त करें। इसके साथ ही समाज में फैली नशाा संबंधी बुराईयों और भ्रामक विज्ञापनों के प्रति सजग करते हुए स्वस्थ्य सामाजिक परिवेश में अपने को विकसित कर सके। इसके लिए इस पाठ्यक्रम को तैयार किया गया है।

- विद्यालयीन स्वास्थ्य– इस पाठ्यक्रम के अंतर्गत विद्यालयीन स्वच्छताएं, खेल, योग की गतिविधियों, प्रार्थना सभा तथा प्राथमिक उपचार की उपयोगिता को वर्णित किया गया है।
- परिवेशीय स्वास्थ्य– स्वास्थ्य की सुरक्षा के लिए सीवेज ड्रेनेज की उचित व्यवस्था करना, अपशिष्टों का निस्तारण करना, आपदाओं से सुरक्षा की तैयारी महत्वपूर्ण पहलू है। अतः परिवेशीय स्वास्थ्य की शिक्षा के अंतर्गत इन्हें समाहित करते हुए मौसम परिवर्तन का स्वास्थ्य पर प्रभाव की समझ बनाने का प्रयास है।
- उपयोगिता एवं सामाजिक स्वास्थ्य– घरों में बच्चों द्वारा स्वाद के लिए पसंद किए जाने वाले कोल ड्रिंक, जंक फूड एवं तत्काल निर्मित खाद्य सामग्री (Ready to eat Food) के उपयोग के प्रति संवेदनशील बनाना आवश्यक है, जिससे आज की पीढ़ी को अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक बनाया जा सके। नशा, पाउच खाने जैसी बुरी आदतों से विद्यालय समाज को बचाना नितांत आवश्यक है, जिससे स्वस्थ्य समाज की स्थापना करने के लिए बढ़ा जा सके।

4. विषय का औचित्य (Rationale) :–

शारीरिक शिक्षा का व्यापक अर्थ है कि बच्चों के मानसिक, सामाजिक एवं संवेगात्मक गुणों का विकास करते हुए उनके शारीरिक अंगों की स्वच्छ, स्वस्थ एवं मानसिक रूप से सुदृढ़ बना सकें।

शारीरिक शिक्षा के अंतर्गत अपने जीवन के मूल्य को समझते हुए समाज और राष्ट्र को लाभान्वित कर सके।

इस पाठ्यक्रम के माध्यम से उनमें चिन्तन एवं रचनात्मक गुण विकसित हों जिससे वे अपने परिवेश को सुरक्षित कर सकें।

5 विशिष्ट उद्देश्य (Specific Objectives) :–

- खान–पान की गलत आदतों की स्वास्थ्य पर पढ़ने वाले प्रभावों को जान सकेगें।
- श्रमिक वर्ग, कृषक तथा स्थानीय कार्यकर्ता के महत्व को समझ कर उनके प्रति सम्मान लाने के लिए प्रेरित कर सकेगें।
- नशे के दुष्परिणामों से समाज को अवगत कराते हुए जागरूकता लाने का प्रयास कर सकेगें।
- योग, व्यायाम, खेलों के प्रति सक्रिय बना सकेगें।
- छात्राध्यापकों को विद्यालय स्वास्थ्य के प्रति सजग बना सकेगें।
- छात्राध्यापकों में नेतृत्व क्षमता का विकास करना।
- प्राथमिक उपचार की सामग्री के उपयोग से परिचित करा सकेगें।
- सांस्कृतिक गतिविधियों और जीवन के आनंद के सह–संबंध को जान कर विद्यालय को पोषित कर सकेगें।

6. इकाईवार अंकों का विभाजन (Unitwise division of marks) :–

क्र.	इकाई	विषय	कालखंड	आंतरिक अंक प्रोजेक्ट कार्य	बाह्य अंक
1	1	विद्यालयीन स्वास्थ्य एवं खेल गतिविधियाँ	15	6	
2	2	परिवेशीय स्वास्थ्य एवं शिक्षा	10	8	
3	3	उपभोक्ता एवं सामुदायिक स्वास्थ्य	15	6	
		प्रोजेक्ट कार्य	–	–	**20**
		कुल योग	**40**	**20** अंक	**20= 40**

नोट : प्रत्येक इकाई पर प्रोजेक्ट कार्य बनाना अनिवार्य होगा अतः कुल 03 प्रोजेक्ट तैयार होगें।

7. इकाई का अध्ययन (Units) :–

इकाई–1 विद्यालयीन स्वास्थ्य एवं खेल गतिविधियाँ

- विद्यालयीन स्वास्थ्य का अर्थ एवं विद्यालय के अच्छे स्वास्थ्य की विशेषताएँ।
- मध्यान्ह भोजन कार्यक्रम की आवश्यकता, उद्देश्य, क्रियान्वयन एवं शिक्षक की भूमिका।
- विद्यालय में पेयजल, सीवेज, शौचालयों एवं खेल मैदानों की साफ–सफाई।
- सामूहिक प्रार्थना का महत्व, योग की प्रारंभिक क्रियाओं की जानकारी, व्यायाम एवं एथलेटिक्स।
- खेलों के प्रति जागरूकता, प्रोत्साहन, विभिन्न राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय खेलों की जानकारी।
- प्राथमिक उपचार पेटी की व्यवस्थाएँ, एवं उसका उपयोग।

इकाई–2 परिवेशीय स्वास्थ्य एवं शिक्षा

- मौसम परिवर्तन का स्वास्थ्य पर प्रभाव।
- प्राकृतिक आपदाओं के बारे में ज्ञान एवं सुरक्षा के उपाय ।
- कृषि एवं पशुपालन का महत्व।
- अपशिष्ट पदार्थों का स्वास्थ्य पर प्रभाव एवं उचित निस्तारण।
- पेयजल संरक्षण, सीवेज, ड्रेनेज के लिए निकायों की भूमिका एवं हमारे उत्तरदायित्व।

इकाई–3 उपभोक्ता एवं सामुदायिक स्वास्थ्य

- जंक फूड, कोल्ड ड्रिंक्स एवं स्वाद के लिए तत्काल निर्मित खाद्य सामग्री, मादक एवं दूषित पदार्थों के सेवन के दुष्परिणाम।
- दवाओं एवं सौंदर्य प्रसाधनों के भ्रामक विज्ञापनों के प्रचार के प्रति जागरूकता एवं सावधानियाँ।
- स्थानीय कार्यकर्ता, किसान, श्रमिक, सफाई कार्यकर्ताओं तथा सामाजिक कार्यकर्ता के प्रति आदर एवं समाज में उनका महत्व ।
- हमारा सांस्कृतिक जीवन एवं स्वास्थ्य।
- हमारे स्वास्थ्य के लिए उत्तरदायी शासकीय स्वास्थ्य सेवाएँ ।

8 प्रोजेक्ट कार्य–इकाई 1, 2 एवं 3 पर आधारित ही होगा :–

- प्रत्येक छात्राध्यापक को समूह मे कुल 03 प्रोजेक्ट कार्य करने होगें।
- यह कार्य स्कूल इंटर्नशिप के साथ–साथ शिक्षकों से कराना होगा।
- स्कूल इंटर्नशिप के 10 दिवसों में कुल 3 घंटे इस कार्य के लिए नियत किए जाएँ।
- स्थानीय कार्यकर्ता (श्रमिक, किसान, सफाई कार्यकर्ता, समाजिक कार्यकर्ता) का समाज में महत्व।
- प्रोजेक्ट निर्माण के लिए छात्राध्यापकों से उपकरण निर्माण, आवश्यक सामग्री की आवश्यकता, महत्व एवं शोध कार्य पर डाईट फेकेल्टी द्वारा चर्चा की जावे।
- प्रोजेक्ट कार्य को छात्राध्यापकों का समूहवार वितरित किया जाए, एवं प्रत्येक छात्राध्यापक की इसमें सहभागिता सुनिश्चित हो सके।
- स्कूल इन्टर्नशिप के दौरान ही अधिकतम 6 सहभागी छात्राध्यापकों के प्रोजेक्ट कार्य को कार्यशाला आयोजित कर के बड़े समूह के समक्ष प्रस्तुत किया जाए।
- प्राथमिक उपचार करना।
- योगा के आसन् तथा प्राणायाम की मुद्राओं को छात्राध्यापकों को सिखाने के लिए प्रशिक्षण संस्थान में ही व्यवस्थाएँ की जाएँ।
- योग मुद्रा एवं आसनों का व्यावहारिक परीक्षण बाह्य पर्यवेक्षक द्वारा कराये जाने की व्यवस्था की जाए।
- नशे, खान–पान की गलत आदतों का स्वास्थ्य पर प्रभाव जानना।

सुझावात्मक प्रोजेक्ट के विषय/थीम (रिपोर्ट लेखन के साथ प्रस्तुतीकरण)

- बच्चों के स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले सामाजिक एवं पारिवारिक कारकों का अध्ययन।

- बच्चों की अनुपस्थिति के कारणों का अध्ययन ।
- शालेय स्वास्थ्य का अध्ययन– पेयजल, शौचालय, कक्षा में प्रकाश, खेल मैदान एवं स्वास्थ्य परीक्षण की व्यवस्थाओं को आधार बनाया जाए ।
- मध्यान्ह भोजन योजना की बृहद् समीक्षा।
- सांस्कृतिक एवं साहित्यिक गतिविधियों का विद्यालयीन स्वास्थ्य पर प्रभाव।
- श्रमदान, खेलकूद योग का शैक्षणिक उपलब्धियों पर प्रभाव।
- प्राथमिक उपचार पेटी तैयार करते हुए सामग्री की उपयोगिता।

9 पाठ्यक्रम की अंतरण की विधियाँ (Mode of transaction) :–

- छात्राध्यापकों का पुलिस, आर्मी, अग्निशमन सेवा संस्थापकों तथा डॉक्टर्स के साथ परिचर्चाएँ रखी जा सकेंगी।
- मध्यान्ह भोजन योजना को प्रायोगिक रूप में छात्राध्यापक अपनी पाठयोजनाओं के दौरान स्वयं करके समझेंगे।
- सीवेज, ड्रेनेज प्रणाली के बारे में पर्याप्त जानकारी विभिन्न निकायों से छात्राध्यापक द्वारा संकलित की जावेगी।
- योगासन, खेल एवं एथलेटिक्स की सामान्य क्रियाएँ छात्राध्यापकों से प्रशिक्षण के दौरान कराई जाएँ।
- प्राथमिक चिकित्सा में घावों की सफाई, पट्टी बाँधना, जलने पर उपचार इत्यादि का प्रशिक्षण छात्राध्यापकों को दिया जाए।

10 संदर्भ ग्रंथों की सूची (Bibliography) :–

- योग – वी.के एस आयंगार पुस्तक 'योग दीपिका'
- खेल – योगराज थाली– खेलो के सामान्य नियम
- रेडक्रास – संस्था प्रकाशन
- स्वास्थ्य शिक्षा – के. के. वर्मा
- आहार एवं पोषण– गूपिन्दर कौर बख्श
- योग – सम्पूर्ण योग विद्या – राजीव जैन त्रिलोक
- योग शिक्षा एवी सुपर – डॉ0 रमेश चंद्र
- प्राण विद्या – स्वामी सत्यानंद सरस्वति जी
- पातंजल योग प्रदीप – स्वामी सियाराम गोरखपुर
- खेल – खेल जगत में एथलेटिक – वी.एस. चौहान

डी. एल. एड. द्वितीय वर्ष
कला और शिक्षा
भाग–2

पूर्णांक–60
आंतरिक मूल्यांकन–30
बाहय मौखिक मूल्यांकन–30
कालखंड–40

1. इकाईवार अंकों का विभाजन (Unitwise division of marks) :–

क्र.	इकाई	विषय	कालखंड	अंक
1	1	दृश्य कलाएँ (चित्रकला,मूर्तिकला)	15	10
2	2	प्रदर्शनकारी कलाएँ (संगीत, नृत्य)	15	10
3	3	नाट्यकला	10	10
सत्रगत (प्रायोगिक) कार्य			–	30
कुल योग			40	60

2. इकाई का अध्ययन (Units) :–

इकाई 1 दृश्य कलाएँ

(क) चित्रकला / मूर्तिकला (द्विआयामी)–

- रेखांकन
- रंगांकन
- कोलाज
- क्ले माडलिंग
- पॉट मेकिंग

(ख) (त्रिआयामी)

- पेपरमेशी, ऑरीगेमी
- अनुपयोगी सामग्री से सृजनात्मक रचना निर्माण
- मुखौटा निर्माण
- कठपुतली निर्माण

इकाई 2 प्रदर्शनकारी कलाएँ

संगीत एवं नृत्य :

- लयात्मक गायन का अभ्यास
- सामान्यतः प्रयोग में आनेवाले तालों (दादरा, त्रिताल, कहरवा) की जानकारी

- प्रार्थनाएँ, बालगीत, प्रेरणा गीत , राष्ट्रगीत, लोकगीत व अन्य भाषाओं (गुजराती, मराठी, पंजाबी आदि) के गीतों को गाने का अभ्यास
- लोकनृत्यों का अभ्यास (एकल व सामूहिक)

इकाई 3 रंगमंच (नाट्य कला)

- नुक्कड़ नाटक, एकल अभिनय, मूक अभिनय
- किसी कहानी की स्क्रिप्ट लिखकर उसे नाटक के रूप में मंचित करना
- रंगमंचीय व्यवस्था–वेशभूषा, मेकअप, प्रकाश एवं ध्वनि की व्यवस्था आदि की जानकारी

नोट : तीनों इकाइयों में वाचन अभ्यास तथा प्रायोगिक कार्य सम्मिलित होंगे।

3 गतिविधियाँ :–

9 संग्रहालय, आर्ट गैलरी, प्रदर्शनी आदि का भ्रमण करवाना

10 स्थानीय प्रादेशिक लोक कलाकारों द्वारा लोकगीत, लोकनृत्य, सुगम संगीत आदि का प्रदर्शन

11 कला की दृष्टि से उत्कृष्ट फिल्मों का प्रदर्शन व उनपर चर्चा

12 बाल फिल्मों तथा कार्टून फिल्मों का प्रदर्शन और उनपर चर्चा

13 किसी चित्रकार अथवा मूर्तिकार के साथ एक या दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन

14 किसी बाहरी समूह द्वारा नाटक का मंचन व उसके निर्देशक तथा कलाकारों से बातचीत

4 सत्रगत कार्य (कोई 2):–

- चित्रों के कोलाज द्वारा किसी घटना या कहानी का प्रदर्शन कीजिए।
- स्थानीय कलाकारों का साक्षात्कार लीजिए व आधुनिकता के इस युग में कला को बनाए रखने में उनके सामने आ रही चुनौतियों के बारे में बातचीत करके उसका अभिलेखीकरण कीजिए।
- किसी कहानी या कविता पर आधारित कठपुतली या मुखौटों का निर्माण करके उनका प्रदर्शन कीजिए।
- पावर पाईंट पर किसी पाठ के लिए संगीत के साथ ग्राफिक्स एनीमेशन व चित्र बनाइए।
- किसी फिल्म के अभिनय, संगीत व नृत्य पक्ष को ध्यान में रखते हुए समीक्षा लिखिए।
- अनुपयोगी सामग्री से किसी तरह की उपयोगी वस्तुएँ बनाइए।
- मेहंदी, अल्पना या मांडने की कोई कलाकृति तैयार कीजिए।

5 संदर्भ ग्रंथों की सूची:–

- एनसीएफ़ का फोकस पेपर कला शिक्षा
- मध्यप्रदेश का लोक संगीत– प्रो.शरीफ़ मोहम्मद, डॉ. खरे– म.प्र.हिंदी ग्रंथ अकादमी
- कबाड़ से जुगाड़–अरविंद गुप्ता एकलव्य प्रकाशन।

- जॉय ऑफ मेकिंग इन्डियन टॉयज़–खन्ना एन.बी.टी प्रकाशन।
- क्रिएटिव ड्रामा इन प्रायमरी ग्रेड– नील मेक केसलिन–लंदन लाँगमेन
- कबीर, टैगोर, निराला, गालिब, नजीर, तुलसीदास, सूरदास, रहीम, रसखान आदि की रचनांओं के कैसेट/सीडी,स्थानीय लोकगीतों के कैसेट/सीडी
- थियेटर इन एजुकेशन– बेरी प्रसाद।
- लोक संस्कृति – बसंत निरगुणे, म.प्र.हिंदी ग्रंथ अकादमी
- भारतीय सांस्कृतिक धरोहर– डॉ. उमराव सिंह चौधरी म.प्र.हिंदी ग्रंथ अकादमी
- भारत के लोकनृत्य– प्रो.शरीफ़ मोहम्मद –म.प्र.हिंदी ग्रंथ अकादमी
- मुखौटों का सांस्कृतिक अध्ययन– डॉ.ऋतुराज वशिष्ठ, म.प्र.हिंदी ग्रंथ अकादमी

डी.एल.एड. द्वितीय वर्ष
शाला इंटर्नशिप

पूर्णांक–200
आंतरिक मूल्यांकन–100
बाहय मौखिक मूल्यांकन–100
कालखंड–30+40 दिवस

विशिष्ट उद्देश्य :–

1. विद्यालय को एक संपूर्ण इकाई के रूप में अनुभव करना।
2. कक्षा शिक्षण के साथ शालेय गतिविधि, अभिभावकों के साथ अंर्तक्रिया के लिये अवसर प्रदान करना।
3. एक नियमित शिक्षक के रूप में अपने आप को देखना।
4. छात्रों की विविधता को जानना।
5. छात्रों की आवश्यकताओं के संदर्भ में सीखने–सिखाने की प्रक्रिया की प्रभावी योजना बनाना।
6. उपलब्ध संसाधनो, सीमाओं को पहचान कर नवाचार करने की क्षमता विकसित करना।
7. कक्षा में अर्थपूर्ण गतिविधियाँ कराने के लिये उचित गतिविधियों का चयन करना तथा चयनित गतिविधि का क्रियांवयन कराना।
8. विद्यालय में प्राप्त किये गए स्वयं के अनुभवों का समीक्षात्मक अभिलेख तैयार करना।

उपरोक्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये कार्यक्रम में निम्नलिखित घटक शामिल किये जा रहे हैं–

- योजना बनाना
- अध्यापन
- अभिलेखों को तैयार करना

शाला में इंटर्नशिप कार्यकम–70 दिवस

चरण	कार्यक्रम एवं गतिविधियां	दिवस
प्रथम	इंटर्नशिप की पूर्व गतिविधियाँ (तैयारी)	30
द्वितीय	इंटर्नशिप दौरान गतिविधियाँ (शाला का वास्तविक अनुभव)	40
तृतीय	इंटर्नशिप के पश्चात की गतिविधियॉ (समालोचनात्मक चिंतन)	–

प्रथम चरण (संस्थान स्तर पर)

क्रमांक	गतिविधि का नाम	दिवस
	इंटर्नशिप की पूर्व (तैयारी)	
1.	संपूर्ण इंटर्नशिप कार्यक्रम पर उन्मुखीकरण एवं अभ्यास हेतु विद्यालयों का चयन–संस्थान द्वारा	**01**
2.	संस्थान के द्वारा माइक्रो टीचिंग के कौशलों पर उन्मुखीकरण	**10**
3.	पाठ्य पुस्तकों (अंग्रेजी/तृतीय भाषा, विज्ञान/सा.विज्ञान/पर्यावरण विज्ञान) तथा स्रोत सामग्री के समालोचनात्मक विश्लेषण पर कार्यशाला	03
4.	केस स्टडी करने के संबंध में कार्यशाला	02
5.	कक्षा में समावेशिता तथा विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को समझने की आवश्यकता पर उन्मुखीकरण	01
6.	सर्वे कार्य कराने की योजना पर कार्यशाला (ग्रामक्षशिरजिस्टर)	02
7.	इकाई योजना एवं पाठ योजना निर्माण (अंग्रेजी/तृतीय भाषा एवं विज्ञान एवं सा.विज्ञान तथा पर्यावरण अध्ययन)पर कार्यशाला (निर्माणवाद पर आधारित पाठ प्रदर्शन सहित)	05
8.	सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पर उन्मुखीकरण	01
9.	चयनित विद्यालय के संस्था प्रमुखों का उन्मुखीकरण (इंटर्नशिप गतिविधियों से परिचय,मूल्यांकन प्रपत्र, संस्था प्रमुख की भूमिका पर चर्चा)	01
10.	छात्राअध्यापक,मेंटर (आवंटित कक्षा का शिक्षक/विषय शिक्षक एवं संस्थान सुपरवाइजर (विषय विशेषज्ञ) का उन्मुखीकरण (प्रत्येक की भूमिका पर चर्चा)। को टीचिंग अवधारणा (नवाचारी पद्धति),मूल्यांकन अवधारणा (रूब्रिक पर आधारित) पर प्रस्तुतिकरण ।	03
11.	'दैनंदिनी एवं रिफ्लेक्टिव जर्नल पर चर्चा	01
	योग	30

' ''इंटर्नशिप की पूर्व गतिविधियां'' कार्यक्रम पर छात्राध्यापकों के द्वारा दैनंदिनी एवं रिफ्लेक्टिव जर्नल पर लेखन कार्य करवाया जा सकता है, जिस पर चर्चा कर छात्राध्यापकों को फीडबैक दिया जा सकता है इसकी उपयोगिता इंटर्नशिप के दौरान परिलक्षित होना चाहिए ।

द्वितीय चरण (शाला स्तर पर)

इंटर्नशिप दौरान गतिविधियाँ (शाला का वास्तविक अनुभव)		
क्रमांक	गतिविधि का नाम	'कुल कार्य दिवस 40
1.	चयनित शाला का संपूर्ण अवलोकन, कक्षा अवलोकन एवं सीखने–सिखाने के अनुभव पर प्रतिवेदन	
2.	विद्यालयों की गतिविधियों में भाग लेना (प्रार्थना सभा, खेलकूद, स्काउटिंग, विज्ञान क्लब, एवं मेले पर्यावरण क्लब, पुस्तकालय सांस्कृतिक, सामाजिक गति विधियाँ एवं पी.टी.एम. एवं. एस .एम. सी.में सहभागिता)	
3.	शाला के अन्तर्गत एक केस स्टडी का चयन एवं समय सीमा में पूर्ण करना	
4.	पाठ्य पुस्तकों (अंग्रेजी/तृतीय भाषा तथा विज्ञान/सा.विज्ञान/पर्यावरण अध्ययन) एवं स्रोत सामग्री का विश्लेषण करना तथा स्रोत सामग्री का विकास करना	
5.	कक्षा में समावेशिता तथा एवं विशेष आवश्यकता वाले बच्चों पर आधारित शाला अवलोकन पर रिपोर्ट	
6.	इकाई योजना निर्माण करना	
7.	''''पाठ योजनाओं का निर्माण एवं प्रस्तुतिकरण । (अंग्रेजी एवं तृतीय भाषा की 10 व 5 पाठ योजना शिक्षण अधिगम सामग्री सहित तथा 5 –5 कक्षा अवलोकन) तथा विज्ञान, सा.विज्ञान, पर्यावरण अध्ययन की 10–5–5 पाठ योजना शिक्षण अधिगम सामग्री सहित तथा 5– 3–2 कक्षा अवलोकन)	
9	टम्त्सर्वे व समुदाय से संपर्क	
10.	सी.सी.ई. आधारित छात्रों का मूल्यांकन तथा पोर्टफोलियो का निर्माण करना	
.11	संस्थान पर्यवेक्षक (सुपरवाईजर) द्वारा इंटर्नशिप कार्यक्रम का पर्यवेक्षण करना (कम से कम अंग्रेजी एवं तृतीय भाषा के 5–5 एवं विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, पर्यावरण विज्ञान के क्रमशः 5–3–2 पाठ योजना का पर्यवेक्षण)	
12	'''''दैनंदिनी एवं रिफ्लेक्टिव जर्नल लिखना।	

' छात्राध्यापक प्रत्येक सप्ताह 4 दिवस शाला में इंटर्नशिप के पश्चात डाइट में अपने शिक्षक प्रशिक्षक से चर्चा कर प्राप्त अनुभव पर फीड बैक प्राप्त करेगा, जिसे अगले सप्ताह अपनी पाठ योजना के प्रदर्शन के दौरान रिफ्लेक्ट कर सकेगा। शाला में अनुभव के कुल 40 कार्यदिवस होना अनिवार्य है।

'' पेरेन्ट टीचर मीटिंग

''' स्कूल मेनेजमेंट कमेटी

'''' छात्राध्यापक एक कार्यदिवस में अधिकतम दो पाठों का अध्यापन अभ्यास एवं एक पाठ का कक्षा अवलोकन कर सकते हैं।

''''' दैनंदिनी प्रतिदिन जबकि रिफ्लेक्टिव जर्नल के अंतर्गत साप्ताहिक अधिगम समीक्षा लिखना है।

तृतीय चरण (संस्थान स्तर पर)

क्रमांक	गतिविधि का नाम
1.	संस्थान में इंटर्नशिप के अनुभवों पर परिचर्चा (समझ का विकास व चुनौतियां)
2.	सहायक सामग्री की प्रदर्शनी एवं मूल्यांकन
3.	रिफलेक्टिव जर्नल व पाठ्य पुस्तक/स्रोत सामग्री के विश्लेषण से प्राप्त परिणामों को छात्र अध्यापकों के पीयर ग्रुप में साझा (शेयरिंग) करना

शाला इंटर्नशिप कार्यक्रम–द्वितीय वर्ष
मूल्यांकन योजना

क्र.	गतिविधि का नाम	आंतरिक मूल्यांकन		बाह्य मूल्यांकन		**योग**
		शाला प्रमुख द्वारा	संस्थान के विषय विशेषज्ञ के द्वारा	मौखिक (वायवा)	प्रत्यक्ष अवलोकन एवं अभिलेख आधारित	
1.	शाला अवलोकन अनुभव पर प्रतिवेदन	05	–	–	–	05
2.	विद्यालय की गतिविधियों में सहभागिता पर आधारित मूल्यांकन	05	–	–	–	05
3.	केस स्टडी प्रतिवेदन	–	05	–	–	05
4.	पाठ्यपुस्तक विश्लेषण(अग्रेजी/तृतीय भाषा तथा विज्ञान/सा. विज्ञान/ पर्यावरण विज्ञान)	–	05	–	–	05
5.	इकाई योजना निर्माण करना	–	05	–	–	05
6.	पोर्टफोलियो का मूल्यांकन	05	–	–	–	05
7.	कक्षा में समावेशिता पर रिपोर्ट	–	05	–	–	05
8.	दैनंदिनी एवं रिफ्लेक्टिव जर्नल	–	05	–	–	05

9.	समालोचना पाठ 1. अग्रेजी / तृतीय भाषा–1 2. विज्ञान / सा.विज्ञान / पर्यावरण अ.ध्ययन–1	–	 05 05	–	–	 10
10.	अध्यापन अभ्यास अवलोकन(संस्थान सुपरवाइजर द्वारा) 1. अंग्रेजी एवं तृतीय भाषा–(04– 04) 2. विज्ञान एवं सा.विज्ञान–(04– 04) 3. पर्यावरण अ.ध्ययन–2	–	 04 04 02	–	–	 10
11.	पाठयोजना का निर्माण प्रथम समूह 1.अग्रेजी–10 पाठ योजना 5 शिक्षण अधिगम सामग्री 5 कक्षा अवलोकन सहित 2.तृतीय भाषा–5 पाठ योजना शिक्षण अधिगम सामग्रीसहित 5 कक्षा अवलोकन सहित द्वितीय समूह 1. विज्ञान–10 पाठ योजना 5 शिक्षण अधिगम सामग्री 5 कक्षा अवलोकन सहित 2. सा.विज्ञान–10 पाठ योजना 5 शिक्षण अधिगम सामग्री 5 कक्षा अवलोकन सहित 3. पर्यावरण अध्ययन –5 पाठ योजना शिक्षण अधिगम सामग्रीसहित 5 कक्षा अवलोकन सहित		10 05 10 10 05			40
12.	फाइनल पाठ–योजना 1. अंग्रेजी / तृतीय भाषा–1 2. विज्ञान / सा.विज्ञान / पर्यावरण अध्ययन–1	–	–	 10 10	 40 40	 50 50
	योग	**15**	**85**	**20**	**80**	**200**

इंटर्नशिप कार्यक्रम में नवाचारी शिक्षण पद्धतियाँ और अधिगम वाली संस्थाओं का भ्रमण भी शामिल है । इंटनशिप कार्यक्रम के दौरान कक्षा आधारित प्रक्रियाओं पर शोध कार्य छात्राध्यापक द्वारा किया जाना है। छात्राध्यापक पाठ्य योजनाओं के साथ–साथ शाला की विभिन्न अकादमिक एवं प्रशासनिक गतिविधियों में सहभागिता कर अभिलेख संधारित करेंगें। इंटर्नशिप की कुल अवधि 70 दिवस है।

छात्राध्यापक प्रत्येक सप्ताह में लगातार 4 दिन शिक्षण कार्य करेंगें एवं इसके पश्चात् संस्थान में जाकर शिक्षक प्रशिक्षक से चर्चा कर प्राप्त अनुभव पर फीड बैक प्राप्त करेंगें तद्नुसार शिक्षण विधियों में परिवर्तन और अधिगम दृष्टि प्राप्त करेंगें। प्रत्येक विषय की न्यूनतम 4 इकाई योजनाओं को अध्यापन अभ्यास में शामिल किया जाएगा प्रत्येक इकाई योजना में पाठ की विषय वस्तु के प्रस्तुतिकरण के साथ–साथ प्रश्नों की तैयारी विशेषकर ज्ञानात्मक, समझ आधारित ज्ञान का सृजन करना, कक्षा में सिखाई गई विषयवस्तु से अर्थ निकालना, बच्चों के अधिगम का आंकलन करना एवं बच्चों को सिखने के लिये प्रोत्साहित करना शामिल है।

शिक्षक प्रशिक्षकों द्वारा छात्राध्यापकों की इंटर्नशिप के दौरान पर्यवेक्षण कार्य किया जाएगा साथ ही साथ शाला को प्रबंधनीय मुद्दों पर सहयोग प्रदान किया जाएगा। छात्राध्यापक को उपयुक्त गतिविधियों का चयन करना आना चाहिए। पाठ योजनाओं का अभिलेख संधारित करना चाहिए। छात्राध्यपकों को अपनी दैनंदिनी में शिक्षण के व्यावहारिक अनुभव तथा सैद्धांतिक शिक्षण पद्धतियों के बीच संबंध के आधार पर चिंतन कर अपने अनुभव को रिफ्लेक्टिव जर्नल के रूप में लिपिबद्ध करना चाहिए।

डी.एड.प्रपत्र 1

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश, भोपाल

डिप्लोमा इन एज्युकेशन (द्विवर्षीय पाठ्यक्रम प्रथम वर्ष 2014)

नियमित /पत्राचार

प्रशिक्षण संस्था/सुविधा केन्द्र /महाविद्यालय.....

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान .....

विषयः— सैद्यांतिक का आंतरिक मूल्यांकन

सक्र.	छात्राध्यापक एवं पिता का नाम	रोलनंबर	सैद्यांतिक के आंतरिक मूल्यांकन के प्राप्ताकं													
			बचपन एवं बालविकास		समसामयिक भारतीय समाज में शिक्षा		शिक्षा, समाज, पाठ्यचर्या और शिक्षार्थी		स्वंय की पहिचान		भाषाई समझ प्रांरभिक साक्षरता एवं हिन्दी शिक्षण		गणित शिक्षण प्रारंभिक स्तर —1		अंग्रेजी भाषा की दक्षता (Pedagogy of English)	
			कोड	अंक	कोड	अंक	कोड	अंक	कोड	अंक	कोड	अंक	कोड	अंक	कोड	अंक
				30		30		30		15		30		30		15
1																
2																
3																
		कुल छात्र संस्था														

स्थान .....

दिनांक .....

हस्ताक्षर प्राचार्य

संस्था की पद मुद्रा

डी.एड.प्रपत्र 2

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश, भोपाल

डिप्लोमा इन एज्युकेशन (द्विवर्षीय पाठ्यक्रम प्रथम वर्ष 2014)

नियमित /पत्राचार/प्रायवेट

प्रशिक्षण संस्था/ महाविद्यालय/सुविधा केन्द्र.....

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान .....

विषयः— व्यावहारिक आंतरिक मूल्यांकन

स.क्र.	छात्राध्यापक एवं पिता का नाम	रोलनंबर	**व्यावहारिक विषयों के अंक**							
			कम्प्यूटर शिक्षा भाग —1		स्वास्थ्य,स्वच्छता भावनात्मक विकास एवं शारीरिक शिक्षा भाग—1		कला और शिक्षा भाग —1		कार्य और शिक्षा भाग—1	
			कोड	अंक	कोड	अंक	कोड	अंक	कोड	अंक
				25		15		20		15
1										
2										
3										
		कुल छात्र संख्याा		अंको का योग						

स्थान .....

दिनांक .....

हस्ताक्षर प्राचार्य

संस्था की पद मुद्रा

डी.एड.प्रपत्र 3

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश, भोपाल

डिप्लोमा इन एलीमेन्ट्री एज्युकेशन (द्विवर्षीय पाठ्यक्रम प्रथम वर्ष 2014)

नियमित /पत्राचार/प्रायवेट

प्रशिक्षण संस्था/ महाविद्यालय/सुविधा केन्द्र.....

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान .....

विषयः— इंर्टनशिप का आंतरिक मूल्यांकन

सक्र	छात्राध्यापक एवं पिता का नाम	रोलनंबर	व्यावहारिक परीक्षा के अंक			
			शिक्षण अभ्यास			टिप्पणी
			हिन्दी	गणित	इंटर्नशिप गतिविधियां	
			20	20	60	
1						
2						
3						
		कुल छात्र संख्या	योग	योग	योग	

स्थान .....

दिनांक .....

हस्ताक्षर प्राचार्य

इंटर्नशिप विद्यालय

संस्था की पद मुद्रा

डी.एड.प्रपत्र 4

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश, भोपाल

डिप्लोमा इन एज्युकेशन (द्विवर्षीय पाठ्यक्रम प्रथम वर्ष 2014)

नियमित /पत्राचार/प्रायवेट

प्रशिक्षण संस्था/ महाविद्यालय/सुविधा केन्द्र.....

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान .....

विषयः— शिक्षण अभ्यास का बाह्य मूल्यांकन

सक्र.	नाम छात्राध्यापक पिता का नाम	रोलनंबर	**शिक्षण अभ्यास**			
			अनिवार्य वैकल्पिक विषय		योग	टिप्पणी
			हिन्दी	गणित		
			50	50	100	
1						
2						
3						
4						
5						
		कुल छात्र संख्या	योग	योग	योग	

स्थान .....

दिनांक .....

हस्ताक्षर

आंतरिक परीक्षक

नाम .....

पता .....

हस्ताक्षर

बाह्य परीक्षक

नाम .....

पता .....

डी.एड.प्रपत्र 5

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश, भोपाल

डिप्लोमा इन एज्युकेशन (द्विवर्षीय पाठ्यक्रम द्वितीय वर्ष 2014)

नियमित /पत्राचार

प्रशिक्षण संस्था/ महाविद्यालय/सुविधा केन्द्र.....

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान .....

विषयः— सैद्धांतिक का आंतरिक मूल्यांकन

सक्र.	नाम छात्राध्यापक पिता का नाम	रोलनंबर	**शिक्षण अभ्यास**			
			अनिवार्य वैकल्पिक विषय		योग	टिप्पणी
			हिन्दी	गणित		
			50	50	100	
1						
2						
3						
4						
5						
		कुल छात्र संख्या	योग	योग	योग	

स्थान .....

दिनांक .....

हस्ताक्षर

आंतरिक परीक्षक

नाम .....

पता .....

हस्ताक्षर

बाह्य परीक्षक

नाम .....

पता .....

डी.एड.प्रपत्र 6

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश, भोपाल

डिप्लोमा इन एज्युकेशन (द्विवर्षीय पाठ्यक्रम द्वितीय वर्ष 2014)

नियमित /पत्राचार/प्रायवेट

प्रशिक्षण संस्था/ महाविद्यालय/सुविधा केन्द्र.....

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान .....

विषयः— व्यावहारिक आंतरिक मूल्यांकन

स.क्र.	नाम छात्राध्यपक पिता का नाम	रोलनंबर	**व्यावहारिक के अंक**						
			कम्प्यूटर शिक्षा भाग —2		स्वास्थ्य,स्वच्छता ,भावनात्मक विकास एवं शारीरिक शिक्षा भाग—2		कला और शिक्षा भाग—2		टिप्पणी
			कोड	अंक	कोड	अंक	कोड	अंक	
				25		20		30	
1									
2									
3									
		छात्र संख्या		योग		योग		योग	

स्थान .....

दिनांक .....

हस्ताक्षर प्राचार्य

संस्था की पद मुद्रा

डी.एड.प्रपत्र 7

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश, भोपाल

डिप्लोमा इन एज्युकेशन (द्विवर्षीय पाठ्यक्रम द्वितीय वर्ष 2014)

प्रशिक्षण संस्था / महावि. / सुविधा केन्द्र .....

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान .....

विषयः— प्रायोगिक परीक्षा विज्ञान का बाह्य मूल्यांकन

सक्र.	छात्राध्यपक एवं पिता का नाम	रोलनंबर	प्राप्तांक		
			अंक में	शब्दों में	छात्राध्यापक के परीक्षा हाल में अंक भरने के पूर्व हस्ता.
			25	पच्चीस	
1					
2					
3					
	छात्र संख्या	अंकों का योग			

हस्ताक्षर आंतरिक परीक्षक
नाम
पता

परीक्षा की तिथि
.....
समय से तक

हस्ताक्षर बाह्य परीक्षक
नाम .....
पता .....

डी.एड.प्रपत्र 8

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश, भोपाल

डिप्लोमा इन एलीमेन्ट्री एज्युकेशन (द्विवर्षीय पाठ्यक्रम द्वितीय वर्ष 2014)

नियमित /पत्राचार/प्रायवेट

प्रशिक्षण संस्था/ महाविद्यालय/सुविधा केन्द्र.....

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान .....

विषयः– इंटर्नशिप का आंतरिक मूल्यांकन

सक्र.	नाम छात्राध्यपक पिता का नाम	रोलनंबर	इंटर्नशिप के अंक					
			अंग्रेजी/तृतीय भाषा		सामीजक विज्ञान/ विज्ञान/पर्यावण		इंटर्नशिप की गतिविधियां	टिप्पणी
			कोड	20	कोड	20	60	
1								
2								
3								
		छात्र संख्या		अंकों का योग		अंकों का योग	अंकों का योग	

स्थान .....

दिनांक .....

हस्ताक्षर प्राचार्य

संस्था की पद मुद्रा

डी.एड.प्रपत्र 9

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश, भोपाल

डिप्लोमा इन एज्युकेशन (द्विवर्षीय पाठ्यक्रम द्वितीय वर्ष 2014)

नियमित /पत्राचार/प्रायवेट

प्रशिक्षण संस्था/ महाविद्यालय/सुविधा केन्द्र.....

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान .....

विषयः— शिक्षण अभ्यास का बाह्य मूल्यांकन

सक्र.	नाम छात्राध्यापक पिता का नाम	रोलनंबर	शिक्षण अभ्यास					
			विषय				योग	टिप्पणी
			अंग्रेजी /तृतीय भाषा		सामाजिक विज्ञान शिक्षण/विज्ञान शिक्षण/ पर्यावरण			
			कोड	50	कोड	50	100	
1								
2								
3								
		छात्र संख्या		अंकों का योग		अंकों का योग	अंकों का योग	

स्थान .....

दिनांक .....

हस्ताक्षर

आंतरिक परीक्षक

नाम एवं पता

हस्ताक्षर

बाह्य परीक्षक

नाम एवं पता

डी.एड.प्रपत्र 10

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश, भोपाल

डिप्लोमा इन एज्युकेशन (द्विवर्षीय पाठ्यक्रम द्वितीय वर्ष 2015–16)

नियमित /पत्राचार/प्रायवेट

प्रशिक्षण संस्था/ महाविद्यालय/सुविधा केन्द्र.....

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान .....

विषयः– वार्षिक परीक्षा में प्रविष्ट होने हेतु पात्रता प्रमाण पत्र।

– प्रमाणित किया जाता है कि इस प्रशिक्षण संस्था में दर्ज छात्राध्यपकों ने

–संस्था में कार्य दिवसों की उपस्थित निर्धारित प्रतिशत से कम नही है।

–40 दिनों का इंटर्नशिप कार्य पूर्ण कर लिया है।

–समस्त आंतरिक मूल्यांकन व सत्रगत कार्य पूर्ण कर लिए है।

–समस्त आंतरिक परीक्षाओं में उपस्थित रहा है।

–मण्डल तथा संस्था का निर्धारित शुल्क जमा कर चुका है।

प्रथम /द्वितीय वर्ष

स.क्र.	छात्राध्यापक का नाम व पिता का नाम	रोलनंबर	स.क्र .	छात्राध्यापक का नाम व पिता का नाम	रोलनंबर	टिप्पणी
1			5			
2			6			
3			7			
4			8			

स्थान .....

दिनांक .....

हस्ताक्षर प्रचार्य

संस्था की पद मुद्रा

पाठ्यक्रम पुनरीक्षण एवं निर्माण

1. श्री तरूण गुहा नियोगी,
2. श्री राम ओखदे,
3. श्रीमती अनिता बडगुर्जर,
4. श्रीमती राणा मुजीब,
5. श्रीमती सरला श्रीवास्तव,
6. श्रीमती निकहत अफरोज,
7. श्रीमती नीलू समीर,
8. श्रीमती कंचन जिग्यासी,
9. डॉ. प्रेमनारायण शर्मा,
10. डॉ.साजिद जमाल,
11. श्री नौशाद हुसैन,
12. श्री राजीव उपरीत,
13. श्री रामगोपाल रैकवार,
14. सुश्री मंगला एकबोटे,
15. श्रीमती ममता चौरसिया,
16. सुश्री साधना भंवर,
17. ए.के. चतुर्वेदी,
18. डॉ. राजेश साकोरीकर ,
19. के.के. पाराशर,
20. श्री टी.पी. शर्मा,
21. श्री विजय भार्गव,
22. श्रीमती रीता वर्मा,
23. श्रीमती चित्रा शर्मा,
24. श्री सुशील कुमार पाठ्क ,
25. श्री आर. सी. उपाध्याय,
26. श्रीमती निधि मूले,
27. डॉ. राजेन्द्र प्रकाश गुप्त,
28. रविशंकर गर्ग,
29. श्रीमती संध्या चौबे,
30. श्री ए.एन. माथुर,
31. डॉ. रेणु रावल,
32. श्रीमती अंजली शिंदे,
33. देवेन्द्र सिंह भदौरिया,
34. मीनाक्षी पैठनकर,
35. मनोज कपूर,
36. उदय सिंह रावत,
37. श्रीमती अमिता प्रजापति,
38. श्रीमती कविता सिंह,
39. रफीक सिद्दीकी,
40. डॉ. एफ.एस. खान,
41. के. के. डेनियल,
42. मनोज गुहा,
43. यू.के.दीवान,

परीक्षण

1. श्रीमती साधना यादव,
2. श्रीमती सुषमा भट्ट,
3. श्री अरूण भार्गव,
4. श्री आर.एस. पांडे
5. श्रीमती मीता गुप्ता,
6. श्रीमता पूर्णिमा जोशी,
7. श्रीमती रमा चौबे,
8. श्रीमती यास्मीन खान,
9. श्रीमती प्रभा खत्री,
10. श्रीमती रजनी थपलियाल.,
11. श्री. आर. के. पांडे,
12. श्री बी. बी. गुप्ता ,
13. श्री बी. आर. सूर्यवंशी,
14. श्रीमती रंजीता जोशी ,
15. श्रीमती उषा भार्गव